॥ ओ३म् ॥

पाणिनिमुनिप्रणीतः

अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

(यतिबोधसहितो लघुकायश्च)

यतिबोधकारः सम्पादकश्च–

आचार्य धर्मेश भारद्वाज

प्रकाशकः–

श्री परमहंस स्वामी शिवानन्द सरस्वती संस्कृत एवं संस्कृति शोध, शिक्षण तथा प्रशिक्षण संस्थान, तहसील–सिन्नर, जिला–नासिक (महाराष्ट्र), पिन कोड–४२२१०३.

Aum Has Over Hundred Meanings

प्राक्कथन

वर्तमान युग में **'व्याकरण'** नामक वेदाङ्ग के अन्तर्गत पाणिनीय व्याकरण की ही सर्वोत्कृष्टता, सर्वसुगमता, सर्वसुलभता तथा यथोचित लघुता सर्वसाधारण में मान्य तथा प्रचलित है। **'अष्टाध्यायीसूत्रपाठः'** पाणिनीय व्याकरण का ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा आदिमूल ग्रन्थ है। छात्र-जीवन के काल से ही हमारे हृदय में सदैव यह अभिलाषा उठती रही है कि हम कभी भी तथा कहीं भी जायें, सर्वदा तथा सर्वत्र **'अष्टाध्यायीसूत्रपाठः'** हमारे समीप हो जिससे कभी भी तथा कहीं भी स्मरण अथवा आवृत्ति की इच्छा जागृत होने पर तत्क्षण उसे देखकर उपर्युक्त इच्छा निर्विघ्न होकर पूर्ण की जा सके। परन्तु वर्तमान समय में यह ग्रन्थ (उपलब्ध सभी प्रकाशनों का) जिस आकार (बृहदाकार) में उपलब्ध होता है, उससे उपर्युक्त अभिलाषा की पूर्ति व्यावहारिक दृष्टि से असम्भव ही प्रतीत होती थी। अतः उपर्युक्त अभिलाषा की पूर्ति तभी सम्भव हो सकती थी जब यह ग्रन्थ इतना लघुकाय हो कि यह प्रायः सर्वदा तथा सर्वत्र पहने जानेवाले कुर्ता, कमीज आदि वस्त्र की जेब में सरलता से समा सके।

इसके अतिरिक्त छात्र-जीवन के काल से ही एक यह अभिलाषा भी सदैव हृदय में उठती रही है कि सूत्रों में किस अक्षर पर शब्द को तोड़कर अर्थात् किस अक्षर पर यति (अल्पविराम अथवा हल्की सी श्वाँस) करके, उनका शुद्धतम उच्चारण करके, उन्हें शुद्धतम रूप में कण्ठस्थ किया जाये, इसका बोध कराने के लिये ग्रन्थ में ही कुछ अतिविशिष्ट प्रकार की सुविधा उपलब्ध हो। वर्तमान समय में इस समस्या का समाधान अध्यापक छात्रों की पुस्तकों में प्रायः पैन्सिल आदि से खड़ी रेखा '-।' आदि सदृश चिह्न लगाकर करते हैं परन्तु पूर्णतया वे स्वयं भी इस प्रकार के समाधान से सन्तुष्ट नहीं होते हैं क्योंकि कभी-कभी संयुक्त अक्षरों में वे खड़ी रेखा आदि चिह्न यति को

पूर्णतया स्पष्ट करने में सहायक नहीं हो पाते हैं, तब मौखिक रूप से ही छात्रों को वहाँ उपदेश कर दिया जाता है कि अमुक संयुक्त अक्षर में इसके अमुक हिस्से को इधर जोड़कर उच्चारण करना है तथा इसके अमुक हिस्से को उधर जोड़कर उच्चारण करना है, साथ ही पैन्सिल के काले-काले निशानों से पुस्तक का गन्दा हो जाना, फट जाना आदि अन्य अनेक व्यावहारिक समस्यायें भी छात्रों तथा अध्यापकों को अनुभूत होती हैं। इसके अतिरिक्त अधिकतर छात्र एवम् अध्यापक अपने मन से ही कुछ भी नियम निर्धारित करके सूत्रों का अशुद्ध उच्चारण करके कण्ठस्थ करते तथा करवाते हैं। कुल मिलाकर अन्दर ही अन्दर अव्यक्त रूप में अध्यापक तथा छात्र दोनों ही इस प्रकार के समाधानों से व्यावहारिक रूप से सन्तुष्ट नहीं होते हैं तथा समस्या यथावत् बनी रहती है। साथ ही प्रकृत समस्या का समाधान उन छात्रों को, जिनकी संख्या अत्यल्प है, प्राप्त हो भी जाये जिनके पास योग्य अध्यापक तथा विद्यालय समुपलब्ध हों परन्तु जिन छात्रों के पास, जिनकी संख्या अपेक्षाकृत अधिक है, योग्य अध्यापक तथा विद्यालय समुपलब्ध नहीं हैं तथा जिनके अभिभावकगण अथवा वे स्वयं स्वतन्त्र रूप से ही ग्रन्थ को कण्ठस्थ करने का सत्साहस करते हैं, उनको प्रकृत समस्या का समाधान अप्राप्त ही रहता है तथा वे अत्युत्साह में अशुद्ध उच्चारण करके अशुद्ध रूप में ही सूत्र को कण्ठस्थ कर लेते हैं जिसका दुष्परिणाम उन्हें बाद में प्रथमावृत्ति, काशिका, महाभाष्य आदि ग्रन्थों का अध्ययन करते समय भोगना पड़ता है जब सूत्र का वास्तविक उच्चारण क्या होता है, यह बोध उन्हें होता है परन्तु तब सूत्र किसी भिन्न अशुद्ध रूप में ही उन्हें कण्ठस्थ होता है जिसे भूलकर शुद्ध रूप कण्ठस्थ करना तब अतिशय कठिन अथवा प्रायः असम्भव ही प्रतीत होता है जबकि व्याकरण के छात्रों अथवा अध्यापकों का सर्वोत्कृष्ट अलङ्कार हमारी दृष्टि में सूत्र का शुद्धतम रूप में उच्चारण करना ही है, बाद में सूत्रार्थादि का बोध आदि। अतः उपर्युक्त अभिलाषा की पूर्ति

तभी सम्भव हो सकती थी जब सूत्रों के अक्षरों में जितने-२ अक्षरों का एकसाथ उच्चारण करना अर्थात् जिस-२ अक्षर पर यति करना साधु तथा अभीष्ट हो उतने-२ अक्षरों को समूहरूप में क्रमशः पृथक्-२ दो रंगों में प्रकाशित किया जाये जिससे छात्रों को सूत्रों को देखते ही तत्काल यह बोध हो सके कि उन्हें किस अक्षर पर शब्द को तोड़कर अर्थात् यति करके, उनका शुद्धतम उच्चारण करके, उन्हें शुद्धतम रूप में कण्ठस्थ करना है। इस प्रकार उन्हें अध्यापकविशेष की आवश्यकता के विना ही, मात्र ग्रन्थ की सहायता से ही सूत्रों को शुद्धतम रूप में कण्ठस्थ करने की एक अतिविशिष्ट सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

हमारे परममित्र, परमसहयोगी, संस्कृत तथा संस्कृति के प्रति अगाधनिष्ठ, दुर्लभ, जन-जनोपयोगी तथा रचनात्मक संस्कृतसाहित्य के प्रकाशन में अतिशयरुचिधारी, प्रभुकृपा तथा अपने सुकर्मों के सुफल-स्वरूप अकूत धन-सम्पदा के स्वामी, परमोदारहृदय, परमदानी **'श्री जयसेठ हीरालाल चम्पालाल खिंवसरा जी (नासिक-महाराष्ट्र)'** तथा **'श्री परमहंस स्वामी शिवानन्द सरस्वती संस्कृत एवं संस्कृति शोध, शिक्षण तथा प्रशिक्षण संस्थान, तहसील-सिन्नर, जिला-नासिक (महाराष्ट्र), पिन कोड-४२२१०३.'** के सर्वविध परमपावन सहयोग से बाल्यकाल से हृदय में स्थित तथा जाज्वल्यमान उन अभिलाषाओं की पूर्ति को मूर्त रूप प्रदान करते हुये, अनेक संस्कृतप्रेमी छात्रों तथा विद्वज्जगत् के समक्ष यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा दो रंगों में सूत्रों के प्रकाशन द्वारा अतिविशिष्ट सुविधाओं **'यतिबोध' तथा 'लघुकायता'** से युक्त **'अष्टाध्यायीसूत्रपाठः (यतिबोधसहितो लघुकायश्च)'** ग्रन्थ सुन्दरतम, शुद्धतम, सुपाठ्यतम रूप में प्रकाशित करके, प्रस्तुत करते हुये आज हमें जिस अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है, निश्चय ही वैसी ही अनुभूति आप सब को भी हो रही होगी।

वर्तमान समय में **'अष्टाध्यायीसूत्रपाठः'** के प्रमुख रूप से दो प्रकार के संस्करण उपलब्ध होते हैं। प्रथम हमारे तीर्थस्थान **'पाणिनि**

महाविद्यालय, रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली (भूतपूर्व–बहालगढ़), जिला–सोनीपत (हरियाणा)' से प्रकाशित है एवं हमारे परमपूज्य, प्रातःस्मरणीय गुरुवर्य **'आचार्य विजयपाल विद्यावारिधि जी'** के गुरुजी **'स्व. श्री पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी'** द्वारा सम्पादित है तथा द्वितीय **'गुरुकुल झज्जर'** से प्रकाशित तथा सम्पादित है। इन दोनों ही संस्करणों में निस्सन्देह शुद्धतम संस्करण प्रथमवाला ही है। इस संस्करण में प्रत्येक सूत्र को उसकी सर्वविध समीक्षा करके प्रकाशित किया गया है तथा उसकी क्रम, पङ्क्तियों आदि की व्यवस्था अत्यन्त आकर्षक तथा वैज्ञानिक है। इसी कारण से निस्सन्देह रूप से यह कहा जा सकता है कि संस्कृत जगत् के पाणिनीय पद्धति से पढ़नेवाले छात्रों तथा विद्वानों में से ९० प्रतिशत से अधिक के पास यही संस्करण उपलब्ध होता है। चूँकि अधिकांश व्यक्तियों को इसी संस्करण से सूत्रपाठ कण्ठस्थ है, इसीलिये उनके मस्तिष्कों में इसी संस्करण का क्रम तथा पङ्क्तियों आदि का रेखाचित्र स्थिर हो चुका है, अतः हमने भी अपने इस अतिविशिष्ट सुविधाओं से युक्त, लघुकाय संस्करण को पूर्णतया उसी संस्करण के रेखाचित्र के अनुसार प्रकाशित किया है जिससे उपर्युक्त संस्करण के किसी भी अभ्यस्त व्यक्ति को लेशमात्र भी असहजता तथा कठिनाई का अनुभव न हो। अतः हम उस संस्करण के प्रकाशकों तथा सम्पादक महोदय के अत्यन्त ऋणी तथा आभारी हैं जिसके आधार पर हमने यह सर्वथा नवीन कार्य करने का प्रयास किया है। इस संस्करण का उद्देश्य मात्र सर्वदा तथा सर्वत्र समीप रखने के तथा सूत्रों को शुद्धतम रूप में कण्ठस्थ करने के सौविध्य से है न कि उपर्युक्त संस्करण से किसी भी प्रकार की प्रतिद्वन्द्विता की भावना लेकर श्रेष्ठता प्रदर्शित करने से। वैसे भी गुरुजनों द्वारा निर्मित धरातल से उनके शिष्यों द्वारा उसी धरातल पर निर्मित भवन की क्या कदाचित् प्रतिद्वन्द्विता की सम्भावना भी की जा सकती है? कदापि नहीं।

यद्यपि **'पाणिनि महाविद्यालय, रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली (भूतपूर्व–बहालगढ़), जिला–सोनीपत (हरियाणा)'** से प्रकाशित संस्करण की अनेकों आवृत्तियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं तथापि १५वें संस्करण (प्रथम कम्प्यूटरीकृत संस्करण) में पूज्य गुरुवर्य **'आचार्य विजयपाल विद्यावारिधि जी'** ने पिछले संस्करणों से चली आ रही अनेकों मुद्रित अशुद्धियों का वास्तविक संशोधन किया था। उस संशोधन में हमारे सहित हमारे अनेक सहपाठी मित्रों का भी सहयोग पूज्य आचार्य जी को प्राप्त हुआ था, उस समय भी हृदय में उस संशोधित संस्करण में कुछ अन्य नवीन, वर्तमान युग में प्रासङ्गिक संशोधन (नवीनीकरण) करने की अभिलाषा जागृत होती थी परन्तु चूँकि पूज्य आचार्य जी अपने गुरुजी द्वारा सम्पादित संस्करण से मात्र मुद्रित अशुद्धियों को ही दूर करने के विशेष इच्छुक थे, कोई नवीन परिवर्तन करने के इच्छुक नहीं थे, उसके पुराने रूप से छेड़छाड़ के पक्षधर नहीं थे अतः उस समय चाहकर भी वे नये परिवर्तन प्रकाशित नहीं हो पाये थे। हालाँकि जहाँ तक हमें स्मरण है, हमने उस समय आचार्य जी से अपनी बुद्धि के नये सुझाव खुलकर प्रस्तुत भी नहीं किये थे, करते तो सम्भवतः वे स्वीकार कर भी लेते, परन्तु उस समय सङ्कोचवश कह ही नहीं पाये अतः वह सब मन में ही रह गया।

लघुकायता–प्रस्तुत संस्करण इतना लघुकाय है कि जिसे हम कभी भी तथा कहीं भी जायें, सर्वदा तथा सर्वत्र हमारे समीप रख सकते हैं जिससे कभी भी तथा कहीं भी स्मरण अथवा आवृत्ति की इच्छा जागृत होने पर तत्क्षण उसे देखकर उपर्युक्त इच्छा निर्विघ्न होकर पूर्ण कर सकते हैं, साथ ही यह प्रायः सर्वदा तथा सर्वत्र पहने जानेवाले कुर्ता, कमीज आदि वस्त्र की जेब में सरलता से समा सकता है।

प्रस्तुत लघुकाय संस्करण में प्रायः सब कुछ पूर्वोक्त उसी संस्करण का प्रतिरूप है परन्तु हमने लघुकायता के साथ-२ प्रस्तुत संस्करण को अतिशय उत्कृष्ट, सुबोध, आकर्षक तथा व्यवस्थित बनाने के लिये इसमें अपनी उपज्ञा से कुछ अनेक आवश्यक नवीन परिवर्तन तथा परिष्कार भी (सूत्रों के मूल रूप से छेड़छाड़ किये विना) किये हैं जिनका बोध छात्रों तथा अध्यापकों को ग्रन्थ का सूक्ष्मदृष्ट्या अध्ययन करने पर स्वयमेव हो जायेगा।

यतिबोध—इसके अतिरिक्त सूत्रों में किस अक्षर पर शब्द को तोड़कर अर्थात् किस अक्षर पर यति (अल्पविराम अथवा हल्की सी श्वाँस) करके, उनका शुद्धतम उच्चारण करके, उन्हें शुद्धतम रूप में कण्ठस्थ किया जाये, इसका बोध कराने के लिये प्रस्तुत संस्करण में जिस नवीन एवम् अतिविशिष्ट प्रकार की सुविधा **'यतिबोध'** का समावेश किया गया है, उसके लिये हमने अधिकांशतया शब्दों के अविखण्डित स्वरूप (सन्धि, लिपिपरिपाटी आदि के कारण जहाँ इनके स्वरूप का विखण्डन हुआ है, वहाँ कुछ अत्यावश्यक नियमों का आश्रय लेकर, उनका परशब्द के साथ समावेश करके, अविखण्डित स्वरूप की कल्पना की गई है) को प्रमुखतया आधार बनाकर स्वनिर्मित परन्तु अत्यन्त सूक्ष्म शास्त्रीय दृष्टि से शास्त्रीयता का पुट लिये हुये एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण से सुविधापूर्ण अनेक नियमों को आधार बनाया है। इस विशेषता का समावेश कर देने से छात्रों को एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लाभ दूरगामी दृष्टि से यह भी होगा कि उन्हें इस प्रकार यतिबोधपूर्वक सूत्रों को कण्ठस्थ करते-करते शब्दों के अधिकाधिक मूल स्वरूपों का बोध भी अनायास ही हो जायेगा जिसका चामत्कारिक लाभ उन्हें प्रथमावृत्ति, काशिका, महाभाष्य आदि ग्रन्थों का अध्ययन करते समय प्रतीत होगा।

उन सभी का उल्लेख यहाँ पर विस्तरभय तथा ग्रन्थ के कण्ठस्थीकरणरूप प्रधान उद्देश्य होने के कारण अप्रासङ्गिक होने से नहीं किया जा रहा है, साथ ही यह भी कारण है कि उन सभी विशेषताओं का उल्लेख करने से कदाचित् उपर्युक्त संस्करण से श्रेष्ठता सिद्ध करने की ध्वनि निकलती हुई प्रतीत न हो जो कि लेशमात्र भी हमारा उद्देश्य नहीं है। और फिर विद्वान् एवं छात्र ग्रन्थ का अध्ययन करके यथेष्टरूप से लाभान्वित होते हुये स्वयम् उन विशेषताओं, परिष्कारों एवं नियमों से अवगत हो सकेंगे जो कि हमारा वास्तविक ध्येय है। यद्यपि यतिबोध के नियमों का (आनुमानिक) बोध छात्रों को सूत्रों को कण्ठस्थ करते समय ही हो जायेगा—यह आवश्यक नहीं है परन्तु भावी अध्ययन करते समय यह बोध स्वतः ही अवश्य हो सकेगा। इसके अतिरिक्त यदि किन्हीं विद्वानों एवं छात्रों को यतिबोध के नियमों का स्पष्टीकरण न हो सके तो वे यथोचित सम्पर्क अथवा पत्र-व्यवहार आदि द्वारा उनका हमसे स्पष्टीकरण प्राप्त कर सकते हैं तथा यदि किन्हीं विद्वानों एवं छात्रों के मस्तिष्क में ग्रन्थ के अन्दर किसी भी प्रकार की कोई त्रुटि अथवा परामर्श अनुभूत हो तो कृपया यथोचित माध्यम से सम्पर्क करके सूचित करने की कृपा अवश्य करें जिससे अग्रिम संस्करण को और भी अधिक श्रेयस्कर प्रकाशित किया जा सके। सभी का हार्दिक स्वागत है।

विशेष—प्रस्तुत ग्रन्थ में छात्रों तथा अध्यापकों को यह सुविधा भी प्रदान की जाती है कि वे अपनी उच्चारण करने की सामर्थ्य के अनुसार एक साथ एक से अधिक यतियों सहित भी सूत्रों का उच्चारण करके कण्ठस्थ कर तथा करवा सकते हैं। यथा—**'दाधा घ्वदाप्'**, यहाँ पर स्वयं की सुविधानुसार **'दा'** तथा **'धा'** इन दो यतियों का तथा **'घ्व'** तथा **'दाप्'** इन दो यतियों का एक साथ उच्चारण करके क्रमशः **'दाधा'** तथा **'घ्वदाप्'** इस प्रकार भी कण्ठस्थ कर तथा करवा सकते हैं।

कृतज्ञता-प्रकाश—यद्यपि यह नवीन ग्रन्थ-निर्माण किसी विशेष बुद्धि तथा विद्वत्ता की अपेक्षा नहीं रखता है तथापि नवसृजनात्मकता की दृष्टि से यह अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण तथा परमोपयोगी है। इस सम्पूर्ण कृत्य के लिये हम अपनी सम्पूर्ण विद्याओं के गुरु, परमादरणीय, प्रातःस्मरणीय, परमविद्वान् गुरुवर्य **'आचार्य विजयपाल विद्यावारिधि जी'** का अत्यन्त हार्दिक रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिनके साक्षात् मुखारविन्द से हमने वैदिक वाङ्मय का विधिवत् एवं यथाशक्ति अध्ययन किया तथा जिनके आशीर्वचन हमारे लिये स्वाभाविक रूप से ही निरन्तर प्राप्त होते रहते हैं जिन्हें प्राप्त करके ही हम किसी भी प्रकार के महत्त्वपूर्ण कार्य को पूर्ण करने में सफल हो पाते हैं। इनके अतिरिक्त हम अपने परमादरणीय बाबा जी एवं दादी जी, परमादरणीय, परमविद्वान् पितृवर्य **'आचार्य चन्द्रदत्त शर्मा जी'** तथा माता जी, संस्कृत तथा संस्कृति के कार्यों के लिये हमारा सतत उत्साहवर्धन करनेवाली, अपने अत्यन्त हार्दिक, सात्त्विक एवम् आत्मिक प्रेम से हमारे हृदय को निरन्तर सींचनेवाली, अत्यन्त सेवापरायणा, पतिव्रता, हमारी हृदयेश्वरी, अपनी धर्मपत्नी का विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिनके वास्तविक एवं व्यावहारिक सत्प्रयासों तथा हार्दिक शुभकामनाओं से ही हम यह कार्य पूर्ण कर पाने में सफल हो सके हैं। इनके अतिरिक्त हम अपने सभी भाईयों, बहनों, सभी निकटदूरस्थ बन्धु-बान्धवों तथा अपने सभी अभिन्नहृदय परममित्रों **'आचार्य भरत कुमार जी'** आदि का भी हृदय से अत्यन्त आभार व्यक्त करते हैं जिनकी सर्वदैव निश्छल, निःस्वार्थ शुभकामनायें हमें सर्वदैव प्राप्त होती रही हैं जिस कारण हम यह कार्य पूर्ण कर पाने में सफल हो सके हैं। उपर्युक्त सभी की स्नेहमयी कृपा, आशीर्वाद तथा शुभेच्छाओं को ही हम इस कार्य की सफलता का श्रेय तथा धन्यवाद प्रदान करेंगे जिन्हें प्राप्त करके हम इस कार्य को पूर्ण करने में सफल हुये तथा भविष्य में भी दुरूह से दुरूह कार्यों में सफलता प्राप्त करते रहेंगे।

आशा है हमारा यह सर्वथा नवीन प्रयास संस्कृत जगत् के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति के लिये परमोपयोगी सिद्ध होगा तथा यही हमारे लिये उनके द्वारा प्रदत्त इस कार्य का सुफल भी होगा। इसी कामना के साथ–

विदुषामनुचरः–
धर्मेश भारद्वाज

'संस्कृतम्', होटल अन्नपूर्णा,
११०२, सिविल लाइन्स, बदायूँ,
जिला–बदायूँ, (उ. प्र.), पिन कोड–२४३६०१.
श्रावण, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, संवत्सर २०६३,
दिनाङ्क–९ अगस्त, २००६ (बुधवार)।

--o--

॥ ओ३म् ॥

पाणिनिमुनिप्रणीतः

अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

(यतिबोधसहितो लघुकायश्च)

यतिबोधकारः सम्पादकश्च–

आचार्य धर्मेश भारद्वाज

प्रकाशकः–

श्री परमहंस स्वामी शिवानन्द सरस्वती संस्कृत एवं संस्कृति शोध, शिक्षण तथा प्रशिक्षण संस्थान,

तहसील–सिन्नर, जिला–नासिक (महाराष्ट्र),

पिन कोड–४२२१०३.

प्रकाशक– श्री परमहंस स्वामी शिवानन्द सरस्वती
संस्कृत एवं संस्कृति शोध, शिक्षण
तथा प्रशिक्षण संस्थान,
तहसील–सिन्नर, जिला–नासिक (महाराष्ट्र),
पिन कोड–४२२१०३.

कम्प्यूटर-अक्षरसंयोजक– आचार्य धर्मेश भारद्वाज,
'संस्कृतम्', होटल अन्नपूर्णा,
११०२, सिविल लाइन्स,
बदायूँ, जिला–बदायूँ (उ.प्र.),
पिन कोड–२४३६०१.

वितरक– श्री जयसेठ हीरालाल चम्पालाल खिंवसरा जी,
हीरालाल चम्पालाल एण्ड कम्पनी,
निकट-कालभैरवनाथ मन्दिर, तहसील–सिन्नर,
जिला–नासिक, (महाराष्ट्र), पिन कोड–४२२१०३.

प्रथम संस्करण– ५००० प्रतियाँ।

समय– संवत् २०६४, सन् २००७ ई.।

मूल्य– सामान्य तथा दीर्घकाय संस्करण के साथ निःशुल्क,
स्वतन्त्ररूप से -----------------------------।

मुद्रक–

प्रकाशकीय कृतज्ञता-ज्ञापन

स्वामी जी का छायाचित्र

श्री परमहंस स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी

जिनके ऊपर परमपिता परमेश्वर की असीम अनुकम्पा है, जिनके आशीर्वाद, कृपा तथा सत्प्रेरणा के फलस्वरूप ही मैं अकिञ्चन इस पवित्र कार्य को कर पाने में समर्थ हो सका हूँ, जो इस कार्य के वास्तविक कर्ता हैं, मैं तो निमित्तमात्र हूँ, जिन्हें यह कार्य मेरी ओर से पूर्ण निरहङ्कारिता तथा भक्तिभाव से समर्पित है, जिनके प्रति मेरी पूर्ण आत्मिक कृतज्ञता है।

प्रकाशक—जयसेठ हीरालाल चम्पालाल खिंवसरा

अध्यक्ष

श्री परमहंस स्वामी शिवानन्द सरस्वती

संस्कृत एवं संस्कृति शोध, शिक्षण

तथा प्रशिक्षण संस्थान,

तहसील—सिन्नर, जिला—नासिक (महाराष्ट्र), पिन कोड—४२२१०३.

प्रकाशकीय कृतज्ञता-ज्ञापन

अब मैं अपने पूजनीय पिता जी तथा माता जी **'श्री-------- -----------जी'** तथा **'श्रीमती ----------- --------जी'**, परिवारवासियों, निकटदूरस्थ बन्धु-बान्धवों, अभिन्नहृदय मित्रों, अतिशय-स्नेही **'आचार्य भरत कुमार जी'**, रचनात्मक संस्कृतसाहित्य के प्रकाशन के प्रति मेरे हृदय में सत्प्रेरणा जगानेवाले, इस अद्भुत एवम् अद्वितीय ग्रन्थ का अत्यन्त शोधपूर्ण मन्थन करके यथाशक्ति श्रेष्ठतम सम्पादन तथा प्रकाशनसम्बन्धी कम्प्यूटर-अक्षरसंयोजन आदि अनेक आवश्यक कार्य पूर्ण करनेवाले, हमारे संस्थान के **'शोध-निर्देशक'**, समादरणीय तथा अतिशय सुहृत्, सम्पादक महोदय **'आचार्य धर्मेश भारद्वाज जी'**, इस अद्भुत तथा अद्वितीय ग्रन्थ का मुद्रण करनेवाले मुद्रक महोदय **'श्री -------- ------जी'** तथा इस पवित्र कार्य के निर्बाधरूप से पूर्ण होने में सभी सहायक परोक्ष एवम् अपरोक्ष परिस्थितियों के प्रति भी अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनकी सत्प्रेरणा, सहयोग, परिश्रम तथा शुभकामनाओं के फलस्वरूप ही मैं अकिञ्चन इस ग्रन्थ को यथाशक्ति श्रेष्ठतम रूप में प्रकाशित करने में समर्थ हो सका हूँ। प्रभु आप सभी पर अपनी कृपादृष्टि सदा बनायें रखें, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ मैं आप सभी को हार्दिक साधुवाद भी प्रदान करता हूँ।

साथ ही आप सभी सुधी पाठकों के आशीर्वचनरूपी फल का पुण्यभागी बन सकूंगा, यह आशा भी करता हूँ। शुभाकाङ्क्षी-

प्रकाशक—**जयसेठ हीरालाल चम्पालाल खिंवसरा**

अध्यक्ष

श्री परमहंस स्वामी शिवानन्द सरस्वती
संस्कृत एवं संस्कृति शोध, शिक्षण
तथा प्रशिक्षण संस्थान,
तहसील-सिन्नर, जिला-नासिक (महाराष्ट्र), पिन कोड-४२२१०३.

(१) उपर्युक्त संस्करण में पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी द्वारा प्रत्येक पाद के अन्त में दी जानेवाली संख्यागणन की पङ्क्तियों को वर्तमान समय में उसकी विशेष व्यावहारिक आवश्यकता का अभाव अनुभूत होने के कारण इसमें प्रकाशित नहीं किया गया है।

(२) उपर्युक्त संस्करण में प्रकाशित **' य़ '** इस वर्ण के स्थान पर **'य'** इस प्रकार से तथा उससे पिछले वर्ण को यथोचित आधा अथवा हलन्त चिह्न लगाकर ही प्रकाशित किया गया है क्योंकि अध्यापकों अथवा निर्देशकों के अभाव में कण्ठस्थ करनेवाले आजकल के छात्रों को इस **' य़ '** वर्ण के स्वरूप तथा उच्चारण के विषय में प्रायः बोध ही नहीं हो पाता है। इस प्राचीन परिपाटी के वर्ण का बोध प्रथमावृत्ति, काशिका, भाष्य आदि ग्रन्थों में बाद में अवश्य कराया जा सकता है।

(३) उपर्युक्त संस्करण में जहाँ सूत्र को किसी भी वर्ण पर, शब्द के स्वरूप के विखण्डित होने का विशेषरूप से विचार किये विना ही **'-' (हाइफन)** लगाकर तोड़कर प्रकाशित किया गया है वहीं इस संस्करण में सूत्र को किसी वर्ण पर इस तरह से तोड़कर प्रकाशित किया गया है कि उसके उच्चारण का सौविध्य तथा शब्द का स्वरूप विखण्डित न हो। उपर्युक्त संस्करण में इस विशेषता का अभाव मन में थोड़ा खटकता था।

(४) उपर्युक्त संस्करण में जहाँ सूत्र को दो पङ्क्तियों में प्रकाशित किया गया है वहाँ प्रायः ऊपरवाली पङ्क्ति में वर्तमान किसी ऐसे स्वतन्त्र शब्द को जिसको लघुस्वरूप होने के कारण नीचेवाली पङ्क्ति में पूर्णतया एक साथ प्रकाशित किया जा सकता है, उसे **'-' (हाइफन)** लगाकर तोड़कर उसका शेष भाग नीचेवाली पङ्क्ति में प्रकाशित किया गया है वहीं इस संस्करण में ऐसे स्वतन्त्र शब्द को लघुस्वरूप होने के कारण पूर्णतया एक साथ विना **'-' (हाइफन)** लगाये नीचेवाली पङ्क्ति में प्रकाशित किया गया है क्योंकि दोनों ही अवस्थाओं में पङ्क्तियाँ तो दो

ही निर्धारित रखनी थीं, अतः इस आकर्षक सुविधा का समावेश भी इस संस्करण में किया गया है।

इसके अतिरिक्त सूत्रों में किस अक्षर पर शब्द को तोड़कर अर्थात् किस अक्षर पर यति (अल्पविराम अथवा हल्की सी श्वाँस) करके, उनका शुद्धतम उच्चारण करके, उन्हें शुद्धतम रूप में कण्ठस्थ किया जाये, इसका बोध कराने के लिये इस संस्करण में जिस नवीन एवम् अतिविशिष्ट प्रकार की सुविधा **'यतिबोध'** का समावेश किया गया है, उसके लिये हमने स्वनिर्मित परन्तु शास्त्रीयता का पुट लिये हुये एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण से सुविधापूर्ण जिन नियमों को आधार बनाया है, उनसे भी पाठकों को अवगत कराना हम आवश्यक समझते हैं।

(१) जिन अक्षरों को एक साथ मिलाकर उच्चारण करना अभीष्ट है और यदि वे पहले से ही विना अन्य किसी अक्षर अथवा शब्द के साथ स्वतन्त्ररूप से एक ही लाइन के नीचे मुद्रित हैं, वहाँ पर अगले शब्द के साथ पार्थक्य होने के कारण यतिबोध स्वाभाविकरूप से ही हो जाने के कारण उससे आगे वर्तमान अन्य लाइन के नीचे मुद्रित होनेवाले शब्द के साथ पार्थक्य दिखाने के लिये दो विभिन्न रंगों में मुद्रण द्वारा यतिबोध नहीं कराया गया है। यथा–**'अथ शब्दानुशासनम्'**। यहाँ पर **'अथ'** इस शब्द के सभी अक्षरों को एक साथ मिलाकर उच्चारण करना अभीष्ट है और वे पहले से ही विना अन्य किसी अक्षर अथवा शब्द के साथ स्वतन्त्ररूप से एक ही लाइन के नीचे मुद्रित हैं, अतः यहाँ पर अगले शब्द के साथ पार्थक्य हाने के कारण यतिबोध स्वाभाविकरूप से ही हो जाने के कारण उससे आगे वर्तमान अन्य लाइन के नीचे मुद्रित होनेवाले–**'शब्दानु'** इस शब्द के साथ पार्थक्य दिखाने के लिये दो विभिन्न रंगों में मुद्रण द्वारा अर्थात् **'शब्दानु'** इस शब्द को द्वितीय रंग में मुद्रित करके यतिबोध नहीं कराया गया है।

(२) जिन सूत्रों में एक ही लाइन के नीचे समस्तशब्दों को

मुद्रित किया गया है वहाँ उन समस्तशब्दों में वर्तमान जिन अवयवशब्दों का स्वरूप अगले अवयवशब्दों के प्रथम अक्षर के साथ सन्धि, लिपिपरिपाटी आदि के कारण विखण्डित हो गया है अर्थात् पूर्णतया स्वतन्त्ररूप से स्पष्ट नहीं है, उन अवयवशब्दों को अगले उन अवयवशब्दों तक साथ मिलाकर, उच्चारण करना अभीष्ट समझकर एक साथ भिन्न रंगों में मुद्रण द्वारा यतिबोध कराया गया है जिन अवयवशब्दों का स्वरूप अगले अवयवशब्दों के प्रथम अक्षर के साथ सन्धि, लिपिपरिपाटी आदि के कारण विखण्डित नहीं हुआ है अर्थात् पूर्णतया स्वतन्त्ररूप से स्पष्ट है। यथा (सन्धि का उदाहरण)–**'अथ शब्दानुशासनम्'**। यहाँ पर **'शब्दानुशासनम्'** यह एक समस्तशब्द है जो एक पङ्क्ति के नीचे मुद्रित है और इस समस्तशब्द में **'शब्द'**, **'अनु'** तथा **'शासनम्'** ये तीन अवयवशब्द हैं। परन्तु **'शब्द'** इस अवयवशब्द का स्वरूप अगले **'अनु'** इस अवयवशब्द के प्रथम अक्षर **'अ'** के साथ सन्धि हो जाने के कारण विखण्डित **'शब्दा'** ऐसा हो गया है, पूर्णतया स्पष्ट **'शब्द'** ऐसा नहीं है, अतः उस अवयवशब्द को अगले **'अनु'** इस अवयवशब्द तक साथ मिलाकर, उच्चारण करना अभीष्ट समझकर एक साथ भिन्न (लाल से भिन्न काला) रंग में मुद्रण द्वारा यतिबोध कराया गया है जिसका स्वरूप अगले **'शासनम्'** इस अवयवशब्द के प्रथम अक्षर **'शा'** के साथ सन्धि, लिपिपरिपाटी आदि के कारण विखण्डित नहीं हुआ है, पूर्णतया स्पष्ट **'शब्दानु'** ऐसा है।

इन अवयवशब्दों के निर्धारण में अत्यन्त सूक्ष्म व्याकरणदृष्टि का इस संस्करण में आश्रय लिया गया है।

(३) समस्तशब्दों में अन्तिम अवयवशब्द का स्वरूप उसमें संयुक्त विभक्ति (जो कि वस्तुतः सम्पूर्ण समस्तशब्द की विभक्ति होती है) के साथ मिलाकर ही स्वीकार किया गया है, अतः उस अन्तिम अवयवशब्द को उसमें संयुक्त विभक्ति के साथ मिलाकर ही उच्चारण करना अभीष्ट समझकर भिन्न रंगों में मुद्रण द्वारा यतिबोध

कराया गया है। यथा–**'अथ शब्दानुशासनम्'**। यहाँ पर **'शब्दानुशासनम्'** यह समस्तशब्द है तथा उसमें अन्तिम अवयवशब्द **'शासन'** यह है परन्तु उसका स्वरूप उसमें संयुक्त विभक्ति **'अम्'** इसके (जो कि वस्तुतः सम्पूर्ण समस्तशब्द **'शब्दानुशासन'** इसकी विभक्ति है) साथ मिलाकर ही स्वीकार किया गया है, अतः **'शासन'** इस अन्तिम अवयवशब्द को उसमें संयुक्त विभिक्ति **'अम्'** के साथ मिलाकर ही उच्चारण करना **'शासनम्'** ऐसा अभीष्ट समझकर भिन्न (काले से भिन्न लाल) रंग में मुद्रण द्वारा यतिबोध कराया गया है।

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥

अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

अथ शब्दानुशासनम्।

अथ प्रत्याहारसूत्राणि

अइउण् । ऋऌक् । एओङ् । ऐऔच् । हयवरट् । लण् । ञमङणनम् । झभञ् । घढधष् । जबगडदश् । खफछठथचटतव् । कपय् । शषसर् । हल् । इति प्रत्याहारसूत्राणि ॥

प्रथमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ वृद्धिरादैच्।
२ अदेङ् गुणः।
३ इको गुणवृद्धी।
४ न धातुलोप आर्धधातुके।
५ क्ङिति च।
६ दीधीवेवीटाम्।
७ हलोऽनन्तराः संयोगः।
८ मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः।
९ तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्।
१० नाज्झलौ।
११ ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्।
१२ अदसो मात्।
१३ शे।
१४ निपात एकाजनाङ्।
१५ ओत्।
१६ सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे।
१७ उञ ऊँ।

१८ ईदूतौ च सप्तम्यर्थे।
१९ दाधा घ्वदाप्।
२० आद्यन्तवदेकस्मिन्।
२१ तरप्तमपौ घः।
२२ बहुगणवतुडति सङ्ख्या।
२३ ष्णान्ता षट्।
२४ डति च।
२५ क्तक्तवतू निष्ठा।
२६ सर्वादीनि सर्वनामानि।
२७ विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ।
२८ न बहुव्रीहौ।
२९ तृतीयासमासे।
३० द्वन्द्वे च।
३१ विभाषा जसि।
३२ प्रथमचरमतयाल्पार्धकतिपय-नेमाश्च।
३३ पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसञ्ज्ञायाम्।
३४ स्वमज्ञातिधनाख्यायाम्।
३५ अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः।
३६ स्वरादिनिपातमव्ययम्।
३७ तद्धितश्चासर्वविभक्तिः।
३८ कृन्मेजन्तः।
३९ क्त्वातोसुन्कसुनः।
४० अव्ययीभावश्च।
४१ शि सर्वनामस्थानम्।
४२ सुडनपुंसकस्य।
४३ न वेति विभाषा।
४४ इग्यणः सम्प्रसारणम्।
४५ आद्यन्तौ टकितौ।
४६ मिदचोऽन्त्यात्परः।
४७ एच इग्घ्रस्वादेशे।
४८ षष्ठी स्थानेयोगा।
४९ स्थानेऽन्तरतमः।
५० उरण्रपरः।
५१ अलोऽन्त्यस्य।
५२ ङिच्च।
५३ आदेः परस्य।
५४ अनेकाल्शित्सर्वस्य।
५५ स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ।
५६ अचः परस्मिन्पूर्वविधौ।
५७ न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोप-स्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्-चर्विधिषु।
५८ द्विर्वचनेऽचि।
५९ अदर्शनं लोपः।
६० प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः।
६१ प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्।
६२ न लुमताङ्गस्य।
६३ अचोऽन्त्यादि टि।
६४ अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा।
६५ तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य।
६६ तस्मादित्युत्तरस्य।
६७ स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसञ्ज्ञा।

६८ अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः।
६९ तपरस्तत्कालस्य।
७० आदिरन्त्येन सहेता।
७१ येन विधिस्तदन्तस्य।
७२ वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम्।
७३ त्यदादीनि च।
७४ एङ् प्राचां देशे।

--०--

द्वितीयः पादः

१ गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्।
२ विज इट्।
३ विभाषोर्णोः।
४ सार्वधातुकमपित्।
५ असंयोगाल्लिट् कित्।
६ इन्धिभवतिभ्यां च।
७ मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः क्त्वा।
८ रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च।
९ इको झल्।
१० हलन्ताच्च।
११ लिङ्सिचावात्मनेपदेषु।
१२ उश्च।
१३ वा गमः।
१४ हनः सिच्।
१५ यमो गन्धने।
१६ विभाषोपयमने।
१७ स्थाघ्वोरिच्च।
१८ न क्त्वा सेट्।
१९ निष्ठा शीङ्स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः।
२० मृषस्तितिक्षायाम्।
२१ उदुपधाद् भावादिकर्मणोरन्यतरस्याम्।
२२ पूङः क्त्वा च।
२३ नोपधात्थफान्ताद् वा।
२४ वञ्चिलुञ्च्यृतश्च।
२५ तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य।
२६ रलो व्युपधाद् धलादेः संश्च।
२७ ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः।
२८ अचश्च।
२९ उच्चैरुदात्तः।
३० नीचैरनुदात्तः।
३१ समाहारः स्वरितः।
३२ तस्यादित उदात्तमर्धह्रस्वम्।
३३ एकश्रुति दूरात्सम्बुद्धौ।
३४ यज्ञकर्मण्यजपन्यूङ्खसामसु।
३५ उच्चैस्तरां वा वषट्कारः।
३६ विभाषा छन्दसि।
३७ न सुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य तूदात्तः।
३८ देवब्रह्मणोरनुदात्तः।
३९ स्वरितात्संहितायामनुदात्तानाम्।

४० उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः।
४१ अपृक्त एकाल्प्रत्ययः।
४२ तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः।
४३ प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्।
४४ एकविभक्ति चापूर्वनिपाते।
४५ अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्।
४६ कृत्तद्धितसमासाश्च।
४७ ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य।
४८ गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य।
४९ लुक्तद्धितलुकि।
५० इद् गोण्याः।
५१ लुपि युक्तवद् व्यक्तिवचने।
५२ विशेषणानां चाजातेः।
५३ तदशिष्यं सञ्ज्ञाप्रमाणत्वात्।
५४ लुब्योगाप्रख्यानात्।
५५ योगप्रमाणे च तदभावेऽदर्शनं स्यात्।
५६ प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्यान्य-प्रमाणत्वात्।
५७ कालोपसर्जने च तुल्यम्।
५८ जात्याख्यायामेकस्मिन् बहुवचनमन्यतरस्याम्।
५९ अस्मदो द्वयोश्च।
६० फल्गुनीप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे।
६१ छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम्।
६२ विशाखयोश्च।
६३ तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विवचनं नित्यम्।
६४ सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ।
६५ वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः।
६६ स्त्री पुंवच्च।
६७ पुमान्स्त्रिया।
६८ भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्।
६९ नपुंसकमनपुंसकेनैकवच् चास्यान्यतरस्याम्।
७० पिता मात्रा।
७१ श्वशुरः श्वश्र्वा।
७२ त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम्।
७३ ग्राम्यपशुसङ्घेष्वतरुणेषु स्त्री।

--०--

तृतीयः पादः

१ भूवादयो धातवः।
२ उपदेशेऽजनुनासिक इत्।
३ हलन्त्यम्।
४ न विभक्तौ तुस्माः।
५ आदिर्ञिटुडवः।
६ षः प्रत्ययस्य।
७ चुटू।
८ लशक्वतद्धिते।
९ तस्य लोपः।

१० यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम्।
११ स्वरितेनाधिकारः।
१२ अनुदात्तङित आत्मनेपदम्।
१३ भावकर्मणोः।
१४ कर्तरि कर्मव्यतिहारे।
१५ न गतिहिंसार्थेभ्यः।
१६ इतरेतरान्योऽन्योपपदाच्च।
१७ नेर्विशः।
१८ परिव्यवेभ्यः क्रियः।
१९ विपराभ्यां जेः।
२० आङो दोऽनास्यविहरणे।
२१ क्रीडोऽनुसम्परिभ्यश्च।
२२ समवप्रविभ्यः स्थः।
२३ प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च।
२४ उदोऽनूर्ध्वकर्मणि।
२५ उपान्मन्त्रकरणे।
२६ अकर्मकाच्च।
२७ उद्विभ्यां तपः।
२८ आङो यमहनः।
२९ समो गम्यृच्छिभ्याम्।
३० निसमुपविभ्यो ह्वः।
३१ स्पर्धायामाङः।
३२ गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्य-
प्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु
कृञः।
३३ अधेः प्रसहने।
३४ वेः शब्दकर्मणः।
३५ अकर्मकाच्च।
३६ सम्माननोत्सञ्जनाचार्यकरण-
ज्ञानभृतिविगणनव्ययेषु नियः।
३७ कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि।
३८ वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः।
३९ उपपराभ्याम्।
४० आङ उद्गमने।
४१ वेः पादविहरणे।
४२ प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम्।
४३ अनुपसर्गाद् वा।
४४ अपह्नवे ज्ञः।
४५ अकर्मकाच्च।
४६ सम्प्रतिभ्यामनाध्याने।
४७ भासनोपसम्भाषाज्ञानयत्न-
विमत्युपमन्त्रणेषु वदः।
४८ व्यक्तवाचां समुच्चारणे।
४९ अनोरकर्मकात्।
५० विभाषा विप्रलापे।
५१ अवाद् ग्रः।
५२ समः प्रतिज्ञाने।
५३ उदश्चरः सकर्मकात्।
५४ समस्तृतीयायुक्तात्।
५५ दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे।
५६ उपाद् यमः स्वकरणे।
५७ ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः।
५८ नानोर्ज्ञः।

५९ प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः।
६० शदेः शितः।
६१ म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च।
६२ पूर्ववत्सनः।
६३ आम्प्रत्ययवत्कृञोऽनुप्रयोगस्य।
६४ प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु।
६५ समः क्ष्णुवः।
६६ भुजोऽनवने।
६७ णेरणौ यत्कर्म णौ चेत्स कर्तानाध्याने।
६८ भीस्म्योर्हेतुभये।
६९ गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने।
७० लियः सम्माननशालीनी-करणयोश्च।
७१ मिथ्योपपदात्कृञोऽभ्यासे।
७२ स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले।
७३ अपाद् वदः।
७४ णिचश्च।
७५ समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे।
७६ अनुपसर्गाज्ज्ञः।
७७ विभाषोपपदेन प्रतीयमाने।
७८ शेषात्कर्तरि परस्मैपदम्।
७९ अनुपराभ्यां कृञः।
८० अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः।
८१ प्राद् वहः।
८२ परेर्मृषः।
८३ व्याङ्परिभ्यो रमः।
८४ उपाच्च।
८५ विभाषाकर्मकात्।
८६ बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः।
८७ निगरणचलनार्थेभ्यश्च।
८८ अणावकर्मकाच्चित्तवत्-कर्तृकात्।
८९ न पादम्याङ्यमाङ्यस-परिमुहरुचिनृतिवदवसः।
९० वा क्यषः।
९१ द्युद्भ्यो लुङि।
९२ वृद्भ्यः स्यसनोः।
९३ लुटि च क्लृपः।

--०--

चतुर्थः पादः

१ आ कडारादेका सञ्ज्ञा।
२ विप्रतिषेधे परं कार्यम्।
३ यू स्त्र्याख्यौ नदी।
४ नेयङुवङ्स्थानावस्त्री।
५ वामि।
६ ङिति ह्रस्वश्च।
७ शेषो घ्यसखि।
८ पतिः समास एव।
९ षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा।
१० ह्रस्वं लघु।
११ संयोगे गुरु।
१२ दीर्घं च।

१३ यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्।
१४ सुप्तिङन्तं पदम्।
१५ नः क्ये।
१६ सिति च।
१७ स्वादिष्वसर्वनामस्थाने।
१८ यचि भम्।
१९ तसौ मत्वर्थे।
२० अयस्मयादीनिच्छन्दसि।
२१ बहुषु बहुवचनम्।
२२ द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने।
२३ कारके।
२४ ध्रुवमपायेऽपादानम्।
२५ भीत्रार्थानां भयहेतुः।
२६ पराजेरसोढः।
२७ वारणार्थानामीप्सितः।
२८ अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति।
२९ आख्यातोपयोगे।
३० जनिकर्तुः प्रकृतिः।
३१ भुवः प्रभवः।
३२ कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्।
३३ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।
३४ श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः।
३५ धारेरुत्तमर्णः।
३६ स्पृहेरीप्सितः।
३७ क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः।
३८ क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म।
३९ राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः।
४० प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता।
४१ अनुप्रतिगृणश्च।
४२ साधकतमं करणम्।
४३ दिवः कर्म च।
४४ परिक्रयणे सम्प्रदानमन्य-तरस्याम्।
४५ आधारोऽधिकरणम्।
४६ अधिशीङ्स्थासां कर्म।
४७ अभिनिविशश्च।
४८ उपान्वध्याङ्वसः।
४९ कर्तुरीप्सिततमं कर्म।
५० तथायुक्तं चानीप्सितम्।
५१ अकथितं च।
५२ गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्मा-कर्मकाणामणि कर्ता स णौ।
५३ हृक्रोरन्यतरस्याम्।
५४ स्वतन्त्रः कर्ता।
५५ तत्प्रयोजको हेतुश्च।
५६ प्राग्रीश्वरान्निपाताः।
५७ चादयोऽसत्त्वे।
५८ प्रादय उपसर्गाः क्रियायोगे।

५९ गतिश्च।
६० ऊर्यादिच्विडाचश्च।
६१ अनुकरणं चानितिपरम्।
६२ आदरानादरयोः सदसती।
६३ भूषणेऽलम्।
६४ अन्तरपरिग्रहे।
६५ कणेमनसी श्रद्धाप्रतीघाते।
६६ पुरोऽव्ययम्।
६७ अस्तं च।
६८ अच्छ गत्यर्थवदेषु।
६९ अदोऽनुपदेशे।
७० तिरोऽन्तर्धौ।
७१ विभाषा कृञि।
७२ उपाजेऽन्वाजे।
७३ साक्षात्प्रभृतीनि च।
७४ अनत्याधान उरसिमनसी।
७५ मध्ये पदे निवचने च।
७६ नित्यं हस्ते पाणावुपयमने।
७७ प्राध्वं बन्धने।
७८ जीविकोपनिषदावौपम्ये।
७९ ते प्राग्धातोः।
८० छन्दसि परेऽपि।
८१ व्यवहिताश्च।
८२ कर्मप्रवचनीयाः।
८३ अनुर्लक्षणे।
८४ तृतीयार्थे।
८५ हीने।
८६ उपोऽधिके च।
८७ अपपरी वर्जने।
८८ आङ् मर्यादावचने।
८९ लक्षणेत्थम्भूताख्यानभाग-
वीप्सासु प्रतिपर्यनवः।
९० अभिरभागे।
९१ प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः।
९२ अधिपरी अनर्थकौ।
९३ सुः पूजायाम्।
९४ अतिरतिक्रमणे च।
९५ अपिः पदार्थसम्भावनान्वव-
सर्गगर्हासमुच्चयेषु।
९६ अधिरीश्वरे।
९७ विभाषा कृञि।
९८ लः परस्मैपदम्।
९९ तङानावात्मनेपदम्।
१०० तिङस्त्रीणि त्रीणि
प्रथममध्यमोत्तमाः।
१०१ तान्येकवचनद्विवचन-
बहुवचनान्येकशः।
१०२ सुपः।
१०३ विभक्तिश्च।
१०४ युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे
स्थानिन्यपि मध्यमः।
१०५ प्रहासे च मन्योपपदे
मन्यतेरुत्तम एकवच्च।

१०६ अस्मद्युत्तमः।
१०७ शेषे प्रथमः।
१०८ परः सन्निकर्षः संहिता।
१०९ विरामोऽवसानम्।

द्वितीयोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ समर्थः पदविधिः।
२ सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे।
३ प्राक्कडारात्समासः।
४ सह सुपा।
५ अव्ययीभावः।
६ अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानु-पूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु।
७ यथासादृश्ये।
८ यावदवधारणे।
९ सुप्प्रतिना मात्रार्थे।
१० अक्षशलाकासङ्ख्याः परिणा।
११ विभाषापपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या।
१२ आङ् मर्यादाभिविध्योः।
१३ लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये।
१४ अनुर्यत्समया।
१५ यस्य चायामः।
१६ तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च।
१७ पारे मध्ये षष्ठ्या वा।
१८ सङ्ख्या वंश्येन।
१९ नदीभिश्च।
२० अन्यपदार्थे च सञ्ज्ञायाम्।
२१ तत्पुरुषः।
२२ द्विगुश्च।
२३ द्वितीया श्रितातीतपतित-गतात्यस्तप्राप्तापन्नैः।
२४ स्वयं क्तेन।
२५ खट्वा क्षेपे।
२६ सामि।
२७ कालाः।
२८ अत्यन्तसंयोगे च।
२९ तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन।
३० पूर्वसदृशसमोनार्थकलह-निपुणमिश्रश्लक्ष्णैः।
३१ कर्तृकरणे कृता बहुलम्।
३२ कृत्यैरधिकार्थवचने।
३३ अन्नेन व्यञ्जनम्।

३४ भक्ष्येण मिश्रीकरणम्।
३५ चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुख-रक्षितैः।
३६ पञ्चमी भयेन।
३७ अपेतापोढमुक्तपतिताप-त्रस्तैरल्पशः।
३८ स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन।
३९ सप्तमी शौण्डैः।
४० सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च।
४१ ध्वाङ्क्षेण क्षेपे।
४२ कृत्यैर्ऋणे।
४३ सञ्ज्ञायाम्।
४४ क्तेनाहोरात्रावयवाः।
४५ तत्र।
४६ क्षेपे।
४७ पात्रेसमितादयश्च।
४८ पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनव-केवलाः समानाधिकरणेन।
४९ दिक्सङ्ख्ये सञ्ज्ञायाम्।
५० तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च।
५१ सङ्ख्यापूर्वो द्विगुः।
५२ कुत्सितानि कुत्सनैः।
५३ पापाणके कुत्सितैः।
५४ उपमानानि सामान्यवचनैः।
५५ उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे।
५६ विशेषणं विशेष्येण बहुलम्।
५७ पूर्वापरप्रथमचरमजघन्य-समानमध्यमध्यमवीराश्च।
५८ श्रेण्यादयः कृतादिभिः।
५९ क्तेन नञ्विशिष्टेनानञ्।
६० सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः।
६१ वृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्यमानम्।
६२ कतरकतमौ जातिपरिप्रश्ने।
६३ किं क्षेपे।
६४ पोटायुवतिस्तोककतिपयगृष्टि-धेनुवशावेहद्बष्कयणीप्रवक्तृ-श्रोत्रियाध्यापकधूर्तैर्जातिः।
६५ प्रशंसावचनैश्च।
६६ युवा खलतिपलितवलिन-जरतीभिः।
६७ कृत्यतुल्याख्या अजात्या।
६८ वर्णो वर्णेन।
६९ कुमारः श्रमणादिभिः।
७० चतुष्पादो गर्भिण्या।
७१ मयूरव्यंसकादयश्च।

--०--

द्वितीयः पादः

१ पूर्वापराधरोत्तरमेक-देशिनैकाधिकरणे।
२ अर्धं नपुंसकम्।

३ द्वितीयतृतीयचतुर्थतुर्याण्यन्य-
तरस्याम्।
४ प्राप्तापन्ने च द्वितीयया।
५ कालाः परिमाणिना।
६ नञ्।
७ ईषदकृता।
८ षष्ठी।
९ याजकादिभिश्च।
१० न निर्धारणे।
११ पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्य-
समानाधिकरणेन।
१२ क्तेन च पूजायाम्।
१३ अधिकरणवाचिना च।
१४ कर्मणि च।
१५ तृजकाभ्यां कर्तरि।
१६ कर्तरि च।
१७ नित्यं क्रीडाजीविकयोः।
१८ कुगतिप्रादयः।
१९ उपपदमतिङ्।
२० अमैवाव्ययेन।
२१ तृतीयाप्रभृतीन्यन्यतरस्याम्।
२२ क्त्वा च।
२३ शेषो बहुव्रीहिः।
२४ अनेकमन्यपदार्थे।
२५ सङ्ख्याव्ययासन्नादूराधिक-
सङ्ख्याः सङ्ख्येये।
२६ दिङ्नामान्यन्तराले।
२७ तत्र तेनेदमिति सरूपे।
२८ तेन सहेति तुल्ययोगे।
२९ चार्थे द्वन्द्वः।
३० उपसर्जनं पूर्वम्।
३१ राजदन्तादिषु परम्।
३२ द्वन्द्वे घि।
३३ अजाद्यदन्तम्।
३४ अल्पाच्तरम्।
३५ सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ।
३६ निष्ठा।
३७ वाहिताग्न्यादिषु।
३८ कडाराः कर्मधारये।

--०--

तृतीयः पादः

१ अनभिहिते।
२ कर्मणि द्वितीया।
३ तृतीया च होश्छन्दसि।
४ अन्तरान्तरेणयुक्ते।
५ कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे।
६ अपवर्गे तृतीया।
७ सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये।
८ कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया।
९ यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं
तत्र सप्तमी।
१० पञ्चम्यपाङ्परिभिः।
११ प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्।

१२ गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि।
१३ चतुर्थी सम्प्रदाने।
१४ क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः।
१५ तुमर्थाच्च भाववचनात्।
१६ नमःस्वस्तिस्वाहास्वधालं-वषड्योगाच्च।
१७ मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाप्राणिषु।
१८ कर्तृकरणयोस्तृतीया।
१९ सहयुक्तेऽप्रधाने।
२० येनाङ्गविकारः।
२१ इत्थम्भूतलक्षणे।
२२ सञ्ज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि।
२३ हेतौ।
२४ अकर्तर्यृणे पञ्चमी।
२५ विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्।
२६ षष्ठी हेतुप्रयोगे।
२७ सर्वनाम्नस्तृतीया च।
२८ अपादाने पञ्चमी।
२९ अन्यारादितरर्तेदिक्छब्दाञ्चूत्तर-पदाजाहियुक्ते।
३० षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन।
३१ एनपा द्वितीया।
३२ पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्य-तरस्याम्।
३३ करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्र-कतिपयस्यासत्त्ववचनस्य।
३४ दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्य-तरस्याम्।
३५ दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च।
३६ सप्तम्यधिकरणे च।
३७ यस्य च भावेन भावलक्षणम्।
३८ षष्ठी चानादरे।
३९ स्वामीश्वराधिपतिदायाद-साक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च।
४० आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम्।
४१ यतश्च निर्धारणम्।
४२ पञ्चमी विभक्ते।
४३ साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः।
४४ प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च।
४५ नक्षत्रे च लुपि।
४६ प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाण-वचनमात्रे प्रथमा।
४७ सम्बोधने च।
४८ सामन्त्रितम्।
४९ एकवचनं सम्बुद्धिः।
५० षष्ठी शेषे।
५१ ज्ञोऽविदर्थस्य करणे।
५२ अधीगर्थदयेशां कर्मणि।
५३ कृञः प्रतियत्ने।

५४ रुजार्थानां भाववचनानाम-
ज्वरेः।
५५ आशिषि नाथः।
५६ जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां
हिंसायाम्।
५७ व्यवहृपणोः समर्थयोः।
५८ दिवस्तदर्थस्य।
५९ विभाषोपसर्गे।
६० द्वितीया ब्राह्मणे।
६१ प्रेष्यब्रुवोर्हविषो
देवतासम्प्रदाने।
६२ चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि।
६३ यजेश्च करणे।
६४ कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे।
६५ कर्तृकर्मणोः कृति।
६६ उभयप्राप्तौ कर्मणि।
६७ क्तस्य च वर्तमाने।
६८ अधिकरणवाचिनश्च।
६९ न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थ-
तृनाम्।
७० अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः।
७१ कृत्यानां कर्तरि वा।
७२ तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां
तृतीयान्यतरस्याम्।
७३ चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्र-
कुशलसुखार्थहितैः।

--०--

चतुर्थः पादः

१ द्विगुरेकवचनम्।
२ द्वन्द्वश्च प्राणितूर्य-
सेनाङ्गानाम्।
३ अनुवादे चरणानाम्।
४ अध्वर्युक्रतुरनपुंसकम्।
५ अध्ययनतोऽविप्रकृष्टा-
ख्यानाम्।
६ जातिरप्राणिनाम्।
७ विशिष्टलिङ्गो नदी
देशोऽग्रामाः।
८ क्षुद्रजन्तवः।
९ येषां च विरोधः शाश्वतिकः।
१० शूद्राणामनिरवसितानाम्।
११ गवाश्वप्रभृतीनि च।
१२ विभाषा वृक्षमृगतृणधान्य-
व्यञ्जनपशुशकुन्यश्ववडव-
पूर्वापराधरोत्तराणाम्।
१३ विप्रतिषिद्धं चानधिकरण-
वाचि।
१४ न दधिपयआदीनि।
१५ अधिकरणैतावत्त्वे च।
१६ विभाषा समीपे।
१७ स नपुंसकम्।
१८ अव्ययीभावश्च।
१९ तत्पुरुषोऽनञ्कर्मधारयः।
२० सञ्ज्ञायां कन्थोशीनरेषु।

२१ उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्यासायाम्।
२२ छाया बाहुल्ये।
२३ सभा राजामनुष्यपूर्वा।
२४ अशाला च।
२५ विभाषा सेनासुराच्छायाशालानिशानाम्।
२६ परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः।
२७ पूर्ववदश्ववडवौ।
२८ हेमन्तशिशिरावहोरात्रे चच्छन्दसि।
२९ रात्राह्नाहाः पुंसि।
३० अपथं नपुंसकम्।
३१ अर्धर्चाः पुंसि च।
३२ इदमोऽन्वादेशेऽशनुदात्तस् तृतीयादौ।
३३ एतदस्त्रतसोस्त्रतसौ चानुदात्तौ।
३४ द्वितीयाटौस्स्वेनः।
३५ आर्धधातुके।
३६ अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति।
३७ लुङ्सनोर्घस्लृ।
३८ घञपोश्च।
३९ बहुलं छन्दसि।
४० लिट्यन्यतरस्याम्।
४१ वेञो वयिः।
४२ हनो वध लिङि।
४३ लुङि च।
४४ आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम्।
४५ इणो गा लुङि।
४६ णौ गमिरबोधने।
४७ सनि च।
४८ इङश्च।
४९ गाङ् लिटि।
५० विभाषा लुङ्लृङोः।
५१ णौ च संश्चङोः।
५२ अस्तेर्भूः।
५३ ब्रुवो वचिः।
५४ चक्षिङः ख्याञ्।
५५ वा लिटि।
५६ अजेर्व्यघञपोः।
५७ वा यौ।
५८ ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः।
५९ पैलादिभ्यश्च।
६० इञः प्राचाम्।
६१ न तौल्वलिभ्यः।
६२ तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम्।
६३ यस्कादिभ्यो गोत्रे।
६४ यञञोश्च।
६५ अत्रिभृगुकुत्सवसिष्ठगोतमाङ्गिरोभ्यश्च।
६६ बह्वच इञः प्राच्यभरतेषु।

६७ न गोपवनादिभ्यः।
६८ तिककितवादिभ्यो द्वन्द्वे।
६९ उपकादिभ्योऽन्यतरस्याम-द्वन्द्वे।
७० आगस्त्यकौण्डिन्ययोरगस्ति-कुण्डिनच्।
७१ सुपो धातुप्रातिपदिकयोः।
७२ अदिप्रभृतिभ्यः शपः।
७३ बहुलं छन्दसि।
७४ यङोऽचि च।
७५ जुहोत्यादिभ्यः श्लुः।
७६ बहुलं छन्दसि।
७७ गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु।
७८ विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः।
७९ तनादिभ्यस्तथासोः।
८० मन्त्रे घसह्वरणशवृदहाद्वृच्कृ-गमिजनिभ्यो लेः।
८१ आमः।
८२ अव्ययादाप्सुपः।
८३ नाव्ययीभावादतोऽम्त्व-पञ्चम्याः।
८४ तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्।
८५ लुटः प्रथमस्य डारौरसः।

तृतीयोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ प्रत्ययः।
२ परश्च।
३ आद्युदात्तश्च।
४ अनुदात्तौ सुप्पितौ।
५ गुप्तिज्किद्भ्यः सन्।
६ मान्बधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य।
७ धातोः कर्मणः समान-कर्तृकादिच्छायां वा।
८ सुप आत्मनः क्यच्।
९ काम्यच्च।
१० उपमानादाचारे।
११ कर्तुः क्यङ् सलोपश्च।
१२ भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः।
१३ लोहितादिडाज्भ्यः क्यष्।
१४ कष्टाय क्रमणे।
१५ कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः।
१६ बाष्पोष्मभ्यामुद्वमने।
१७ शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे।
१८ सुखादिभ्यः कर्तृ वेदनायाम्।

१९ नमोवरिवश्चित्रङः क्यच्।
२० पुच्छभाण्डचीवराण्णिङ्।
२१ मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्र-हलकलकृततूस्तेभ्यो णिच्।
२२ धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्।
२३ नित्यं कौटिल्ये गतौ।
२४ लुपसदचरजपजभदहदशगॄभ्यो भावगर्हायाम्।
२५ सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोक-सेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्ण-चुरादिभ्यो णिच्।
२६ हेतुमति च।
२७ कण्ड्वादिभ्यो यक्।
२८ गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः।
२९ ऋतेरीयङ्।
३० कमेर्णिङ्।
३१ आयादय आर्धधातुके वा।
३२ सनाद्यन्ता धातवः।
३३ स्यतासी लृलुटोः।
३४ सिब्बहुलं लेटि।
३५ कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि।
३६ इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः।
३७ दयायासश्च।
३८ उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम्।
३९ भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च।
४० कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि।
४१ विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्य-तरस्याम्।
४२ अभ्युत्सादयांप्रजनयांचिकयां-रमयामकः पावयाङ्क्रियाद्-विदामक्रन्निति च्छन्दसि।
४३ च्लि लुङि।
४४ च्लेः सिच्।
४५ शल इगुपधादनिटः क्सः।
४६ श्लिष आलिङ्गने।
४७ न दृशः।
४८ णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ्।
४९ विभाषा धेट्श्व्योः।
५० गुपेश्छन्दसि।
५१ नोनयति-ध्वनयत्येलयत्यर्दयतिभ्यः।
५२ अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्।
५३ लिपिसिचिह्वश्च।
५४ आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम्।
५५ पुषादिद्युताद्यॢदितः परस्मैपदेषु।
५६ सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च।
५७ इरितो वा।
५८ जॄस्तम्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचु-ग्लुञ्चुश्विभ्यश्च।
५९ कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि।
६० चिण्ते पदः।

६१ दीपजनबुधपूरितायि-
प्यायिभ्योऽन्यतरस्याम्।
६२ अचः कर्मकर्तरि।
६३ दुहश्च।
६४ न रुधः।
६५ तपोऽनुतापे च।
६६ चिण्भावकर्मणोः।
६७ सार्वधातुके यक्।
६८ कर्तरि शप्।
६९ दिवादिभ्यः श्यन्।
७० वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमु-
त्रसित्रुटिलषः।
७१ यसोऽनुपसर्गात्।
७२ संयसश्च।
७३ स्वादिभ्यः श्नुः।
७४ श्रुवः शृ च।
७५ अक्षोऽन्यतरस्याम्।
७६ तनूकरणे तक्षः।
७७ तुदादिभ्यः शः।
७८ रुधादिभ्यः श्नम्।
७९ तनादिकृञ्भ्य उः।
८० धिन्विकृण्व्योर च।
८१ क्र्यादिभ्यः श्ना।
८२ स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भुस्कुम्भु-
स्कुञ्भ्यः श्नुश्च।
८३ हलः श्नः शानज्झौ।
८४ छन्दसि शायजपि।
८५ व्यत्ययो बहुलम्।
८६ लिङ्याशिष्यङ्।
८७ कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः।
८८ तपस्तपःकर्मकस्यैव।
८९ न दुहस्नुनमां यक्चिणौ।
९० कुषिरजोः प्राचां
श्यन्परस्मैपदं च।
९१ धातोः।
९२ तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्।
९३ कृदतिङ्।
९४ वासरूपोऽस्त्रियाम्।
९५ कृत्याः।
९६ तव्यत्तव्यानीयरः।
९७ अचो यत्।
९८ पोरदुपधात्।
९९ शकिसहोश्च।
१०० गदमदचरयमश्चानुपसर्गे।
१०१ अवद्यपण्यवर्या गर्ह्य-
पणितव्यानिरोधेषु।
१०२ वह्यं करणम्।
१०३ अर्यः स्वामिवैश्ययोः।
१०४ उपसर्या काल्या प्रजने।
१०५ अजर्यं सङ्गतम्।
१०६ वदः सुपि क्यप्च।
१०७ भुवो भावे।
१०८ हनस्त च।
१०९ एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्।

१११० ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः।
१११ ई च खनः।
११२ भृञोऽसञ्ज्ञायाम्।
११३ मृजेर्विभाषा।
११४ राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्यकुप्य-
कृष्टपच्याव्यथ्याः।
११५ भिद्योद्ध्यौ नदे।
११६ पुष्यसिद्ध्यौ नक्षत्रे।
११७ विपूयविनीयजित्या
मुञ्जकल्कहलिषु।
११८ प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः।
११९ पदास्वैरिबाह्यापक्ष्येषु च।
१२० विभाषा कृवृषोः।
१२१ युग्यं च पत्रे।
१२२ अमावस्यदन्यतरस्याम्।
१२३ छन्दसि निष्टर्क्यदेवहूय-
प्रणीयोन्नीयोच्छिष्यमर्यस्तर्या-
ध्वर्यखन्यखान्यदेवयज्या-
पृच्छ्यप्रतिषीव्यब्रह्मवाद्य-
भाव्यस्ताव्योपचाय्यपृडानि।
१२४ ऋहलोर्ण्यत्।
१२५ ओरावश्यके।
१२६ आसुयुवपिरपिलपित्रपिचमश्च।
१२७ आनाय्योऽनित्ये।
१२८ प्रणाय्योऽसम्मतौ।
१२९ पाय्यसान्नाय्यनिकाय्यधाय्या
मानहविर्निवाससामिधेनीषु।
१३० क्रतौ कुण्डपाय्यसञ्चाय्यौ।
१३१ अग्नौ परिचाय्योपचाय्य-
समूह्याः।
१३२ चित्याग्निचित्ये च।
१३३ ण्वुल्तृचौ।
१३४ नन्दिग्रहिपचादिभ्यो
ल्युणिन्यचः।
१३५ इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः।
१३६ आतश्चोपसर्गे।
१३७ पाघ्राध्माधेट्दृशः शः।
१३८ अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधारि-
पारिवेद्युदेजिचेतिसाति-
साहिभ्यश्च।
१३९ ददातिदधात्योर्विभाषा।
१४० ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः।
१४१ श्याद्व्यधास्रुसंस्रवतीणव-
सावहलिहश्लिषश्वसश्च।
१४२ दुन्योरनुपसर्गे।
१४३ विभाषा ग्रहः।
१४४ गेहे कः।
१४५ शिल्पिनि ष्वुन्।
१४६ गस्थकन्।
१४७ ण्युट् च।
१४८ हश्च व्रीहिकालयोः।
१४९ प्रुसृल्वः समभिहारे वुन्।
१५० आशिषि च।

--०--

द्वितीयः पादः

१ कर्मण्यण्।
२ ह्वावामश्च।
३ आतोऽनुपसर्गे कः।
४ सुपि स्थः।
५ तुन्दशोकयोः परिमृजापनुदोः।
६ प्रे दाज्ञः।
७ समि ख्यः।
८ गापोष्टक्।
९ हरतेरनुद्यमनेऽच्।
१० वयसि च।
११ आङि ताच्छील्ये।
१२ अर्हः।
१३ स्तम्बकर्णयो रमिजपोः।
१४ शमि धातोः सञ्ज्ञायाम्।
१५ अधिकरणे शेतेः।
१६ चरेष्टः।
१७ भिक्षासेनादायेषु च।
१८ पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः।
१९ पूर्वे कर्तरि।
२० कृञो हेतुताच्छील्यानु-
लोम्येषु।
२१ दिवाविभानिशाप्रभाभास्-
कारान्तानन्तादिबहुनान्दीकिं-
लिपिलिबिबलिभक्तिकर्तृचित्र-
क्षेत्रसङ्ख्याजङ्घाबाह्वहर्यत्-
तद्धनुररुष्षु।
२२ कर्मणि भृतौ।
२३ न शब्दश्लोककलहगाथावैर-
चाटुसूत्रमन्त्रपदेषु।
२४ स्तम्बशकृतोरिन्।
२५ हरतेर्दृतिनाथयोः पशौ।
२६ फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च।
२७ छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्।
२८ एजेः खश्।
२९ नासिकास्तनयोर्ध्माधेटोः।
३० नाडीमुष्ट्योश्च।
३१ उदि कूले रुजिवहोः।
३२ वहाभ्रे लिहः।
३३ परिमाणे पचः।
३४ मितनखे च।
३५ विध्वरुषोस्तुदः।
३६ असूर्यललाटयोर्दृशितपोः।
३७ उग्रम्पश्येरम्मदपाणिन्धमाश्च।
३८ प्रियवशे वदः खच्।
३९ द्विषत्परयोस्तापेः।
४० वाचि यमो व्रते।
४१ पूःसर्वयोर्दारिसहोः।
४२ सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः।
४३ मेघर्तिभयेषु कृञः।
४४ क्षेमप्रियमद्रेऽण्च।
४५ आशिते भुवः करण-
भावयोः।

४६ सञ्ज्ञायां भृतॄवृजिधारिसहि-
तपिदमः।
४७ गमश्च।
४८ अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वा-
नन्तेषु डः।
४९ आशिषि हनः।
५० अपे क्लेशतमसोः।
५१ कुमारशीर्षयोर्णिनिः।
५२ लक्षणे जायापत्योष्टक्।
५३ अमनुष्यकर्तृके च।
५४ शक्तौ हस्तिकपाटयोः।
५५ पाणिघताडघौ शिल्पिनि।
५६ आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्ध-
प्रियेषु च्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः
करणे ख्युन्।
५७ कर्तरि भुवः खिष्णुच्खुकञौ।
५८ स्पृशोऽनुदके क्विन्।
५९ ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चु-
युजिक्रुञ्चां च।
६० त्यदादिषु दृशोऽनालोचने
कञ्च।
६१ सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्-
छिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि
क्विप्।
६२ भजो ण्विः।
६३ छन्दसि सहः।
६४ वहश्च।

६५ कव्यपुरीषपुरीष्येषु ञ्युट्।
६६ हव्येऽनन्तःपादम्।
६७ जनसनखनक्रमगमो विट्।
६८ अदोऽनन्ने।
६९ क्रव्ये च।
७० दुहः कब्घश्च।
७१ मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो
ण्विन्।
७२ अवे यजः।
७३ विजुपे छन्दसि।
७४ आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च।
७५ अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते।
७६ क्विप्च।
७७ स्थः क च।
७८ सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये।
७९ कर्तर्युपमाने।
८० व्रते।
८१ बहुलमाभीक्ष्ण्ये।
८२ मनः।
८३ आत्ममाने खश्च।
८४ भूते।
८५ करणे यजः।
८६ कर्मणि हनः।
८७ ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप्।
८८ बहुलं छन्दसि।
८९ सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः।
९० सोमे सुञः।

९१ अग्नौ चेः।
९२ कर्मण्यग्न्याख्यायाम्।
९३ कर्मणीनि विक्रियः।
९४ दृशेः क्वनिप्।
९५ राजनि युधिकृञः।
९६ सहे च।
९७ सप्तम्यां जनेर्डः।
९८ पञ्चम्यामजातौ।
९९ उपसर्गे च सञ्ज्ञायाम्।
१०० अनौ कर्मणि।
१०१ अन्येष्वपि दृश्यते।
१०२ निष्ठा।
१०३ सुयजोङ्वनिप्।
१०४ जीर्यतेरतृन्।
१०५ छन्दसि लिट्।
१०६ लिटः कानज्वा।
१०७ क्वसुश्च।
१०८ भाषायां सदवसश्रुवः।
१०९ उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च।
११० लुङ्।
१११ अनद्यतने लङ्।
११२ अभिज्ञावचने ऌट्।
११३ न यदि।
११४ विभाषा साकाङ्क्षे।
११५ परोक्षे लिट्।
११६ हशश्वतोर्लङ् च।
११७ प्रश्ने चासन्नकाले।
११८ लट् स्मे।
११९ अपरोक्षे च।
१२० ननौ पृष्टप्रतिवचने।
१२१ नन्वोर्विभाषा।
१२२ पुरि लुङ् चास्मे।
१२३ वर्तमाने लट्।
१२४ लटः शतृशानचावप्रथमा-समानाधिकरणे।
१२५ सम्बोधने च।
१२६ लक्षणहेत्वोः क्रियायाः।
१२७ तौ सत्।
१२८ पूङ्यजोः शानन्।
१२९ ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्।
१३० इङ्धार्योः शत्रकृच्छ्रिणि।
१३१ द्विषोऽमित्रे।
१३२ सुञो यज्ञसंयोगे।
१३३ अर्हः प्रशंसायाम्।
१३४ आ क्वेस्तच्छीलतद्धर्म-तत्साधुकारिषु।
१३५ तृन्।
१३६ अलङ्कृञ्निराकृञ्प्रजनोत्-पचोत्पतोन्मदरुच्यपत्रप-वृतुवृधुसहचर इष्णुच्।
१३७ णेश्छन्दसि।
१३८ भुवश्च।
१३९ ग्लाजिस्थश्च क्स्नुः।

१४० त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः।
१४१ शमित्यष्टाभ्यो घिनुण्।
१४२ सम्पृचानुरुधाङ्यमाङ्यस-परिसृसंसृजपरिदेविसञ्ज्वर-परिक्षिपपरिरटपरिवदपरिदह-परिमुहदुषद्विषद्रुहदुहयुजा-क्रीडविविचत्यजरजभजाति-चरापचरामुषाभ्याहनश्च।
१४३ वौ कषलसकत्थस्रम्भः।
१४४ अपे च लषः।
१४५ प्रे लपसृद्रुमथवदवसः।
१४६ निन्दहिंसक्लिशखादविनाश-परिक्षिपपरिरटपरिवादि-व्याभाषासूयो वुञ्।
१४७ देविक्रुशोश्चोपसर्गे।
१४८ चलनशब्दार्थादकर्मकाद् युच्।
१४९ अनुदात्तेतश्च हलादेः।
१५० जुचङ्क्रम्यदन्द्रम्यसृगृधि-ज्वलशुचलषपतपदः।
१५१ क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च।
१५२ न यः।
१५३ सूददीपदीक्षश्च।
१५४ लषपतपदस्थाभूवृषहनकम-गमशृभ्य उकञ्।
१५५ जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृङः षाकन्।
१५६ प्रजोरिनिः।
१५७ जिदृक्षिविश्रीण्वमाव्यथाभ्यम-परिभूप्रसूभ्यश्च।
१५८ स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्रा-श्रद्धाभ्य आलुच्।
१५९ दाधेट्सिशदसदो रुः।
१६० सृघस्यदः क्मरच्।
१६१ भञ्जभासमिदो घुरच्।
१६२ विदिभिदिच्छिदेः कुरच्।
१६३ इण्नशजिसर्तिभ्यः क्वरप्।
१६४ गत्वरश्च।
१६५ जागरूकः।
१६६ यजजपदशां यङः।
१६७ नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंस-दीपो रः।
१६८ सनाशंसभिक्ष उः।
१६९ विन्दुरिच्छुः।
१७० क्याच्छन्दसि।
१७१ आदृगमहनजनः किकिनौ लिट् च।
१७२ स्वपितृषोर्नजिङ्।
१७३ शॄवन्द्योरारुः।
१७४ भियः क्रुक्लुकनौ।
१७५ स्थेशभासपिसकसो वरच्।
१७६ यश्च यङः।
१७७ भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपॄजु-ग्रावस्तुवः क्विप्।

१७८ अन्येभ्योऽपि दृश्यते।
१७९ भुवः सञ्ज्ञान्तरयोः।
१८० विप्रसम्भ्वो ड्वसञ्ज्ञायाम्।
१८१ धः कर्मणि ष्ट्रन्।
१८२ दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिच-मिहपतदशनहः करणे।
१८३ हलसूकरयोः पुवः।
१८४ अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्रः।
१८५ पुवः सञ्ज्ञायाम्।
१८६ कर्तरि चर्षिदेवतयोः।
१८७ जीतः क्तः।
१८८ मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च।

--०--

तृतीयः पादः

१ उणादयो बहुलम्।
२ भूतेऽपि दृश्यन्ते।
३ भविष्यति गम्यादयः।
४ यावत्पुरानिपातयोर्लट्।
५ विभाषा कदाकर्ह्योः।
६ किंवृत्ते लिप्सायाम्।
७ लिप्स्यमानसिद्धौ च।
८ लोडर्थलक्षणे च।
९ लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके।
१० तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्।
११ भाववचनाश्च।
१२ अण्कर्मणि च।
१३ लृट् शेषे च।
१४ लृटः सद् वा।
१५ अनद्यतने लुट्।
१६ पदरुजविशस्पृशो घञ्।
१७ सृ स्थिरे।
१८ भावे।
१९ अकर्तरि च कारके सञ्ज्ञायाम्।
२० परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः।
२१ इङश्च।
२२ उपसर्गे रुवः।
२३ समि युद्रुदुवः।
२४ श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे।
२५ वौ क्षुश्रुवः।
२६ अवोदोर्नियः।
२७ प्रे द्रुस्तुस्रुवः।
२८ निरभ्योः पूल्वोः।
२९ उन्न्योर्ग्रः।
३० कॄ धान्ये।
३१ यज्ञे समि स्तुवः।
३२ प्रे स्त्रोऽयज्ञे।
३३ प्रथने वावशब्दे।
३४ छन्दोनाम्नि च।
३५ उदि ग्रहः।
३६ समि मुष्टौ।
३७ परिन्योर्नीणोर्द्यूताभ्रेषयोः।
३८ परावनुपात्यय इणः।
३९ व्युपयोः शेतेः पर्याये।

४० हस्तादाने चेरस्तेये।
४१ निवासचितिशरीरोप-
समाधानेष्वादेश्च कः।
४२ सङ्घे चानौत्तराधर्ये।
४३ कर्मव्यतिहारे णच्स्त्रियाम्।
४४ अभिविधौ भाव इनुण्।
४५ आक्रोशेऽवन्योर्ग्रहः।
४६ प्रे लिप्सायाम्।
४७ परौ यज्ञे।
४८ नौ वृ धान्ये।
४९ उदि श्रयतियौतिपूद्रुवः।
५० विभाषाङि रुप्लुवोः।
५१ अवे ग्रहो वर्षप्रतिबन्धे।
५२ प्रे वणिजाम्।
५३ रश्मौ च।
५४ वृणोतेराच्छादने।
५५ परौ भुवोऽवज्ञाने।
५६ एरच्।
५७ ॠदोरप्।
५८ ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च।
५९ उपसर्गेऽदः।
६० नौ ण च।
६१ व्यधजपोरनुपसर्गे।
६२ स्वनहसोर्वा।
६३ यमः समुपनिविषु च।
६४ नौ गदनदपठस्वनः।
६५ क्वणो वीणायां च।
६६ नित्यं पणः परिमाणे।
६७ मदोऽनुपसर्गे।
६८ प्रमदसम्मदौ हर्षे।
६९ समुदोरजः पशुषु।
७० अक्षेषु ग्लहः।
७१ प्रजने सर्तेः।
७२ ह्वः सम्प्रसारणं च
न्यभ्युपविषु।
७३ आङि युद्धे।
७४ निपानमाहावः।
७५ भावेऽनुपसर्गस्य।
७६ हनश्च वधः।
७७ मूर्तौ घनः।
७८ अन्तर्घनो देशे।
७९ अगारैकदेशे प्रघणः प्रघाणश्च।
८० उद्घनोऽत्याधानम्।
८१ अपघनोऽङ्गम्।
८२ करणेऽयोविद्रुषु।
८३ स्तम्बे क च।
८४ परौ घः।
८५ उपघ्न आश्रये।
८६ सङ्घोद्घौ गणप्रशंसयोः।
८७ निघो निमितम्।
८८ ड्वितः क्त्रिः।
८९ ट्वितोऽथुच्।
९० यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो
नङ्।

९१ स्वपो नन्।
९२ उपसर्गे घोः किः।
९३ कर्मण्यधिकरणे च।
९४ स्त्रियां क्तिन्।
९५ स्थागापापचो भावे।
९६ मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवीरा उदात्तः।
९७ ऊतियूतिजूतिसातिहेति-कीर्तयश्च।
९८ व्रजयजोर्भावे क्यप्।
९९ सञ्ज्ञायां समजनिषदनिपत-मनविदषुञ्शीङ्भृञिणः।
१०० कृञः श च।
१०१ इच्छा।
१०२ अ प्रत्ययात्।
१०३ गुरोश्च हलः।
१०४ षिद्भिदादिभ्योऽङ्।
१०५ चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च।
१०६ आतश्चोपसर्गे।
१०७ ण्यासश्रन्थो युच्।
१०८ रोगाख्यायां ण्वुल्बहुलम्।
१०९ सञ्ज्ञायाम्।
११० विभाषाख्यान-परिप्रश्नयोरिञ्च।
१११ पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु ण्वुच्।
११२ आक्रोशे नञ्यनिः।
११३ कृत्यल्युटो बहुलम्।
११४ नपुंसके भावे क्तः।
११५ ल्युट् च।
११६ कर्मणि च येन संस्पर्शात् कर्तुः शरीरसुखम्।
११७ करणाधिकरणयोश्च।
११८ पुंसि सञ्ज्ञायां घः प्रायेण।
११९ गोचरसञ्चरवहव्रजव्यजा-पणनिगमाश्च।
१२० अवे तॄस्त्रोर्घञ्।
१२१ हलश्च।
१२२ अध्यायन्यायोद्यावसंहाराश्च।
१२३ उदङ्कोऽनुदके।
१२४ जालमानायः।
१२५ खनो घ च।
१२६ ईषद्दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल्।
१२७ कर्तृकर्मणोश्च भूकृञोः।
१२८ आतो युच्।
१२९ छन्दसि गत्यर्थेभ्यः।
१३० अन्येभ्योऽपि दृश्यते।
१३१ वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद् वा।
१३२ आशंसायां भूतवच्च।
१३३ क्षिप्रवचने लृट्।
१३४ आशंसावचने लिङ्।
१३५ नानद्यतनवत्क्रियाप्रबन्ध-सामीप्ययोः।

१३६ भविष्यति मर्यादावचनेऽ-
वरस्मिन्।
१३७ कालविभागे चानहो-
रात्राणाम्।
१३८ परस्मिन्विभाषा।
१३९ लिङ्निमित्ते लृङ्
क्रियातिपत्तौ।
१४० भूते च।
१४१ वोताप्योः।
१४२ गर्हायां लडपिजात्वोः।
१४३ विभाषा कथमि लिङ् च।
१४४ किंवृत्ते लिङ्लृटौ।
१४५ अनवक्लृप्त्यमर्षयोरकिं-
वृत्तेऽपि।
१४६ किंकिलास्त्यर्थेषु लृट्।
१४७ जातुयदोर्लिङ्।
१४८ यच्चयत्रयोः।
१४९ गर्हायां च।
१५० चित्रीकरणे च।
१५१ शेषे लृडयदौ।
१५२ उताप्योः समर्थयोर्लिङ्।
१५३ कामप्रवेदनेऽकच्चिति।
१५४ सम्भावनेऽलमिति
चेत्सिद्धाप्रयोगे।
१५५ विभाषा धातौ सम्भावन-
वचनेऽयदि।
१५६ हेतुहेतुमतोर्लिङ्।
१५७ इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ।
१५८ समानकर्तृकेषु तुमुन्।
१५९ लिङ् च।
१६० इच्छार्थेभ्यो विभाषा
वर्तमाने।
१६१ विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्ट-
सम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्।
१६२ लोट् च।
१६३ प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु कृत्याश्च।
१६४ लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके।
१६५ स्मे लोट्।
१६६ अधीष्टे च।
१६७ कालसमयवेलासु तुमुन्।
१६८ लिङ् यदि।
१६९ अर्हे कृत्यतृचश्च।
१७० आवश्यकाधमर्ण्ययोर्णिनिः।
१७१ कृत्याश्च।
१७२ शकि लिङ् च।
१७३ आशिषि लिङ्लोटौ।
१७४ क्तिच्क्तौ च सञ्ज्ञायाम्।
१७५ माङि लुङ्।
१७६ स्मोत्तरे लङ् च।

--०--

चतुर्थः पादः

१ धातुसम्बन्धे प्रत्ययाः।
२ क्रियासमभिहारे लोट् लोटो
हिस्वौ वा च तध्वमोः।
३ समुच्चयेऽन्यतरस्याम्।
४ यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्वस्मिन्।

५ समुच्चये सामान्यवचनस्य।
६ छन्दसि लुङ्लङ्लिटः।
७ लिङर्थे लेट्।
८ उपसंवादाशङ्कयोश्च।
९ तुमर्थे सेसेनसेऽसेन्क्से-
कसेनध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्-
शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः।
१० प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै।
११ दृशे विख्ये च।
१२ शकि णमुल्कमुलौ।
१३ ईश्वरे तोसुन्कसुनौ।
१४ कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वनः।
१५ अवचक्षे च।
१६ भावलक्षणे स्थेण्कृञ्वदिचरि-
हुतमिजनिभ्यस्तोसुन्।
१७ सृपितृदोः कसुन्।
१८ अलङ्खल्वोः प्रतिषेधयोः
प्राचां क्त्वा।
१९ उदीचां माङो व्यतीहारे।
२० परावरयोगे च।
२१ समानकर्तृकयोः पूर्वकाले।
२२ आभीक्ष्ण्ये णमुल्च।
२३ न यद्यनाकाङ्क्षे।
२४ विभाषाग्रेप्रथमपूर्वेषु।
२५ कर्मण्याक्रोशे कृञः खमुञ्।
२६ स्वादुमि णमुल्।
२७ अन्यथैवङ्कथमित्थंसु
सिद्धाप्रयोगश्चेत्।
२८ यथातथयोरसूयाप्रतिवचने।
२९ कर्मणि दृशिविदोः साकल्ये।
३० यावति विन्दजीवोः।
३१ चर्मोदरयोः पूरेः।
३२ वर्षप्रमाण ऊलोपश्चास्यान्य-
तरस्याम्।
३३ चेले क्नोपेः।
३४ निमूलसमूलयोः कषः।
३५ शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः।
३६ समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः।
३७ करणे हनः।
३८ स्नेहने पिषः।
३९ हस्ते वर्तिग्रहोः।
४० स्वे पुषः।
४१ अधिकरणे बन्धः।
४२ सञ्ज्ञायाम्।
४३ कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहोः।
४४ ऊर्ध्वे शुषिपूरोः।
४५ उपमाने कर्मणि च।
४६ कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः।
४७ उपदंशस्तृतीयायाम्।
४८ हिंसार्थानां च समान-
कर्मकाणाम्।
४९ सप्तम्यां चोपपीडरुधकर्षः।
५० समासत्तौ।

५१ प्रमाणे च।
५२ अपादाने परीप्सायाम्।
५३ द्वितीयायां च।
५४ स्वाङ्गेऽध्रुवे।
५५ परिक्लिश्यमाने च।
५६ विशिपतिपदिस्कन्दां व्याप्यमाना-सेव्यमानयोः।
५७ अस्यतितृषोः क्रियान्तरे कालेषु।
५८ नाम्न्यादिशिग्रहोः।
५९ अव्ययेऽयथाभिप्रेताख्याने कृञः क्त्वाणमुलौ।
६० तिर्यच्यपवर्गे।
६१ स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः।
६२ नाधार्थप्रत्यये च्व्यर्थे।
६३ तूष्णीमि भुवः।
६४ अन्वच्यानुलोम्ये।
६५ शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रम-सहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन्।
६६ पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु।
६७ कर्तरि कृत्।
६८ भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीय-जन्याप्लाव्यापात्या वा।
६९ लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः।
७० तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः।
७१ आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च।
७२ गत्यर्थाकर्मकश्लिषशीङ्स्थास-वसजनरुहजीर्यतिभ्यश्च।
७३ दाशगोघ्नौ सम्प्रदाने।
७४ भीमादयोऽपादाने।
७५ ताभ्यामन्यत्रोणादयः।
७६ क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगति-प्रत्यवसानार्थेभ्यः।
७७ लस्य।
७८ तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्-ताताञ्झथासाथान्ध्वमिड्वहि-महिङ्।
७९ टित आत्मनेपदानां टेरे।
८० थासः से।
८१ लिटस्तझयोरेशिरेच्।
८२ परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुस-णल्वमाः।
८३ विदो लटो वा।
८४ ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः।
८५ लोटो लङ्वत्।
८६ एरुः।
८७ सेर्ह्यपिच्च।
८८ वा छन्दसि।
८९ मेर्निः।
९० आमेतः।
९१ सवाभ्यां वामौ।
९२ आडुत्तमस्य पिच्च।

९३ एत ऐ।
९४ लेटोऽडाटौ।
९५ आत ऐ।
९६ वैतोऽन्यत्र।
९७ इतश्च लोपः परस्मैपदेषु।
९८ स उत्तमस्य।
९९ नित्यं ङितः।
१०० इतश्च।
१०१ तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः।
१०२ लिङः सीयुट्।
१०३ यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च।
१०४ किदाशिषि।
१०५ झस्य रन्।
१०६ इटोऽत्।
१०७ सुट् तिथोः।
१०८ झेर्जुस्।
१०९ सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च।
११० आतः।
१११ लङः शाकटायनस्यैव।
११२ द्विषश्च।
११३ तिङ्शित्सार्वधातुकम्।
११४ आर्धधातुकं शेषः।
११५ लिट् च।
११६ लिङाशिषि।
११७ छन्दस्युभयथा।

चतुर्थोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ ङ्याप्प्रातिपदिकात्।
२ स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाङ्ङ्योस्सुप्।
३ स्त्रियाम्।
४ अजाद्यतष्टाप्।
५ ऋन्नेभ्यो ङीप्।
६ उगितश्च।
७ वनो र च।
८ पादोऽन्यतरस्याम्।
९ टाबृचि।
१० न षट्स्वस्रादिभ्यः।
११ मनः।
१२ अनो बहुव्रीहेः।
१३ डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्।
१४ अनुपसर्जनात्।
१५ टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः।
१६ यञश्च।

१७ प्राचां ष्फस्तद्धितः।
१८ सर्वत्र लोहितादिकतन्तेभ्यः।
१९ कौरव्यमाण्डूकाभ्यां च।
२० वयसि प्रथमे।
२१ द्विगोः।
२२ अपरिमाणबिस्ताचितकम्बल्येभ्यो न तद्धितलुकि।
२३ काण्डान्तात्क्षेत्रे।
२४ पुरुषात्प्रमाणेऽन्यतरस्याम्।
२५ बहुव्रीहेरूधसो ङीष्।
२६ सङ्ख्याव्ययादेर्ङीप्।
२७ दामहायनान्ताच्च।
२८ अन उपधालोपिनोऽन्यतरस्याम्।
२९ नित्यं सञ्ज्ञाछन्दसोः।
३० केवलमामकभागधेयपापापर-समानार्यकृतसुमङ्गलभेषजाच्च।
३१ रात्रेश्चाजसौ।
३२ अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक्।
३३ पत्युर्नो यज्ञसंयोगे।
३४ विभाषा सपूर्वस्य।
३५ नित्यं सपत्न्यादिषु।
३६ पूतक्रतोरै च।
३७ वृषाकप्यग्निकुसित-कुसीदानामुदात्तः।
३८ मनोरौ वा।
३९ वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः।
४० अन्यतो ङीष्।
४१ षिद्गौरादिभ्यश्च।
४२ जानपदकुण्डगोणस्थलभाजनाग-कालनीलकुशकामुककबराद्-वृत्त्यमत्रावपनाकृत्रिमाश्राणा-स्थौल्यवर्णानाच्छादनायो-विकारमैथुनेच्छाकेशवेशेषु।
४३ शोणात्प्राचाम्।
४४ वोतो गुणवचनात्।
४५ बह्वादिभ्यश्च।
४६ नित्यं छन्दसि।
४७ भुवश्च।
४८ पुंयोगादाख्यायाम्।
४९ इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृड-हिमारण्ययवयवनमातुला-चार्याणामानुक्।
५० क्रीतात्करणपूर्वात्।
५१ क्तादल्पाख्यायाम्।
५२ बहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात्।
५३ अस्वाङ्गपूर्वपदाद् वा।
५४ स्वाङ्गाच्चोपसर्जनाद-संयोगोपधात्।
५५ नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्ण-शृङ्गाच्च।
५६ न क्रोडादिबह्वचः।
५७ सहनञ्विद्यमानपूर्वाच्च।
५८ नखमुखात्सञ्ज्ञायाम्।
५९ दीर्घजिह्वी चच्छन्दसि।

६० दिक्पूर्वपदान्ङीप्।
६१ वाहः।
६२ सख्यशिश्वीति भाषायाम्।
६३ जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्।
६४ पाककर्णपर्णपुष्पफलमूल-
वालोत्तरपदाच्च।
६५ इतो मनुष्यजातेः।
६६ ऊङुतः।
६७ बाह्वन्तात्सञ्ज्ञायाम्।
६८ पङ्गोश्च।
६९ ऊरूत्तरपदादौपम्ये।
७० संहितशफलक्षणवामादेश्च।
७१ कद्रुकमण्डल्वोश्छन्दसि।
७२ सञ्ज्ञायाम्।
७३ शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्।
७४ यङश्चाप्।
७५ आवट्याच्च।
७६ तद्धिताः।
७७ यूनस्तिः।
७८ अणिञोरनार्षयोर्गुरूपोत्तमयोः
ष्यङ् गोत्रे।
७९ गोत्रावयवात्।
८० क्रौड्यादिभ्यश्च।
८१ दैवयज्ञिशौचिवृक्षिसात्यमुग्रि-
काण्ठेविद्धिभ्योऽन्यतरस्याम्।
८२ समर्थानां प्रथमाद् वा।
८३ प्राग्दीव्यतोऽण्।
८४ अश्वपत्यादिभ्यश्च।
८५ दित्यदित्यादित्यपत्युत्तर-
पदाण्ण्यः।
८६ उत्सादिभ्योऽञ्।
८७ स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ
भवनात्।
८८ द्विगोर्लुगनपत्ये।
८९ गोत्रेऽलुगचि।
९० यूनि लुक्।
९१ फक्फिञोरन्यतरस्याम्।
९२ तस्यापत्यम्।
९३ एको गोत्रे।
९४ गोत्राद् यून्यस्त्रियाम्।
९५ अत इञ्।
९६ बाह्वादिभ्यश्च।
९७ सुधातुरकङ् च।
९८ गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्च्फञ्।
९९ नडादिभ्यः फक्।
१०० हरितादिभ्योऽञः।
१०१ यञिञोश्च।
१०२ शरद्वच्छुनकदर्भाद्
भृगुवत्साग्रायणेषु।
१०३ द्रोणपर्वतजीवन्तादन्य-
तरस्याम्।
१०४ अनृष्यानन्तर्ये
बिदादिभ्योऽञ्।
१०५ गर्गादिभ्यो यञ्।
१०६ मधुबभ्र्वोर्ब्राह्मणकौशिकयोः।
१०७ कपिबोधादाङ्गिरसे।

१०८ वतण्डाच्च।
१०९ लुक्स्त्रियाम्।
११० अश्वादिभ्यः फञ्।
१११ भर्गात्त्रैगर्ते।
११२ शिवादिभ्योऽण्।
११३ अवृद्धाभ्यो नदीमानुषीभ्यस्तन्नामिकाभ्यः।
११४ ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च।
११५ मातुरुत्सङ्ख्यासम्भद्रपूर्वायाः।
११६ कन्यायाः कनीन च।
११७ विकर्णशुङ्गच्छगलाद्वत्सभरद्वाजात्रिषु।
११८ पीलाया वा।
११९ ढक्च मण्डूकात्।
१२० स्त्रीभ्यो ढक्।
१२१ द्व्यचः।
१२२ इतश्चानिञः।
१२३ शुभ्रादिभ्यश्च।
१२४ विकर्णकुषीतकात्काश्यपे।
१२५ भ्रुवो वुक्च।
१२६ कल्याण्यादीनामिनङ्।
१२७ कुलटाया वा।
१२८ चटकाया ऐरक्।
१२९ गोधाया ढ्रक्।
१३० आरगुदीचाम्।
१३१ क्षुद्राभ्यो वा।
१३२ पितृष्वसुश्छण्।
१३३ ढकि लोपः।
१३४ मातृष्वसुश्च।
१३५ चतुष्पाद्भ्यो ढञ्।
१३६ गृष्ट्यादिभ्यश्च।
१३७ राजश्वशुराद् यत्।
१३८ क्षत्राद् घः।
१३९ कुलात्खः।
१४० अपूर्वपदादन्यतरस्यां यड्ढकञौ।
१४१ महाकुलादञ्खञौ।
१४२ दुष्कुलाड् ढक्।
१४३ स्वसुश्छः।
१४४ भ्रातुर्व्यच्च।
१४५ व्यन्सपत्ने।
१४६ रेवत्यादिभ्यष्ठक्।
१४७ गोत्रस्त्रियाः कुत्सने ण च।
१४८ वृद्धाट् ठक्सौवीरेषु बहुलम्।
१४९ फेश्छ च।
१५० फाण्टाहृतिमिमताभ्यां णफिञौ।
१५१ कुर्वादिभ्यो ण्यः।
१५२ सेनान्तलक्षणकारिभ्यश्च।
१५३ उदीचामिञ्।
१५४ तिकादिभ्यः फिञ्।
१५५ कौसल्यकार्मार्याभ्यां च।
१५६ अणो द्व्यचः।
१५७ उदीचां वृद्धादगोत्रात्।

१५८ वाकिनादीनां कुक्च।
१५९ पुत्रान्तादन्यतरस्याम्।
१६० प्राचामवृद्धात्फिन्बहुलम्।
१६१ मनोर्जातावञ्यतौ षुक्च।
१६२ अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम्।
१६३ जीवति तु वंश्ये युवा।
१६४ भ्रातरि च ज्यायसि।
१६५ वान्यस्मिन्सपिण्डे स्थविरतरे जीवति।
१६६ जनपदशब्दात्क्षत्रियादञ्।
१६७ साल्वेयगान्धारिभ्यां च।
१६८ द्वयञ्मगधकलिङ्गसूरमसादण्।
१६९ वृद्धेत्कोसलाजादाञ्ञ्यङ्।
१७० कुरुनादिभ्यो ण्यः।
१७१ साल्वावयवप्रत्यग्रथकलकूटाश्मकादिञ्।
१७२ ते तद्राजाः।
१७३ कम्बोजाल्लुक्।
१७४ स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च।
१७५ अतश्च।
१७६ न प्राच्यभर्गादियौधेयादिभ्यः।

--०--

द्वितीयः पादः

१ तेन रक्तं रागात्।
२ लाक्षारोचनाट् ठक्।
३ नक्षत्रेण युक्तः कालः।
४ लुबविशेषे।
५ सञ्ज्ञायां श्रवणाश्वत्थाभ्याम्।
६ द्वन्द्वाच्छः।
७ दृष्टं साम।
८ वामदेवाड् ड्यड्ड्यौ।
९ परिवृतो रथः।
१० पाण्डुकम्बलादिनिः।
११ द्वैपवैयाघ्रादञ्।
१२ कौमारापूर्ववचने।
१३ तत्रोद्धृतममत्रेभ्यः।
१४ स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते।
१५ संस्कृतं भक्षाः।
१६ शूलोखाद् यत्।
१७ दध्नष्ठक्।
१८ उदश्वितोऽन्यतरस्याम्।
१९ क्षीराड् ढञ्।
२० सास्मिन्पौर्णमासीति।
२१ आग्रहायण्यश्वत्थाट् ठक्।
२२ विभाषा फाल्गुनीश्रवणाकार्त्तिकीचैत्रीभ्यः।
२३ सास्य देवता।
२४ कस्येत्।
२५ शुक्राद् घन्।
२६ अपोनप्त्रपान्नप्तृभ्यां घः।

२७ छ च।
२८ महेन्द्राद् घाणौ च।
२९ सोमाट् ट्यण्।
३० वाय्वृतुपित्रुषसो यत्।
३१ द्यावापृथिवीशुनासीर-
मरुत्वदग्नीषोमवास्तोष्-
पतिगृहमेधाच्छ च।
३२ अग्नेर्ढक्।
३३ कालेभ्यो भववत्।
३४ महाराजप्रोष्ठपदाट् ठञ्।
३५ पितृव्यमातुलमातामह-
पितामहाः।
३६ तस्य समूहः।
३७ भिक्षादिभ्योऽण्।
३८ गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजराजन्यराज-
पुत्रवत्समनुष्याजाद् वुञ्।
३९ केदाराद् यञ्च।
४० ठञ्कवचिनश्च।
४१ ब्राह्मणमाणववाडवाद् यन्।
४२ ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्।
४३ अनुदात्तादेरञ्।
४४ खण्डिकादिभ्यश्च।
४५ चरणेभ्यो धर्मवत्।
४६ अचित्तहस्तिधेनोष्ठक्।
४७ केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्य-
तरस्याम्।
४८ पाशादिभ्यो यः।
४९ खलगोरथात्।
५० इनित्रकट्यचश्च।
५१ विषयो देशे।
५२ राजन्यादिभ्यो वुञ्।
५३ भौरिक्याद्यैषुकार्यादिभ्यो
विधल्भक्तलौ।
५४ सोऽस्यादिरितिच्छन्दसः
प्रगाथेषु।
५५ सङ्ग्रामे प्रयोजनयोद्धृभ्यः।
५६ तदस्यां प्रहरणमिति
क्रीडायां णः।
५७ घञः सास्यां क्रियेति ञः।
५८ तदधीते तद् वेद।
५९ क्रतूक्थादिसूत्रान्ताट् ठक्।
६० क्रमादिभ्यो वुन्।
६१ अनुब्राह्मणादिनिः।
६२ वसन्तादिभ्यष्ठक्।
६३ प्रोक्ताल्लुक्।
६४ सूत्राच्च कोपधात्।
६५ छन्दोब्राह्मणानि च
तद्विषयाणि।
६६ तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि।
६७ तेन निर्वृत्तम्।
६८ तस्य निवासः।
६९ अदूरभवश्च।
७० ओरञ्।
७१ मतोश्च बह्वजङ्गात्।

७२ बह्वचः कूपेषु।
७३ उदक्च विपाशः।
७४ सङ्कलादिभ्यश्च।
७५ स्त्रीषु सौवीरसाल्वप्राक्षु।
७६ सुवास्त्वादिभ्योऽण्।
७७ रोणी।
७८ कोपधाच्च।
७९ वुञ्छण्कठजिलसेनिरढञ्ण्यय-फक्फिञिञ्ञ्यकक्ठकोऽरीहण-कृशाश्वर्श्यकुमुदकाशतृण-प्रेक्षाश्मसखिसङ्काशबलपक्ष-कर्णसुतङ्गमप्रगदिन्वराह-कुमुदादिभ्यः।
८० जनपदे लुप्।
८१ वरणादिभ्यश्च।
८२ शर्कराया वा।
८३ ठक्छौ च।
८४ नद्यां मतुप्।
८५ मध्वादिभ्यश्च।
८६ कुमुदनडवेतसेभ्यो ड्मतुप्।
८७ नडशादाड् ड्वलच्।
८८ शिखाया वलच्।
८९ उत्करादिभ्यश्छः।
९० नडादीनां कुक्च।
९१ शेषे।
९२ राष्ट्रावारपाराद् घखौ।
९३ ग्रामाद् यखञौ।
९४ कत्र्यादिभ्यो ढकञ्।
९५ कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः श्वास्यलङ्कारेषु।
९६ नद्यादिभ्यो ढक्।
९७ दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक्।
९८ कापिश्याः ष्फक्।
९९ रङ्कोरमनुष्येऽण्च।
१०० द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत्।
१०१ कन्थायाष्ठक्।
१०२ वर्णौ वुक्।
१०३ अव्ययात्त्यप्।
१०४ ऐषमोह्यःश्वसोऽन्यतरस्याम्।
१०५ तीररूप्योत्तरपदादञ्ञौ।
१०६ दिक्पूर्वपदादसञ्ज्ञायां ञः।
१०७ मद्रेभ्योऽञ्।
१०८ उदीच्यग्रामाच्च बह्वचोऽन्तोदात्तात्।
१०९ प्रस्थोत्तरपदपलद्यादिकोप-धादण्।
११० कण्वादिभ्यो गोत्रे।
१११ इञश्च।
११२ न द्वयचः प्राच्यभरतेषु।
११३ वृद्धाच्छः।
११४ भवतष्ठक्छसौ।
११५ काश्यादिभ्यष्ठञ्ञिठौ।
११६ वाहीकग्रामेभ्यश्च।
११७ विभाषोशीनरेषु।

११८ ओर्देशे ठञ्।
११९ वृद्धात्प्राचाम्।
१२० धन्वयोपधाद् वुञ्।
१२१ प्रस्थपुरवहान्ताच्च।
१२२ रोपधेतोः प्राचाम्।
१२३ जनपदतदवध्योश्च।
१२४ अवृद्धादपि बहुवचनविषयात्।
१२५ कच्छाग्निवक्त्रगर्तोत्तर-पदात्।
१२६ धूमादिभ्यश्च।
१२७ नगरात्कुत्सनप्रावीण्ययोः।
१२८ अरण्यान्मनुष्ये।
१२९ विभाषा कुरुयुगन्धराभ्याम्।
१३० मद्रवृज्योः कन्।
१३१ कोपधादण्।
१३२ कच्छादिभ्यश्च।
१३३ मनुष्यतत्स्थयोर्वुञ्।
१३४ अपदातौ साल्वात्।
१३५ गोयवाग्वोश्च।
१३६ गर्तोत्तरपदाच्छः।
१३७ गहादिभ्यश्च।
१३८ प्राचां कटादेः।
१३९ राज्ञः क च।
१४० वृद्धादकेकान्तखोपधात्।
१४१ कन्थापलदनगरग्रामह्रदोत्तर-पदात्।
१४२ पर्वताच्च।
१४३ विभाषामनुष्ये।
१४४ कृकणपर्णाद् भारद्वाजे।

--०--

तृतीयः पादः

१ युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च।
२ तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ।
३ तवकममकावेकवचने।
४ अर्धाद् यत्।
५ परावराधमोत्तमपूर्वाच्च।
६ दिक्पूर्वपदाट् ठञ्च।
७ ग्रामजनपदैकदेशादञ्ठञौ।
८ मध्यान्मः।
९ अ साम्प्रतिके।
१० द्वीपादनुसमुद्रं यञ्।
११ कालाट् ठञ्।
१२ श्राद्धे शरदः।
१३ विभाषा रोगातपयोः।
१४ निशाप्रदोषाभ्यां च।
१५ श्वसस्तुट् च।
१६ सन्धिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽण्।
१७ प्रावृष एण्यः।
१८ वर्षाभ्यष्ठक्।
१९ छन्दसि ठञ्।
२० वसन्ताच्च।
२१ हेमन्ताच्च।
२२ सर्वत्राण्च तलोपश्च।

२३ सायञ्चिरम्प्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च।
२४ विभाषा पूर्वाह्णापराह्णाभ्याम्।
२५ तत्र जातः।
२६ प्रावृषष्ठप्।
२७ सञ्ज्ञायां शरदो वुञ्।
२८ पूर्वाह्णापराह्णार्द्रामूलप्रदोषावस्कराद् वुन्।
२९ पथः पन्थ च।
३० अमावास्याया वा।
३१ अ च।
३२ सिन्ध्वपकराभ्यां कन्।
३३ अणञौ च।
३४ श्रविष्ठाफल्गुन्यनुराधास्वातितिष्यपुनर्वसुहस्तविशाखाषाढाबहुलाल्लुक्।
३५ स्थानान्तगोशालखरशालाच्च।
३६ वत्सशालाभिजिदश्वयुक्शतभिषजो वा।
३७ नक्षत्रेभ्यो बहुलम्।
३८ कृतलब्धक्रीतकुशलाः।
३९ प्रायभवः।
४० उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक्।
४१ सम्भूते।
४२ कोशाड् ढञ्।
४३ कालात्साधुपुष्प्यत्पच्यमानेषु।
४४ उप्ते च।
४५ आश्वयुज्या वुञ्।
४६ ग्रीष्मवसन्तादन्यतरस्याम्।
४७ देयमृणे।
४८ कलाप्यश्वत्थयवबुसाद् वुन्।
४९ ग्रीष्मावरसमाद् वुञ्।
५० संवत्सराग्रहायणीभ्यां ठञ्च।
५१ व्याहरति मृगः।
५२ तदस्य सोढम्।
५३ तत्र भवः।
५४ दिगादिभ्यो यत्।
५५ शरीरावयवाच्च।
५६ दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यस्त्यहेर्ढञ्।
५७ ग्रीवाभ्योऽण्च।
५८ गम्भीराञ्ञ्यः।
५९ अव्ययीभावाच्च।
६० अन्तःपूर्वपदाट् ठञ्।
६१ ग्रामात्पर्यनुपूर्वात्।
६२ जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः।
६३ वर्गान्ताच्च।
६४ अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम्।
६५ कर्णललाटात्कनलङ्कारे।
६६ तस्य व्याख्यान इति च व्याख्यातव्यनाम्नः।
६७ बह्वचोऽन्तोदात्ताट् ठञ्।

६८ क्रतुयज्ञेभ्यश्च।
६९ अध्यायेष्ववर्षेः।
७० पौरोडाशपुरोडाशात्ष्ठन्।
७१ छन्दसो यदणौ।
७२ द्व्यजृद्ब्राह्मणर्क्प्रथमाध्वर-पुरश्चरणनामाख्याताट् ठक्।
७३ अणृगयनादिभ्यः।
७४ तत आगतः।
७५ ठगायस्थानेभ्यः।
७६ शुण्डिकादिभ्योऽण्।
७७ विद्यायोनिसम्बन्धेभ्यो वुञ्।
७८ ऋतष्ठञ्।
७९ पितुर्यच्च।
८० गोत्रादङ्कवत्।
८१ हेतुमनुष्येभ्योऽन्यतरस्यां रूप्यः।
८२ मयट् च।
८३ प्रभवति।
८४ विदूराञ्ञ्यः।
८५ तद् गच्छति पथिदूतयोः।
८६ अभिनिष्क्रामति द्वारम्।
८७ अधिकृत्य कृते ग्रन्थे।
८८ शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्र-जननादिभ्यश्छः।
८९ सोऽस्य निवासः।
९० अभिजनश्च।
९१ आयुधजीविभ्यश्छः पर्वते।
९२ शण्डिकादिभ्यो ञ्यः।
९३ सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ।
९४ तूदीशलातुरवर्मतीकूचवाराड्ढक्छण्ढञ्यकः।
९५ भक्तिः।
९६ अचित्ताददेशकालाट् ठक्।
९७ महाराजाट् ठञ्।
९८ वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन्।
९९ गोत्रक्षत्रियाख्येभ्यो बहुलं वुञ्।
१०० जनपदिनां जनपदवत्सर्वं जनपदेन समानशब्दानां बहुवचने।
१०१ तेन प्रोक्तम्।
१०२ तित्तिरिवरतन्तुखण्डिकोखाच्छण्।
१०३ काश्यपकौशिकाभ्यामृषिभ्यां णिनिः।
१०४ कलापिवैशम्पायनान्ते-वासिभ्यश्च।
१०५ पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु।
१०६ शौनकादिभ्यश्छन्दसि।
१०७ कठचरकाल्लुक्।
१०८ कलापिनोऽण्।
१०९ छगलिनो ढिनुक्।
११० पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः।
१११ कर्मन्दकृशाश्वादिनिः।

११२ तेनैकदिक्।
११३ तसिश्च।
११४ उरसो यच्च।
११५ उपज्ञाते।
११६ कृते ग्रन्थे।
११७ सञ्ज्ञायाम्।
११८ कुलालादिभ्यो वुञ्।
११९ क्षुद्राभ्रमरवटरपादपादञ्।
१२० तस्येदम्।
१२१ रथाद् यत्।
१२२ पत्रपूर्वादञ्।
१२३ पत्राध्वर्युपरिषदश्च।
१२४ हलसीराट् ठक्।
१२५ द्वन्द्वाद् वुन्वैरमैथुनिकयोः।
१२६ गोत्रचरणाद् वुञ्।
१२७ सङ्घाङ्कलक्षणेष्वञ्-यञिञामण्।
१२८ शकलाद् वा।
१२९ छन्दोगौक्थिकयाज्ञिकबह्वृच-नटाञ्ञ्यः।
१३० न दण्डमाणवान्तेवासिषु।
१३१ रैवतिकादिभ्यश्छः।
१३२ तस्य विकारः।
१३३ अवयवे च प्राण्योषधि-वृक्षेभ्यः।
१३४ बिल्वादिभ्योऽण्।
१३५ कोपधाच्च।
१३६ त्रपुजतुनोः षुक्।
१३७ ओरञ्।
१३८ अनुदात्तादेश्च।
१३९ पलाशादिभ्यो वा।
१४० शम्याष्ट्लञ्।
१४१ मयड् वैतयोर्भाषायाम-भक्ष्याच्छादनयोः।
१४२ नित्यं वृद्धशरादिभ्यः।
१४३ गोश्च पुरीषे।
१४४ पिष्टाच्च।
१४५ सञ्ज्ञायां कन्।
१४६ व्रीहेः पुरोडाशे।
१४७ असञ्ज्ञायां तिल-यवाभ्याम्।
१४८ द्व्यचश्छन्दसि।
१४९ नोत्वद्वर्ध्रबिल्वात्।
१५० तालादिभ्योऽण्।
१५१ जातरूपेभ्यः परिमाणे।
१५२ प्राणिरजतादिभ्योऽञ्।
१५३ ञितश्च तत्प्रत्ययात्।
१५४ क्रीतवत्परिमाणात्।
१५५ उष्ट्राद् वुञ्।
१५६ उमोर्णयोर्वा।
१५७ एण्या ढञ्।
१५८ गोपयसोर्यत्।
१५९ द्रोश्च।
१६० माने वयः।

१६१ फले लुक्।
१६२ प्लक्षादिभ्योऽण्।
१६३ जम्ब्वा वा।
१६४ लुप्च।
१६५ हरीतक्यादिभ्यश्च।
१६६ कंसीयपरशव्ययोर्यञञौ लुक्च।

--०--

चतुर्थः पादः

१ प्राग्वहतेष्ठक्।
२ तेन दीव्यति खनति जयति जितम्।
३ संस्कृतम्।
४ कुलत्थकोपधादण्।
५ तरति।
६ गोपुच्छाट् ठञ्।
७ नौद्व्यचष्ठन्।
८ चरति।
९ आकर्षात्ष्ठल्।
१० पर्पादिभ्यः ष्ठन्।
११ श्वगणाट् ठञ्च।
१२ वेतनादिभ्यो जीवति।
१३ वस्नक्रयविक्रयाट् ठन्।
१४ आयुधाच्छ च।
१५ हरत्युत्सङ्गादिभ्यः।
१६ भस्त्रादिभ्यः ष्ठन्।
१७ विभाषा विवधात्।
१८ अण्कुटिलिकायाः।
१९ निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यः।
२० त्रेर्मम्नित्यम्।
२१ अपमित्ययाचिताभ्यां कक्कनौ।
२२ संसृष्टे।
२३ चूर्णादिनिः।
२४ लवणाल्लुक्।
२५ मुद्गादण्।
२६ व्यञ्जनैरुपसिक्ते।
२७ ओजःसहोऽम्भसा वर्तते।
२८ तत्प्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलम्।
२९ परिमुखं च।
३० प्रयच्छति गर्ह्यम्।
३१ कुसीददशैकादशात्ष्ठन्ष्ठचौ।
३२ उञ्छति।
३३ रक्षति।
३४ शब्ददर्दुरं करोति।
३५ पक्षिमत्स्यमृगान्हन्ति।
३६ परिपन्थं च तिष्ठति।
३७ माथोत्तरपदपदव्यनुपदं धावति।
३८ आक्रन्दाट् ठञ्च।
३९ पदोत्तरपदं गृह्णाति।
४० प्रतिकण्ठार्थललामं च।
४१ धर्मं चरति।
४२ प्रतिपथमेति ठंश्च।
४३ समवायान्समवैति।

४४ परिषदो ण्यः।
४५ सेनाया वा।
४६ सञ्ज्ञायां ललाटकुक्कुट्यौ पश्यति।
४७ तस्य धर्म्यम्।
४८ अण्महिष्यादिभ्यः।
४९ ऋतोऽञ्।
५० अवक्रयः।
५१ तदस्य पण्यम्।
५२ लवणाट् ठञ्।
५३ किशरादिभ्यः ष्ठन्।
५४ शलालुनोऽन्यतरस्याम्।
५५ शिल्पम्।
५६ मड्डुकझर्झरादणन्यतरस्याम्।
५७ प्रहरणम्।
५८ परश्वधाट् ठञ्च।
५९ शक्तियष्ट्योरीकक्।
६० अस्तिनास्तिदिष्टं मतिः।
६१ शीलम्।
६२ छत्रादिभ्यो णः।
६३ कर्माध्ययने वृत्तम्।
६४ बह्वच्पूर्वपदाट् ठच्।
६५ हितं भक्षाः।
६६ तदस्मै दीयते नियुक्तम्।
६७ श्राणामांसौदनाट् टिठन्।
६८ भक्तादणन्यतरस्याम्।
६९ तत्र नियुक्तः।
७० अगारान्ताट् ठन्।
७१ अध्यायिन्यदेशकालात्।
७२ कठिनान्तप्रस्तारसंस्थानेषु व्यवहरति।
७३ निकटे वसति।
७४ आवसथात्ष्ठल्।
७५ प्राग्घिताद् यत्।
७६ तद् वहति रथयुगप्रासङ्गम्।
७७ धुरो यड्ढकौ।
७८ खः सर्वधुरात्।
७९ एकधुराल्लुक्च।
८० शकटादण्।
८१ हलसीराट् ठक्।
८२ सञ्ज्ञायां जन्याः।
८३ विध्यत्यधनुषा।
८४ धनगणं लब्धा।
८५ अन्नाण्णः।
८६ वशं गतः।
८७ पदमस्मिन्दृश्यम्।
८८ मूलमस्याबर्हि।
८९ सञ्ज्ञायां धेनुष्या।
९० गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः।
९१ नौवयोधर्मविषमूलमूलसीता-तुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्या-नाम्यसमसमितसम्मितेषु।
९२ धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते।
९३ छन्दसो निर्मिते।

९४ उरसोऽण्च।
९५ हृदयस्य प्रियः।
९६ बन्धने चर्षौ।
९७ मतजनहलात्करणजल्पकर्षेषु।
९८ तत्र साधुः।
९९ प्रतिजनादिभ्यः खञ्।
१०० भक्ताण्णः।
१०१ परिषदो ण्यः।
१०२ कथादिभ्यष्ठक्।
१०३ गुडादिभ्यष्ठञ्।
१०४ पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ्।
१०५ सभाया यः।
१०६ ढश्छन्दसि।
१०७ समानतीर्थे वासी।
१०८ समानोदरे शयित ओ चोदात्तः।
१०९ सोदराद् यः।
११० भवे छन्दसि।
१११ पाथोनदीभ्यां ड्यण्।
११२ वेशन्तहिमवद्भ्यामण्।
११३ स्रोतसो विभाषा ड्यड्ड्यौ।
११४ सगर्भसयूथसनुताद् यन्।
११५ तुग्राद् घन्।
११६ अग्राद् यत्।
११७ घच्छौ च।
११८ समुद्राभ्राद् घः।
११९ बर्हिषि दत्तम्।
१२० दूतस्य भागकर्मणी।
१२१ रक्षोयातूनां हननी।
१२२ रेवतीजगतीहविष्याभ्यः प्रशस्ये।
१२३ असुरस्य स्वम्।
१२४ मायायामण्।
१२५ तद्वानासामुपधानो मन्त्र इतीष्टकासु लुक्च मतोः।
१२६ अश्विमानण्।
१२७ वयस्यासु मूर्ध्नो मतुप्।
१२८ मत्वर्थे मासतन्वोः।
१२९ मधोर्ञ च।
१३० ओजसोऽहनि यत्खौ।
१३१ वेशोयशआदेर्भगाद् यल्।
१३२ ख च।
१३३ पूर्वैः कृतमिनयौ च।
१३४ अद्भिः संस्कृतम्।
१३५ सहस्रेण सम्मितौ घः।
१३६ मतौ च।
१३७ सोममर्हति यः।
१३८ मये च।
१३९ मधोः।
१४० वसोः समूहे च।
१४१ नक्षत्राद् घः।
१४२ सर्वदेवात्तातिल्।
१४३ शिवशमरिष्टस्य करे।
१४४ भावे च।

पञ्चमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ प्राक्क्रीताच्छः।
२ उगवादिभ्यो यत्।
३ कम्बलाच्च सञ्ज्ञायाम्।
४ विभाषा हविरपूपादिभ्यः।
५ तस्मै हितम्।
६ शरीरावयवाद् यत्।
७ खलयवमाषतिलवृषब्रह्मणश्च।
८ अजाविभ्यां थ्यन्।
९ आत्मन्विश्वजनभोगोत्तर-पदात्खः।
१० सर्वपुरुषाभ्यां णढञौ।
११ माणवचरकाभ्यां खञ्।
१२ तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ।
१३ छदिरुपधिबलेर्ढञ्।
१४ ऋषभोपानहोर्ञ्यः।
१५ चर्मणोऽञ्।
१६ तदस्य तदस्मिन्स्यादिति।
१७ परिखाया ढञ्।
१८ प्राग्वतेष्ठञ्।
१९ आर्हादगोपुच्छसङ्ख्या-परिमाणाट् ठक्।
२० असमासे निष्कादिभ्यः।
२१ शताच्च ठन्यतावशते।
२२ सङ्ख्याया अतिशदन्तायाः कन्।
२३ वतोरिड् वा।
२४ विंशतित्रिंशद्भ्यां ड्वुन्नसञ्ज्ञायाम्।
२५ कंसाट् टिठन्।
२६ शूर्पादञन्यतरस्याम्।
२७ शतमानविंशतिकसहस्र-वसनादण्।
२८ अध्यर्धपूर्वद्विगोर्लुगसञ्ज्ञायाम्।
२९ विभाषा कार्षापण-सहस्राभ्याम्।
३० द्वित्रिपूर्वान्निष्कात्।
३१ बिस्ताच्च।
३२ विंशतिकात्खः।
३३ खार्या ईकन्।
३४ पणपादमाषशताद् यत्।
३५ शाणाद् वा।
३६ तेन क्रीतम्।
३७ तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ।
३८ गोद्व्यचोऽसङ्ख्या-परिमाणाश्वादेर्यत्।
३९ पुत्राच्छ च।
४० सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ।

४१ तस्येश्वरः।
४२ तत्र विदित इति च।
४३ लोकसर्वलोकाट् ठञ्।
४४ तस्य वापः।
४५ पात्रात्ष्ठन्।
४६ तदस्मिन्वृद्ध्यायलाभ-शुल्कोपदा दीयते।
४७ पूरणार्धाट् ठन्।
४८ भागाद् यच्च।
४९ तद्धरति वहत्यावहति भाराद् वंशादिभ्यः।
५० वस्नद्रव्याभ्यां ठन्कनौ।
५१ सम्भवत्यवहरति पचति।
५२ आढकाचितपात्रात्खोऽन्य-तरस्याम्।
५३ द्विगोः ष्ठंश्च।
५४ कुलिजाल्लुक्खौ च।
५५ सोऽस्यांशवस्नभृतयः।
५६ तदस्य परिमाणम्।
५७ सङ्ख्यायाः सञ्ज्ञासङ्घ-सूत्राध्ययनेषु।
५८ पङ्क्तिविंशतित्रिंशच्चत्वारिंशत्-पञ्चाशत्षष्टिसप्तत्यशीति-नवतिशतम्।
५९ पञ्चद्दशतौ वर्गे वा।
६० सप्तनोऽञ्छन्दसि।
६१ त्रिंशच्चत्वारिंशतोर्ब्राह्मणे सञ्ज्ञायां डण्।
६२ तदर्हति।
६३ छेदादिभ्यो नित्यम्।
६४ शीर्षच्छेदाद् यच्च।
६५ दण्डादिभ्यो यत्।
६६ छन्दसि च।
६७ पात्राद् घंश्च।
६८ कडङ्करदक्षिणाच्छ च।
६९ स्थालीबिलात्।
७० यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ।
७१ पारायणतुरायणचान्द्रायणं वर्त्तयति।
७२ संशयमापन्नः।
७३ योजनं गच्छति।
७४ पथः ष्कन्।
७५ पन्थो ण नित्यम्।
७६ उत्तरपथेनाहृतं च।
७७ कालात्।
७८ तेन निर्वृत्तम्।
७९ तमधीष्टो भृतो भूतो भावी।
८० मासाद् वयसि यत्खञौ।
८१ द्विगोर्यप्।
८२ षण्मासाण्ण्यच्च।
८३ अवयसि ठंश्च।
८४ समायाः खः।
८५ द्विगोर्वा।

८६ रात्र्यहःसंवत्सराच्च।
८७ वर्षाल्लुक्च।
८८ चित्तवति नित्यम्।
८९ षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते।
९० वत्सरान्ताच्छश्छन्दसि।
९१ सम्परिपूर्वात्ख च।
९२ तेन परिजय्यलभ्यकार्य-सुकरम्।
९३ तदस्य ब्रह्मचर्यम्।
९४ तस्य च दक्षिणा यज्ञाख्येभ्यः।
९५ तत्र च दीयते कार्यं भववत्।
९६ व्युष्टादिभ्योऽण्।
९७ तेन यथाकथाचहस्ताभ्यां णयतौ।
९८ सम्पादिनि।
९९ कर्मवेषाद् यत्।
१०० तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः।
१०१ योगाद् यच्च।
१०२ कर्मण उकञ्।
१०३ समयस्तदस्य प्राप्तम्।
१०४ ऋतोरण्।
१०५ छन्दसि घस्।
१०६ कालाद् यत्।
१०७ प्रकृष्टे ठञ्।
१०८ प्रयोजनम्।
१०९ विशाखाषाढादण्मन्थ-दण्डयोः।
११० अनुप्रवचनादिभ्यश्छः।
१११ समापनात्सपूर्वपदात्।
११२ ऐकागारिकट् चौरे।
११३ आकालिकडाद्यन्तवचने।
११४ तेन तुल्यं क्रिया चेद् वतिः।
११५ तत्र तस्येव।
११६ तदर्हम्।
११७ उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे।
११८ तस्य भावस्त्वतलौ।
११९ आ च त्वात्।
१२० न नञ्पूर्वात्तत्पुरुषादचतुर-सङ्गतलवणवटयुधकत-रसलसेभ्यः।
१२१ पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा।
१२२ वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ्च।
१२३ गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च।
१२४ स्तेनाद् यन्नलोपश्च।
१२५ सख्युर्यः।
१२६ कपिज्ञात्योर्ढक्।
१२७ पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्।
१२८ प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्-गात्रादिभ्योऽञ्।
१२९ हायनान्तयुवादिभ्योऽण्।
१३० इगन्ताच्च लघुपूर्वात्।
१३१ योपधाद् गुरूपोत्तमाद् वुञ्।
१३२ द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च।

१३३ गोत्रचरणाच्छ्लाघात्या-
कारतदवेतेषु।
१३४ होत्राभ्यश्छः।
१३५ ब्रह्मणस्त्वः।

--०--

द्वितीयः पादः

१ धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ्।
२ व्रीहिशाल्योर्ढक्।
३ यवयवकषष्टिकाद् यत्।
४ विभाषा तिलमाषोमा-
भङ्गाणुभ्यः।
५ सर्वचर्मणः कृतः खखञौ।
६ यथामुखसम्मुखस्य दर्शनः खः।
७ तत्सर्वादेः पथ्यङ्गकर्मपत्रपात्रं
व्याप्नोति।
८ आप्रपदं प्राप्नोति।
९ अनुपदसर्वान्नायानयं
बद्धाभक्षयतिनेयेषु।
१० परोवरपरम्परपुत्रपौत्रमनु-
भवति।
११ अवारपारात्यन्तानुकामं गामी।
१२ समांसमां विजायते।
१३ अद्यश्वीनावष्टब्धे।
१४ आगवीनः।
१५ अनुग्वलङ्गामी।
१६ अध्वनो यत्खौ।
१७ अभ्यमित्राच्छ च।
१८ गोष्ठात्खञ्भूतपूर्वे।
१९ अश्वस्यैकाहगमः।
२० शालीनकौपीने
अधृष्टाकार्ययोः।
२१ व्रातेन जीवति।
२२ साप्तपदीनं सख्यम्।
२३ हैयङ्गवीनं सञ्ज्ञायाम्।
२४ तस्य पाकमूले पील्वादि-
कर्णादिभ्यः कुणब्जाहचौ।
२५ पक्षात्तिः।
२६ तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ।
२७ विनञ्भ्यां नानाञौ न सह।
२८ वेः शालच्छङ्कटचौ।
२९ सम्प्रोदश्च कटच्।
३० अवात्कुटारच्च।
३१ नते नासिकायाः सञ्ज्ञायां
टीटञ्नाटज्भ्रटचः।
३२ नेर्बिडज्बिरीसचौ।
३३ इनच्पिटच्चिकचि च।
३४ उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्ना-
रूढयोः।
३५ कर्मणि घटोऽठच्।
३६ तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य
इतच्।
३७ प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः।
३८ पुरुषहस्तिभ्यामण्च।
३९ यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्।

४० किमिदम्भ्यां वो घः।
४१ किमः सङ्ख्यापरिमाणे डति च।
४२ सङ्ख्याया अवयवे तयप्।
४३ द्वित्रिभ्यां तयस्यायज्वा।
४४ उभादुदात्तो नित्यम्।
४५ तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड् डः।
४६ शदन्तविंशतेश्च।
४७ सङ्ख्याया गुणस्य निमाने मयट्।
४८ तस्य पूरणे डट्।
४९ नान्तादसङ्ख्यादेर्मट्।
५० थट् च छन्दसि।
५१ षट्कतिकतिपयचतुरां थुक्।
५२ बहुपूगगणसङ्घस्य तिथुक्।
५३ वतोरिथुक्।
५४ द्वेस्तीयः।
५५ त्रेः सम्प्रसारणं च।
५६ विंशत्यादिभ्यस्तमडन्य-तरस्याम्।
५७ नित्यं शतादिमासार्धमास-संवत्सराच्च।
५८ षष्ट्यादेश्चासङ्ख्यादेः।
५९ मतौ छः सूक्तसाम्नोः।
६० अध्यायानुवाकयोर्लुक्।
६१ विमुक्तादिभ्योऽण्।
६२ गोषदादिभ्यो वुन्।
६३ तत्र कुशलः पथः।
६४ आकर्षादिभ्यः कन्।
६५ धनहिरण्यात्कामे।
६६ स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते।
६७ उदराट् ठगाद्यूने।
६८ सस्येन परिजातः।
६९ अंशं हारी।
७० तन्त्रादचिरापहृते।
७१ ब्राह्मणकोष्णिके सञ्ज्ञायाम्।
७२ शीतोष्णाभ्यां कारिणि।
७३ अधिकम्।
७४ अनुकाभीकाभीकः कमिता।
७५ पार्श्वेनान्विच्छति।
७६ अयःशूलदण्डाजिनाभ्यां ठक्ठञौ।
७७ तावतिथं ग्रहणमिति लुग्वा।
७८ स एषां ग्रामणीः।
७९ शृङ्खलमस्य बन्धनं करभे।
८० उत्क उन्मनाः।
८१ कालप्रयोजनाद् रोगे।
८२ तदस्मिन्नन्नं प्राये सञ्ज्ञायाम्।
८३ कुल्माषादञ्।
८४ श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते।
८५ श्राद्धमनेन भुक्तमिनिठनौ।
८६ पूर्वादिनिः।
८७ सपूर्वाच्च।
८८ इष्टादिभ्यश्च।

८९ छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ पर्यवस्थातरि।
९० अनुपद्यन्वेष्टा।
९१ साक्षाद् द्रष्टरि सञ्ज्ञायाम्।
९२ क्षेत्रियच्परक्षेत्रे चिकित्स्यः।
९३ इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्र-दृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्र-दत्तमिति वा।
९४ तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्।
९५ रसादिभ्यश्च।
९६ प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम्।
९७ सिध्मादिभ्यश्च।
९८ वत्सांसाभ्यां कामबले।
९९ फेनादिलच्च।
१०० लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः।
१०१ प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः।
१०२ तपःसहस्राभ्यां विनीनी।
१०३ अण्च।
१०४ सिकताशर्कराभ्यां च।
१०५ देशे लुबिलचौ च।
१०६ दन्त उन्नत उरच्।
१०७ ऊषसुषिमुष्कमधो रः।
१०८ द्युद्रुभ्यां मः।
१०९ केशाद् वोऽन्यतरस्याम्।
११० गाण्ड्यजगात्सञ्ज्ञायाम्।
१११ काण्डाण्डादीरन्नीरचौ।
११२ रजःकृष्यासुतिपरिषदो वलच्।
११३ दन्तशिखात्सञ्ज्ञायाम्।
११४ ज्योत्स्नातमिस्रा-शृङ्गिणोर्जस्विन्नूर्जस्वल-गोमिन्मलिनमलीमसाः।
११५ अत इनिठनौ।
११६ व्रीह्यादिभ्यश्च।
११७ तुन्दादिभ्य इलच्च।
११८ एकगोपूर्वाट् ठञ्नित्यम्।
११९ शतसहस्रान्ताच्च निष्कात्।
१२० रूपादाहतप्रशंसयोर्यप्।
१२१ अस्मायामेधास्रजो विनिः।
१२२ बहुलं छन्दसि।
१२३ ऊर्णाया युस्।
१२४ वाचो ग्मिनिः।
१२५ आलजाटचौ बहुभाषिणि।
१२६ स्वामिन्नैश्वर्ये।
१२७ अर्शआदिभ्योऽच्।
१२८ द्वन्द्वोपतापगर्ह्यात्प्राणि-स्थादिनिः।
१२९ वातातीसाराभ्यां कुक्च।
१३० वयसि पूरणात्।
१३१ सुखादिभ्यश्च।
१३२ धर्मशीलवर्णान्ताच्च।
१३३ हस्ताज्जातौ।
१३४ वर्णाद् ब्रह्मचारिणि।

१३५ पुष्करादिभ्यो देशे।
१३६ बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम्।
१३७ सञ्ज्ञायां मन्माभ्याम्।
१३८ कंशम्भ्यां बभयुस्तितुतयसः।
१३९ तुन्दिबलिवटेर्भः।
१४० अहंशुभमोर्युस्।

--०--

तृतीयः पादः

१ प्राग्दिशो विभक्तिः।
२ किंसर्वनामबहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः।
३ इदम इश्।
४ एतेतौ रथोः।
५ एतदोऽन्।
६ सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि।
७ पञ्चम्यास्तसिल्।
८ तसेश्च।
९ पर्यभिभ्यां च।
१० सप्तम्यास्त्रल्।
११ इदमो हः।
१२ किमोऽत्।
१३ वा ह च च्छन्दसि।
१४ इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते।
१५ सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा।
१६ इदमो र्हिल्।
१७ अधुना।
१८ दानीं च।
१९ तदो दा च।
२० तयोर्दार्हिलौ च च्छन्दसि।
२१ अनद्यतने र्हिलन्यतरस्याम्।
२२ सद्यःपरुत्परार्यैषमःपरेद्यव्यद्य-पूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरेद्युर-परेद्युरधरेद्युरुभयेद्युरुत्तरेद्युः।
२३ प्रकारवचने थाल्।
२४ इदमस्थमुः।
२५ किमश्च।
२६ था हेतौ च च्छन्दसि।
२७ दिक्शब्देभ्यः सप्तमीपञ्चमी-प्रथमाभ्यो दिग्देश-कालेष्वस्तातिः।
२८ दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच्।
२९ विभाषा परावराभ्याम्।
३० अञ्चेर्लुक्।
३१ उपर्युपरिष्टात्।
३२ पश्चात्।
३३ पश्च पश्चा च च्छन्दसि।
३४ उत्तराधरदक्षिणादातिः।
३५ एनबन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्याः।
३६ दक्षिणादाच्।
३७ आहि च दूरे।
३८ उत्तराच्च।
३९ पूर्वाधरावराणामसि पुरधवश्चैषाम्।

४० अस्ताति च।
४१ विभाषावरस्य।
४२ सङ्ख्याया विधार्थे धा।
४३ अधिकरणविचाले च।
४४ एकाद् धो ध्यमुञन्यतरस्याम्।
४५ द्वित्र्योश्च धमुञ्।
४६ एधाच्च।
४७ याप्ये पाशप्।
४८ पूरणाद् भागे तीयादन्।
४९ प्रागेकादशभ्योऽच्छन्दसि।
५० षष्ठाष्टमाभ्यां ञ च।
५१ मानपश्वङ्गयोः कन्लुकौ च।
५२ एकादाकिनिच्चासहाये।
५३ भूतपूर्वे चरट्।
५४ षष्ठ्या रूप्य च।
५५ अतिशायने तमबिष्ठनौ।
५६ तिङश्च।
५७ द्विवचनविभज्योपपदे
तरबीयसुनौ।
५८ अजादी गुणवचनादेव।
५९ तुश्छन्दसि।
६० प्रशस्यस्य श्रः।
६१ ज्य च।
६२ वृद्धस्य च।
६३ अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ।
६४ युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम्।
६५ विन्मतोर्लुक्।
६६ प्रशंसायां रूपप्।
६७ ईषदसमाप्तौ
कल्पब्देश्यदेशीयरः।
६८ विभाषा सुपो बहुच्पुरस्तात्तु।
६९ प्रकारवचने जातीयर्।
७० प्रागिवात्कः।
७१ अव्ययसर्वनाम्नामकच्प्राक्टेः।
७२ कस्य च दः।
७३ अज्ञाते।
७४ कुत्सिते।
७५ सञ्ज्ञायां कन्।
७६ अनुकम्पायाम्।
७७ नीतौ च तद्युक्तात्।
७८ बह्वचो मनुष्यनाम्नष्ठज्वा।
७९ घनिलचौ च।
८० प्राचामुपादेरडज्वुचौ च।
८१ जातिनाम्नः कन्।
८२ अजिनान्तस्योत्तरपदलोपश्च।
८३ ठाजादावूर्ध्वं द्वितीयादचः।
८४ शेवलसुपरिविशाल-
वरुणार्यमादीनां तृतीयात्।
८५ अल्पे।
८६ ह्रस्वे।
८७ सञ्ज्ञायां कन्।
८८ कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः।
८९ कुत्वा डुपच्।
९० कासूगोणीभ्यां ष्टरच्।

९१ वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च तनुत्वे।
९२ किंयत्तदो निर्धारणे द्वयोरेकस्य डतरच्।
९३ वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच्।
९४ एकाच्च प्राचाम्।
९५ अवक्षेपणे कन्।
९६ इवे प्रतिकृतौ।
९७ सञ्ज्ञायां च।
९८ लुम्मनुष्ये।
९९ जीविकार्थे चापण्ये।
१०० देवपथादिभ्यश्च।
१०१ वस्तेर्ढञ्।
१०२ शिलाया ढः।
१०३ शाखादिभ्यो यत्।
१०४ द्रव्यं च भव्ये।
१०५ कुशाग्राच्छः।
१०६ समासाच्च तद्विषयात्।
१०७ शर्करादिभ्योऽण्।
१०८ अङ्गुल्यादिभ्यष्ठक्।
१०९ एकशालायाष्ठजन्यतरस्याम्।
११० कर्कलोहितादीकक्।
१११ प्रत्नपूर्वविश्वेमात्थाल्छन्दसि।
११२ पूगाञ्ज्योऽग्रामणीपूर्वात्।
११३ व्रातच्फञोरस्त्रियाम्।
११४ आयुधजीविसङ्घाञ्ञ्यड् वाहीकेष्वब्राह्मणराजन्यात्।
११५ वृकाट् टेण्यण्।
११६ दामन्यादित्रिगर्तषष्ठाच्छः।
११७ पर्श्वादि-यौधेयादिभ्यामणञौ।
११८ अभिजिद्विदभृच्छालावच्-छिखावच्छमीवदूर्णावच्-छ्रूमदणो यञ्।
११९ ञ्यादयस्तद्राजाः।

--०--

चतुर्थः पादः

१ पादशतस्य सङ्ख्यादेर्वीप्सायां वुन्लोपश्च।
२ दण्डव्यवसर्गयोश्च।
३ स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन्।
४ अनत्यन्तगतौ क्तात्।
५ न सामिवचने।
६ बृहत्या आच्छादने।
७ अषडक्षाशितङ्ग्वलङ्-कर्मालम्पुरुषाध्युत्तरपदात्खः।
८ विभाषाञ्चेरदिक्स्त्रियाम्।
९ जात्यन्ताच्छ बन्धुनि।
१० स्थानान्ताद् विभाषा सस्थानेनेति चेत्।
११ किमेत्तिङव्ययघादाम्वद्रव्य-प्रकर्षे।
१२ अमु चच्छन्दसि।
१३ अनुगादिनष्ठक्।

१४ णचः स्त्रियामञ्।
१५ अणिनुणः।
१६ विसारिणो मत्स्ये।
१७ सङ्ख्यायाः क्रियाभ्यावृत्ति-
गणने कृत्वसुच्।
१८ द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच्।
१९ एकस्य सकृच्च।
२० विभाषा बहोर्धाविप्रकृष्टकाले।
२१ तत्प्रकृतवचने मयट्।
२२ समूहवच्च बहुषु।
२३ अनन्तावसथेतिहभेषजाञ्
ञ्यः।
२४ देवतान्तात्तादर्थ्ये यत्।
२५ पादार्घाभ्यां च।
२६ अतिथेर्ञ्यः।
२७ देवात्तल्।
२८ अवेः कः।
२९ यावादिभ्यः कन्।
३० लोहितान्मणौ।
३१ वर्णे चानित्ये।
३२ रक्ते।
३३ कालाच्च।
३४ विनयादिभ्यष्ठक्।
३५ वाचो व्याहृतार्थायाम्।
३६ तद्युक्तात्कर्मणोऽण्।
३७ ओषधेरजातौ।
३८ प्रज्ञादिभ्यश्च।
३९ मृदस्तिकन्।
४० सस्नौ प्रशंसायाम्।
४१ वृकज्येष्ठाभ्यां तिल्तातिलौ
चच्छन्दसि।
४२ बह्वल्पार्थाच्छस्कारकादन्य-
तरस्याम्।
४३ सङ्ख्यैकवचनाच्च
वीप्सायाम्।
४४ प्रतियोगे पञ्चम्यास्तसिः।
४५ अपादाने चाहीयरुहोः।
४६ अतिग्रहाव्यथनक्षेपेष्वकर्तरि
तृतीयायाः।
४७ हीयमानपापयोगाच्च।
४८ षष्ठ्या व्याश्रये।
४९ रोगाच्चापनयने।
५० कृभ्वस्तियोगे सम्पद्यकर्तरि
च्विः।
५१ अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहोरजसां
लोपश्च।
५२ विभाषा साति कार्त्स्न्ये।
५३ अभिविधौ सम्पदा च।
५४ तदधीनवचने।
५५ देये त्रा च।
५६ देवमनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यो
द्वितीयासप्तम्योर्बहुलम्।
५७ अव्यक्तानुकरणाद्
द्व्यजवरार्धादनितौ डाच्।
५८ कृञो द्वितीयतृतीयशम्ब-
बीजात्कृषौ।

५९ सङ्ख्यायाश्च गुणान्तायाः।
६० समयाच्च यापनायाम्।
६१ सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने।
६२ निष्कुलान्निष्कोषणे।
६३ सुखप्रियादानुलोम्ये।
६४ दुःखात्प्रातिलोम्ये।
६५ शूलात्पाके।
६६ सत्यादशपथे।
६७ मद्रात्परिवापणे।
६८ समासान्ताः।
६९ न पूजनात्।
७० किमः क्षेपे।
७१ नञस्तत्पुरुषात्।
७२ पथो विभाषा।
७३ बहुव्रीहौ सङ्ख्येये डजबहुगणात्।
७४ ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे।
७५ अच्प्रत्यन्ववपूर्वात्साम-लोम्नः।
७६ अक्ष्णोऽदर्शनात्।
७७ अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्री-पुंसधेन्वनडुहर्क्सामवाङ्-मनसाक्षिभ्रुवदारगवोर्वष्ठीव-पदष्ठीवनक्तन्दिवरात्रिन्-दिवाहर्दिवसरजसनिश्श्रेयस-पुरुषायुषद्व्यायुषत्र्यायुषर्ग्यजुष-जातोक्षमहोक्षवृद्धोक्षोपशुन-गोष्ठश्वाः।
७८ ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः।
७९ अवसमन्धेभ्यस्तमसः।
८० श्वसो वसीयः श्रेयसः।
८१ अन्ववतप्ताद् रहसः।
८२ प्रतेरुरसः सप्तमीस्थात्।
८३ अनुगवमायामे।
८४ द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः।
८५ उपसर्गादध्वनः।
८६ तत्पुरुषस्याङ्गुलेः सङ्ख्याव्ययादेः।
८७ अहःसर्वैकदेशसङ्ख्यात-पुण्याच्च रात्रेः।
८८ अह्नोऽह्न एतेभ्यः।
८९ न सङ्ख्यादेः समाहारे।
९० उत्तमैकाभ्यां च।
९१ राजाहःसखिभ्यष्टच्।
९२ गोरतद्धितलुकि।
९३ अग्राख्यायामुरसः।
९४ अनोश्मायःसरसां जातिसञ्ज्ञयोः।
९५ ग्रामकौटाभ्यां च तक्ष्णः।
९६ अतेः शुनः।
९७ उपमानादप्राणिषु।
९८ उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्थ्नः।
९९ नावो द्विगोः।
१०० अर्धाच्च।
१०१ खार्याः प्राचाम्।

१०२ द्वित्रिभ्यामञ्जलेः।
१०३ अनसन्तान्नपुंसकाच्छन्दसि।
१०४ ब्रह्मणो जानपदाख्यायाम्।
१०५ कुमहद्भ्यामन्यतरस्याम्।
१०६ द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे।
१०७ अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः।
१०८ अनश्च।
१०९ नपुंसकादन्यतरस्याम्।
११० नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः।
१११ झयः।
११२ गिरेश्च सेनकस्य।
११३ बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच्।
११४ अङ्गुलेर्दारुणि।
११५ द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः।
११६ अप्पूरणीप्रमाण्योः।
११७ अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः।
११८ अञ्नासिकायाः सञ्ज्ञायां नसं चास्थूलात्।
११९ उपसर्गाच्च।
१२० सुप्रातसुश्वसुदिवशारिकुक्ष-चतुरश्रैणीपदाजपदप्रोष्ठ-पदाः।
१२१ नञ्दुःसुभ्यो हलिसक्थ्योरन्य-तरस्याम्।
१२२ नित्यमसिच्प्रजामेधयोः।
१२३ बहुप्रजाश्छन्दसि।
१२४ धर्मादनिच्केवलात्।
१२५ जम्भा सुहरिततृण-सोमेभ्यः।
१२६ दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे।
१२७ इच्कर्मव्यतिहारे।
१२८ द्विदण्ड्यादिभ्यश्च।
१२९ प्रसम्भ्यां जानुनोर्ज्ञुः।
१३० ऊर्ध्वाद् विभाषा।
१३१ ऊधसोऽनङ्।
१३२ धनुषश्च।
१३३ वा सञ्ज्ञायाम्।
१३४ जायाया निङ्।
१३५ गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः।
१३६ अल्पाख्यायाम्।
१३७ उपमानाच्च।
१३८ पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः।
१३९ कुम्भपदीषु च।
१४० सङ्ख्यासुपूर्वस्य।
१४१ वयसि दन्तस्य दतृ।
१४२ छन्दसि च।
१४३ स्त्रियां सञ्ज्ञायाम्।
१४४ विभाषा श्यावारोकाभ्याम्।
१४५ अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृष-वराहेभ्यश्च।
१४६ ककुदस्यावस्थायां लोपः।
१४७ त्रिककुत्पर्वते।
१४८ उद्विभ्यां काकुदस्य।
१४९ पूर्णाद् विभाषा।
१५० सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः।

१५१ उरःप्रभृतिभ्यः कप्।
१५२ इनः स्त्रियाम्।
१५३ नद्यृतश्च।
१५४ शेषाद् विभाषा।
१५५ न सञ्ज्ञायाम्।
१५६ ईयसश्च।
१५७ वन्दिते भ्रातुः।
१५८ ऋतश्छन्दसि।
१५९ नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे।
१६० निष्प्रवाणिश्च।

षष्ठोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ एकाचो द्वे प्रथमस्य।
२ अजादेर्द्वितीयस्य।
३ न न्द्राः संयोगादयः।
४ पूर्वोऽभ्यासः।
५ उभे अभ्यस्तम्।
६ जक्षित्यादयः षट्।
७ तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य।
८ लिटि धातोरनभ्यासस्य।
९ सन्यङोः।
१० श्लौ।
११ चङि।
१२ दाश्वान्साह्वान्मीढ्वांश्च।
१३ ष्यङः सम्प्रसारणं पुत्रपत्योस्तत्पुरुषे।
१४ बन्धुनि बहुव्रीहौ।
१५ वचिस्वपियजादीनां किति।
१६ ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टि-विचतिवृश्चतिपृच्छति-भृज्जतीनां ङिति च।
१७ लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्।
१८ स्वापेश्चङि।
१९ स्वपिस्यमिव्येञां यङि।
२० न वशः।
२१ चायः की।
२२ स्फायः स्फी निष्ठायाम्।
२३ स्त्यः प्रपूर्वस्य।
२४ द्रवमूर्तिस्पर्शयोः श्यः।
२५ प्रतेश्च।
२६ विभाषाभ्यवपूर्वस्य।
२७ शृतं पाके।
२८ प्यायः पी।
२९ लिड्यङोश्च।
३० विभाषा श्वेः।
३१ णौ च संश्चङोः।
३२ ह्वः सम्प्रसारणमभ्यस्तस्य च।

३३ बहुलं छन्दसि।
३४ चायः की।
३५ अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चिच्युषे तित्याज श्राताः श्रितमाशीराशीर्ताः।
३६ न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम्।
३७ लिटि वयो यः।
३८ वश्चास्यान्यतरस्यां किति।
३९ वेञः।
४० ल्यपि च।
४१ ज्यश्च।
४२ व्यश्च।
४३ विभाषा परेः।
४४ आदेच उपदेशेऽशिति।
४५ न व्यो लिटि।
४६ स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि।
४७ क्रीङ्जीनां णौ।
४८ सिध्यतेरपारलौकिके।
४९ मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च।
५० विभाषा लीयतेः।
५१ खिदेश्छन्दसि।
५२ अपगुरो णमुलि।
५३ चिस्फुरोर्णौ।
५४ प्रजने वीयतेः।
५५ बिभेतेर्हेतुभये।
५६ नित्यं स्मयतेः।
५७ सृजिदृशोर्झल्यमकिति।
५८ अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम्।
५९ शीर्षश्छन्दसि।
६० ये च तद्धिते।
६१ पद्दन्नोमास्हृन्निशसन्यूषन्दोषन्यकञ्छकन्नुदन्नासञ्छस्प्रभृतिषु।
६२ धात्वादेः षः सः।
६३ णो नः।
६४ लोपो व्योर्वलि।
६५ वेरपृक्तस्य।
६६ हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्।
६७ एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः।
६८ शेश्छन्दसि बहुलम्।
६९ ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्।
७० संहितायाम्।
७१ छे च।
७२ आङ्माङोश्च।
७३ दीर्घात्पदान्ताद्वा।
७४ इको यणचि।
७५ एचोऽयवायावः।
७६ वान्तो यि प्रत्यये।

७७ धातोस्तन्निमित्तस्यैव।
७८ क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे।
७९ क्रय्यस्तदर्थे।
८० भय्यप्रवय्ये चच्छन्दसि।
८१ एकः पूर्वपरयोः।
८२ अन्तादिवच्च।
८३ षत्वतुकोरसिद्धः।
८४ आद् गुणः।
८५ वृद्धिरेचि।
८६ एत्येधत्यूठ्सु।
८७ आटश्च।
८८ उपसर्गादृति धातौ।
८९ वा सुप्यापिशलेः।
९० औतोऽम्शसोः।
९१ एङि पररूपम्।
९२ ओमाङोश्च।
९३ उस्यपदान्तात्।
९४ अतो गुणे।
९५ अव्यक्तानुकरणस्यात इतौ।
९६ नाम्रेडितस्यान्त्यस्य तु वा।
९७ अकः सवर्णे दीर्घः।
९८ प्रथमयोः पूर्वसवर्णः।
९९ तस्माच्छसो नः पुंसि।
१०० नादिचि।
१०१ दीर्घाज्जसि च।
१०२ वा छन्दसि।
१०३ अमि पूर्वः।
१०४ सम्प्रसारणाच्च।
१०५ एङः पदान्तादति।
१०६ ङसिङसोश्च।
१०७ ऋत उत्।
१०८ ख्यत्यात्परस्य।
१०९ अतो रोरप्लुतादप्लुते।
११० हशि च।
१११ प्रकृत्यान्तःपादम्।
११२ अव्यादवद्यादव-क्रमुरव्रतायमवन्त्ववस्युषु च।
११३ यजुष्युरः।
११४ आपोजुषाणोवृष्णोवर्षिष्ठे अम्बेअम्बालेअम्बिकेपूर्वे।
११५ अङ्ग इत्यादौ च।
११६ अनुदात्ते च कुधपरे।
११७ अवपथासि च।
११८ सर्वत्र विभाषा गोः।
११९ अवङ् स्फोटायनस्य।
१२० इन्द्रे च।
१२१ प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्।
१२२ आङोऽनुनासिकश्छन्दसि बहुलम्।
१२३ इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च।
१२४ ऋत्यकः।
१२५ अप्लुतवदुपस्थिते।

१२६ ई३ चाक्रवर्मणस्य।
१२७ दिव उत्।
१२८ एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्-समासे हलि।
१२९ स्यश्छन्दसि बहुलम्।
१३० सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम्।
१३१ सुट् कात्पूर्वः।
१३२ सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे।
१३३ समवाये च।
१३४ उपात्प्रतियत्नवैकृत-वाक्याध्याहारेषु।
१३५ किरतौ लवने।
१३६ हिंसायां प्रतेश्च।
१३७ अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वा-लेखने।
१३८ कुस्तुम्बुरूणि जातिः।
१३९ अपरस्पराः क्रियासातत्ये।
१४० गोष्पदं सेवितासेवित-प्रमाणेषु।
१४१ आस्पदं प्रतिष्ठायाम्।
१४२ आश्चर्यमनित्ये।
१४३ वर्चस्केऽवस्करः।
१४४ अपस्करो रथाङ्गम्।
१४५ विष्किरः शकुनौ वा।
१४६ ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे।
१४७ प्रतिष्कशश्च कशेः।
१४८ प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रावृषी।
१४९ मस्करमस्करिणौ वेणुपरिव्राजकयोः।
१५० कास्तीराजस्तुन्दे नगरे।
१५१ पारस्करप्रभृतीनि च सञ्ज्ञायाम्।
१५२ अनुदात्तं पदमेकवर्जम्।
१५३ कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः।
१५४ उञ्छादीनां च।
१५५ अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः।
१५६ धातोः।
१५७ चितः।
१५८ तद्धितस्य।
१५९ कितः।
१६० तिसृभ्यो जसः।
१६१ चतुरः शसि।
१६२ सावेकाचस्तृतीयादिर् विभक्तिः।
१६३ अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्य-तरस्यामनित्यसमासे।
१६४ अञ्चेश्छन्दस्यसर्वनाम-स्थानम्।
१६५ ऊडिदम्पदाद्यप्पुम्रैद्युभ्यः।
१६६ अष्टनो दीर्घात्।
१६७ शतुरनुमो नद्यजादी।
१६८ उदात्तयणो हल्पूर्वात्।
१६९ नोङ्धात्वोः।
१७० ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप्।

१७१ नामन्यतरस्याम्।
१७२ ङ्याश्छन्दसि बहुलम्।
१७३ षट्त्रिचतुर्भ्यो हलादिः।
१७४ झल्युपोत्तमम्।
१७५ विभाषा भाषायाम्।
१७६ न गोश्वन्साववर्णराडङ्क्रुङ्कृद्भ्यः।
१७७ दिवो झल्।
१७८ नृ चान्यतरस्याम्।
१७९ तित्स्वरितम्।
१८० तास्यनुदात्तेन्ङिददुपदेशाल्लसार्वधातुकमनुदात्तमह्न्विङोः।
१८१ आदिः सिचोऽन्यतरस्याम्।
१८२ स्वपादिर्हिंसामच्यनिटि।
१८३ अभ्यस्तानामादिः।
१८४ अनुदात्ते च।
१८५ सर्वस्य सुपि।
१८६ भीह्रीभृहुमदजनधनदरिद्राजागरां प्रत्ययात्पूर्वं पिति।
१८७ लिति।
१८८ आदिर्णमुल्यन्यतरस्याम्।
१८९ अचः कर्तृयकि।
१९० थलि च सेटीडन्तो वा।
१९१ ञ्नित्यादिर्नित्यम्।
१९२ आमन्त्रितस्य च।
१९३ पथिमथोः सर्वनामस्थाने।
१९४ अन्तश्च तवै युगपत्।
१९५ क्षयो निवासे।
१९६ जयः करणम्।
१९७ वृषादीनां च।
१९८ सञ्ज्ञायामुपमानम्।
१९९ निष्ठा च द्व्यजनात्।
२०० शुष्कधृष्टौ।
२०१ आशितः कर्ता।
२०२ रिक्ते विभाषा।
२०३ जुष्टार्पिते चच्छन्दसि।
२०४ नित्यं मन्त्रे।
२०५ युष्मदस्मदोर्ङसि।
२०६ ङयि च।
२०७ यतोऽनावः।
२०८ ईडवन्दवृशंसदुहां ण्यतः।
२०९ विभाषा वेण्विन्धानयोः।
२१० त्यागरागहासकुहश्वठक्रथानाम्।
२११ उपोत्तमं रिति।
२१२ चङ्यन्यतरस्याम्।
२१३ मतोः पूर्वमात्सञ्ज्ञायां स्त्रियाम्।
२१४ अन्तोऽवत्याः।
२१५ ईवत्याः।
२१६ चौ।
२१७ समासस्य।

--०--

द्वितीयः पादः

१ बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम्।
२ तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्ययद्वितीयाकृत्याः।
३ वर्णो वर्णेष्वनेते।
४ गाधलवणयोः प्रमाणे।
५ दायाद्यं दायादे।
६ प्रतिबन्धि चिरकृच्छ्रयोः।
७ पदेऽपदेशे।
८ निवाते वातत्राणे।
९ शारदेऽनार्तवे।
१० अध्वर्युकषाययोर्जातौ।
११ सदृशप्रतिरूपयोः सादृश्ये।
१२ द्विगौ प्रमाणे।
१३ गन्तव्यपण्यं वाणिजे।
१४ मात्रोपज्ञोपक्रमच्छाये नपुंसके।
१५ सुखप्रिययोर्हिते।
१६ प्रीतौ च।
१७ स्वं स्वामिनि।
१८ पत्यावैश्वर्ये।
१९ न भूवाक्चिद्दिधिषु।
२० वा भुवनम्।
२१ आशङ्काबाधनेदीयःसु सम्भावने।
२२ पूर्वे भूतपूर्वे।
२३ सविधसनीडसमर्यादसवेशसदेशेषु सामीप्ये।
२४ विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु।
२५ श्रज्यावमकन्पापवत्सु भावे कर्मधारये।
२६ कुमारश्च।
२७ आदिः प्रत्येनसि।
२८ पूगेष्वन्यतरस्याम्।
२९ इगन्तकालकपालभगालशरावेषु द्विगौ।
३० बह्वन्यतरस्याम्।
३१ दिष्टिवितस्त्योश्च।
३२ सप्तमी सिद्धशुष्कपक्वबन्धेष्वकालात्।
३३ परिप्रत्युपापा वर्ज्यमानाहोरात्रावयवेषु।
३४ राजन्यबहुवचनद्वन्द्वेऽन्धकवृष्णिषु।
३५ सङ्ख्या।
३६ आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासी।
३७ कार्तकौजपादयश्च।
३८ महान्व्रीह्यपराह्णगृष्टीष्वासजाबालभारभारतहैलिहिलरौरवप्रवृद्धेषु।
३९ क्षुल्लकश्च वैश्वदेवे।
४० उष्ट्रः सादिवाम्योः।
४१ गौः सादसादिसारथिषु।
४२ कुरुगार्हपत रिक्तगुर्वसूत-

जरत्यश्लीलदृढरूपा पारे-
वडवा तैतिलकद्रूः पण्य-
कम्बलो दासीभाराणां च।
४३ चतुर्थी तदर्थे।
४४ अर्थे।
४५ क्ते च।
४६ कर्मधारयेऽनिष्ठा।
४७ अहीने द्वितीया।
४८ तृतीया कर्मणि।
४९ गतिरनन्तरः।
५० तादौ च निति कृत्यतौ।
५१ तवै चान्तश्च युगपत्।
५२ अनिगन्तोऽञ्चतौ वप्रत्यये।
५३ न्यधी च।
५४ ईषदन्यतरस्याम्।
५५ हिरण्यपरिमाणं धने।
५६ प्रथमोऽचिरोपसम्पत्तौ।
५७ कतरकतमौ कर्मधारये।
५८ आर्यो ब्राह्मणकुमारयोः।
५९ राजा च।
६० षष्ठी प्रत्येनसि।
६१ क्ते नित्यार्थे।
६२ ग्रामः शिल्पिनि।
६३ राजा च प्रशंसायाम्।
६४ आदिरुदात्तः।
६५ सप्तमीहारिणौ धर्म्येऽहरणे।
६६ युक्ते च।
६७ विभाषाध्यक्षे।
६८ पापं च शिल्पिनि।
६९ गोत्रान्तेवासिमाणवब्राह्मणेषु
क्षेपे।
७० अङ्गानि मैरेये।
७१ भक्ताख्यास्तदर्थेषु।
७२ गोबिडालसिंहसैन्धवेषूपमाने।
७३ अके जीविकार्थे।
७४ प्राचां क्रीडायाम्।
७५ अणि नियुक्ते।
७६ शिल्पिनि चाकृञः।
७७ सञ्ज्ञायां च।
७८ गोतन्तियवं पाले।
७९ णिनि।
८० उपमानं शब्दार्थप्रकृतावेव।
८१ युक्तारोह्यादयश्च।
८२ दीर्घकाशतुषभ्राष्ट्रवटं जे।
८३ अन्त्यात्पूर्वं बह्वचः।
८४ ग्रामेऽनिवसन्तः।
८५ घोषादिषु च।
८६ छात्र्यादयः शालायाम्।
८७ प्रस्थेऽवृद्धमकर्क्यादीनाम्।
८८ मालादीनां च।
८९ अमहन्नवं नगरेऽनुदीचाम्।
९० अर्मे चावर्णं द्व्यच्त्र्यच्।
९१ न भूताधिकसञ्जीवमद्राश्म-
कज्जलम्।

९२ अन्तः।
९३ सर्वं गुणकार्त्स्न्ये।
९४ सञ्ज्ञायां गिरिनिकाययोः।
९५ कुमार्यां वयसि।
९६ उदकेऽकेवले।
९७ द्विगौ क्रतौ।
९८ सभायां नपुंसके।
९९ पुरे प्राचाम्।
१०० अरिष्टगौडपूर्वे च।
१०१ न हास्तिनफलकमार्देयाः।
१०२ कुसूलकूपकुम्भशालं बिले।
१०३ दिक्शब्दा ग्रामजनपदाख्यान-चानराटेषु।
१०४ आचार्योपसर्जनश्चान्ते-वासिनि।
१०५ उत्तरपदवृद्धौ सर्वं च।
१०६ बहुव्रीहौ विश्वं सञ्ज्ञायाम्।
१०७ उदराश्वेषुषु।
१०८ क्षेपे।
१०९ नदी बन्धुनि।
११० निष्ठोपसर्गपूर्वमन्य-तरस्याम्।
१११ उत्तरपदादिः।
११२ कर्णो वर्णलक्षणात्।
११३ सञ्ज्ञौपम्ययोश्च।
११४ कण्ठपृष्ठग्रीवाजङ्घं च।
११५ शृङ्गमवस्थायां च।
११६ नञो जरमरमित्रमृताः।
११७ सोर्मनसी अलोमोषसी।
११८ क्रत्वादयश्च।
११९ आद्युदात्तं द्व्यच्छन्दसि।
१२० वीरवीर्यौ च।
१२१ कूलतीरतूलमूलशालाक्ष-सममव्ययीभावे।
१२२ कंसमन्थशूर्पपाय्यकाण्डं द्विगौ।
१२३ तत्पुरुषे शालायां नपुंसके।
१२४ कन्था च।
१२५ आदिश्चिहणादीनाम्।
१२६ चेलखेटकटुककाण्डं गर्हायाम्।
१२७ चीरमुपमानम्।
१२८ पललसूपशाकं मिश्रे।
१२९ कूलसूदस्थलकर्षाः सञ्ज्ञायाम्।
१३० अकर्मधारये राज्यम्।
१३१ वर्ग्यादयश्च।
१३२ पुत्रः पुम्भ्यः।
१३३ नाचार्यराजर्त्विक्संयुक्त-ज्ञात्याख्येभ्यः।
१३४ चूर्णादीन्यप्राणिषष्ठ्याः।
१३५ षट् च काण्डादीनि।
१३६ कुण्डं वनम्।
१३७ प्रकृत्या भगालम्।
१३८ शितेर्नित्याबह्वज्बहुव्रीहाव-भसत्।

१३९ गतिकारकोपपदात्कृत्।
१४० उभे वनस्पत्यादिषु युगपत्।
१४१ देवताद्वन्द्वे च।
१४२ नोत्तरपदेऽनुदात्तादाव-
पृथिवीरुद्रपूषमन्थिषु।
१४३ अन्तः।
१४४ थाथघञ्क्ताजबित्रकाणाम्।
१४५ सूपमानात्क्तः।
१४६ सञ्ज्ञायामनाचितादीनाम्।
१४७ प्रवृद्धादीनां च।
१४८ कारकाद् दत्तश्रुतयोरेवाशिषि।
१४९ इत्थम्भूतेन कृतमिति च।
१५० अनो भावकर्मवचनः।
१५१ मन्क्तिन्व्याख्यानशयनासन-
स्थानयाजकादिक्रीताः।
१५२ सप्तम्याः पुण्यम्।
१५३ ऊनार्थकलहं तृतीयायाः।
१५४ मिश्रं चानुपसर्गमसन्धौ।
१५५ नञो गुणप्रतिषेधे सम्पाद्यर्ह-
हितालमर्थास्तद्धिताः।
१५६ ययतोश्चातदर्थे।
१५७ अच्कावशक्तौ।
१५८ आक्रोशे च।
१५९ सञ्ज्ञायाम्।
१६० कृत्योकेष्णुच्चार्वादयश्च।
१६१ विभाषा तृन्नन्नतीक्ष्ण-
शुचिषु।
१६२ बहुव्रीहाविदमेतत्तद्भ्यः
प्रथमपूरणयोः क्रियागणने।
१६३ सङ्ख्यायाः स्तनः।
१६४ विभाषा छन्दसि।
१६५ सञ्ज्ञायां मित्राजिनयोः।
१६६ व्यवायिनोऽन्तरम्।
१६७ मुखं स्वाङ्गम्।
१६८ नाव्ययदिक्शब्दगोमहत्-
स्थूलमुष्टिपृथुवत्सेभ्यः।
१६९ निष्ठोपमानादन्यतरस्याम्।
१७० जातिकालसुखादिभ्योऽ-
नाच्छादनात्क्तोऽकृतमित-
प्रतिपन्नाः।
१७१ वा जाते।
१७२ नञ्सुभ्याम्।
१७३ कपि पूर्वम्।
१७४ ह्रस्वान्तेऽन्त्यात्पूर्वम्।
१७५ बहोर्नञ्वदुत्तरपदभूम्नि।
१७६ न गुणादयोऽवयवाः।
१७७ उपसर्गात्स्वाङ्गं ध्रुवमपर्शु।
१७८ वनं समासे।
१७९ अन्तः।
१८० अन्तश्च।
१८१ न निविभ्याम्।
१८२ परेरभितोभावि मण्डलम्।
१८३ प्रादस्वाङ्गं सञ्ज्ञायाम्।
१८४ निरुदकादीनि च।

१८५ अभेर्मुखम्।
१८६ अपाच्च।
१८७ स्फिगपूतवीणाञ्जोऽध्वकुक्षिसीरनामनाम च।
१८८ अधेरुपरिस्थम्।
१८९ अनोरप्रधानकनीयसी।
१९० पुरुषश्चान्वादिष्टः।
१९१ अतेरकृत्पदे।
१९२ नेरनिधाने।
१९३ प्रतेरंश्वादयस्तत्पुरुषे।
१९४ उपाद् द्व्यजजिनमगौरादयः।
१९५ सोरवक्षेपणे।
१९६ विभाषोत्पुच्छे।
१९७ द्वित्रिभ्यां पाद्दन्मूर्धसु बहुव्रीहौ।
१९८ सक्थं चाक्रान्तात्।
१९९ परादिश्छन्दसि बहुलम्।

--०--

तृतीयः पादः

१ अलुगुत्तरपदे।
२ पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः।
३ ओजःसहोऽम्भस्तमसस् तृतीयायाः।
४ मनसः सञ्ज्ञायाम्।
५ आज्ञायिनि च।
६ आत्मनश्च।
७ वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः परस्य च।
८ हलदन्तात्सप्तम्याः सञ्ज्ञायाम्।
९ कारनाम्नि च प्राचां हलादौ।
१० मध्याद् गुरौ।
११ अमूर्धमस्तकात्स्वाङ्गाद-कामे।
१२ बन्धे च विभाषा।
१३ तत्पुरुषे कृति बहुलम्।
१४ प्रावृट्शरत्कालदिवां जे।
१५ विभाषा वर्षक्षरशरवरात्।
१६ घकालतनेषु कालनाम्नः।
१७ शयवासवासिष्वकालात्।
१८ नेन्सिद्धबध्नातिषु च।
१९ स्थे च भाषायाम्।
२० षष्ठ्या आक्रोशे।
२१ पुत्रेऽन्यतरस्याम्।
२२ ऋतो विद्यायोनिसम्बन्धेभ्यः।
२३ विभाषा स्वसृपत्योः।
२४ आनङ् ऋतो द्वन्द्वे।
२५ देवताद्वन्द्वे च।
२६ ईदग्नेः सोमवरुणयोः।
२७ इद् वृद्धौ।
२८ दिवो द्यावा।
२९ दिवसश्च पृथिव्याम्।
३० उषासोषसः।
३१ मातरपितरावुदीचाम्।
३२ पितरामातरा चच्छन्दसि।
३३ स्त्रियाः पुंवद् भाषितपुंस्कादनूङ्

समानाधिकरणे स्त्रियाम-
पूरणीप्रियादिषु।
३४ तसिलादिष्वाकृत्वसुचः।
३५ क्यङ्मानिनोश्च।
३६ न कोपधायाः।
३७ सञ्ज्ञापूरण्योश्च।
३८ वृद्धिनिमित्तस्य च तद्धितस्या-
रक्तविकारे।
३९ स्वाङ्गाच्चेतः।
४० जातेश्च।
४१ पुंवत्कर्मधारयजातीय-
देशीयेषु।
४२ घरूपकल्पचेलड्ब्रुवगोत्रमत-
हतेषु ङ्योऽनेकाचो ह्रस्वः।
४३ नद्याः शेषस्यान्यतरस्याम्।
४४ उगितश्च।
४५ आन्महतः समानाधिकरण-
जातीययोः।
४६ द्व्यष्टनः सङ्ख्यायामबहु-
व्रीह्यशीत्योः।
४७ त्रेस्त्रयः।
४८ विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ
सर्वेषाम्।
४९ हृदयस्य हृल्लेखयदण्लासेषु।
५० वा शोकष्यञ्रोगेषु।
५१ पादस्य पदाज्यातिगोपहतेषु।
५२ पद् यत्यतदर्थे।
५३ हिमकाषिहतिषु च।
५४ ऋचः शे।
५५ वा घोषमिश्रशब्देषु।
५६ उदकस्योदः सञ्ज्ञायाम्।
५७ पेषंवासवाहनधिषु च।
५८ एकहलादौ पूरयितव्येऽन्य-
तरस्याम्।
५९ मन्थौदनसक्तुबिन्दुवज्रभार-
हारवीवधगाहेषु च।
६० इको ह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य।
६१ एक तद्धिते च।
६२ ङ्यापोः सञ्ज्ञाछन्दसोर्बहुलम्।
६३ त्वे च।
६४ इष्टकेषीकामालानां
चिततूलभारिषु।
६५ खित्यनव्ययस्य।
६६ अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम्।
६७ इच एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च।
६८ वाचंयमपुरन्दरौ च।
६९ कारे सत्यागदस्य।
७० श्येनतिलस्य पाते ञे।
७१ रात्रेः कृति विभाषा।
७२ नलोपो नञः।
७३ तस्मान्नुडचि।
७४ नभ्राण्नपान्नवेदानासत्या-
नमुचिनकुलनखनपुंसक-
नक्षत्रनक्रनाकेषु प्रकृत्या।

७५ एकादिश्चैकस्य चादुक्।
७६ नगोऽप्राणिष्वन्यतरस्याम्।
७७ सहस्य सः सञ्ज्ञायाम्।
७८ ग्रन्थान्ताधिके च।
७९ द्वितीये चानुपाख्ये।
८० अव्ययीभावे चाकाले।
८१ वोपसर्जनस्य।
८२ प्रकृत्याशिषि।
८३ समानस्य छन्दस्यमूर्ध-प्रभृत्युदर्केषु।
८४ ज्योतिर्जनपदरात्रिनाभिनाम-गोत्ररूपस्थानवर्णवयोवचन-बन्धुषु।
८५ चरणे ब्रह्मचारिणि।
८६ तीर्थे ये।
८७ विभाषोदरे।
८८ दृग्दृशवतुषु।
८९ इदङ्किमोरीश्की।
९० आ सर्वनाम्नः।
९१ विष्वग्देवयोश्च टेरद्र्यञ्चतौ वप्रत्यये।
९२ समः समि।
९३ तिरसस्तिर्यलोपे।
९४ सहस्य सध्रिः।
९५ सध मादस्थयोश्छन्दसि।
९६ द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत्।
९७ ऊदनोर्देशे।
९८ अषष्ठ्यतृतीयास्थस्यान्यस्य दुगाशीराशास्थास्थितोत्-सुकोतिकारकरागच्छेषु।
९९ अर्थे विभाषा।
१०० कोः कत्तत्पुरुषेऽचि।
१०१ रथवदयोश्च।
१०२ तृणे च जातौ।
१०३ का पथ्यक्षयोः।
१०४ ईषदर्थे।
१०५ विभाषा पुरुषे।
१०६ कवं चोष्णे।
१०७ पथि चच्छन्दसि।
१०८ पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्।
१०९ सङ्ख्याविसाय-पूर्वस्याह्नस्याहन्नन्यतरस्यां ङौ।
११० ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।
१११ सहिवहोरोदवर्णस्य।
११२ साढ्यै साढ्वा साढेति निगमे।
११३ संहितायाम्।
११४ कर्णे लक्षणस्याविष्टाष्टपञ्च-मणिभिन्नच्छिन्नच्छिद्रस्रुव-स्वस्तिकस्य।
११५ नहिवृतिवृषिव्यधिरुचि-सहितनिषु क्वौ।
११६ वनगिर्योः सञ्ज्ञायां कोटर-किंशुलुकादीनाम्।
११७ वले।

११८ मतौ बह्वचोऽनजिरादीनाम्।
११९ शरादीनां च।
१२० इको वहेऽपीलोः।
१२१ उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम्।
१२२ इकः काशे।
१२३ दस्ति।
१२४ अष्टनः सञ्ज्ञायाम्।
१२५ छन्दसि च।
१२६ चितेः कपि।
१२७ विश्वस्य वसुराटोः।
१२८ नरे सञ्ज्ञायाम्।
१२९ मित्रे चर्षौ।
१३० मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रियविश्व-देव्यस्य मतौ।
१३१ ओषधेश्च विभक्ताव-प्रथमायाम्।
१३२ ऋचि तुनुघमक्षुतङ्कु-त्रोरुष्याणाम्।
१३३ इकः सुञि।
१३४ द्व्यचोऽतस्तिङः।
१३५ निपातस्य च।
१३६ अन्येषामपि दृश्यते।
१३७ चौ।
१३८ सम्प्रसारणस्य।

--०--

चतुर्थः पादः

१ अङ्गस्य।
२ हलः।
३ नामि।
४ न तिसृचतसृ।
५ छन्दस्युभयथा।
६ नृ च।
७ नोपधायाः।
८ सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ।
९ वा षपूर्वस्य निगमे।
१० सान्तमहतः संयोगस्य।
११ अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृ-क्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तॄणाम्।
१२ इन्हन्पूषार्यम्णां शौ।
१३ सौ च।
१४ अत्वसन्तस्य चाधातोः।
१५ अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति।
१६ अज्झनगमां सनि।
१७ तनोतेर्विभाषा।
१८ क्रमश्च क्त्वि।
१९ च्छ्वोः शूडनुनासिके च।
२० ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुप-धायाश्च।
२१ राल्लोपः।
२२ असिद्धवदत्राभात्।
२३ श्नान्नलोपः।

२४ अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति।
२५ दंशसञ्जस्वञ्जां शपि।
२६ रञ्जेश्च।
२७ घञि च भावकरणयोः।
२८ स्यदो जवे।
२९ अवोदैधोद्मप्रश्रथहिमश्रथाः।
३० नाञ्चेः पूजायाम्।
३१ क्त्वि स्कन्दिस्यन्दोः।
३२ जान्तनशां विभाषा।
३३ भञ्जेश्च चिणि।
३४ शास इदङ्हलोः।
३५ शा हौ।
३६ हन्तेर्जः।
३७ अनुदात्तोपदेशवनति-तनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति।
३८ वा ल्यपि।
३९ न क्तिचि दीर्घश्च।
४० गमः क्वौ।
४१ विड्वनोरनुनासिकस्यात्।
४२ जनसनखनां सञ्झलोः।
४३ ये विभाषा।
४४ तनोतेर्यकि।
४५ सनः क्तिचि लोपश्चास्यान्य-तरस्याम्।
४६ आर्धधातुके।
४७ भ्रस्जो रोपधयो रमन्यतरस्याम्।
४८ अतो लोपः।
४९ यस्य हलः।
५० क्यस्य विभाषा।
५१ णेरनिटि।
५२ निष्ठायां सेटि।
५३ जनिता मन्त्रे।
५४ शमिता यज्ञे।
५५ अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु।
५६ ल्यपि लघुपूर्वात्।
५७ विभाषापः।
५८ युप्लुवोर्दीर्घश्छन्दसि।
५९ क्षियः।
६० निष्ठायामण्यदर्थे।
६१ वाक्रोशदैन्ययोः।
६२ स्यसिच्सीयुट्तासिषु भाव-कर्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रह-दृशां वा चिण्वदिट् च।
६३ दीङो युडचि क्ङिति।
६४ आतो लोप इटि च।
६५ ईद् यति।
६६ घुमास्थागापाजहातिसां हलि।
६७ एर्लिङि।
६८ वान्यस्य संयोगादेः।
६९ न ल्यपि।
७० मयतेरिदन्यतरस्याम्।

७१ लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः।
७२ आडजादीनाम्।
७३ छन्दस्यपि दृश्यते।
७४ न माङ्योगे।
७५ बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि।
७६ इरयो रे।
७७ अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ।
७८ अभ्यासस्यासवर्णे।
७९ स्त्रियाः।
८० वाम्शसोः।
८१ इणो यण्।
८२ एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य।
८३ ओः सुपि।
८४ वर्षाभ्वश्च।
८५ न भूसुधियोः।
८६ छन्दस्युभयथा।
८७ हुश्नुवोः सार्वधातुके।
८८ भुवो वुग्लुङ्लिटोः।
८९ ऊदुपधाया गोहः।
९० दोषो णौ।
९१ वा चित्तविरागे।
९२ मितां ह्रस्वः।
९३ चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम्।
९४ खचि ह्रस्वः।
९५ ह्लादो निष्ठायाम्।
९६ छादेर्घेऽद्व्युपसर्गस्य।
९७ इस्मन्त्रन्क्विषु च।
९८ गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि।
९९ तनिपत्योश्छन्दसि।
१०० घसिभसोर्हलि च।
१०१ हुझल्भ्यो हेर्धिः।
१०२ श्रुशृणुपॄकृवृभ्यश्छन्दसि।
१०३ अङितश्च।
१०४ चिणो लुक्।
१०५ अतो हेः।
१०६ उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात्।
१०७ लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः।
१०८ नित्यं करोतेः।
१०९ ये च।
११० अत उत्सार्वधातुके।
१११ श्नसोरल्लोपः।
११२ श्नाभ्यस्तयोरातः।
११३ ई हल्यघोः।
११४ इद् दरिद्रस्य।
११५ भियोऽन्यतरस्याम्।
११६ जहातेश्च।
११७ आ च हौ।
११८ लोपो यि।
११९ घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च।
१२० अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि।

१२१ थलि च सेटि।
१२२ तॄफलभजत्रपश्च।
१२३ राधो हिंसायाम्।
१२४ वा जॄभ्रमुत्रसाम्।
१२५ फणां च सप्तानाम्।
१२६ न शसददवादिगुणानाम्।
१२७ अर्वणस्त्रसावनञः।
१२८ मघवा बहुलम्।
१२९ भस्य।
१३० पादः पत्।
१३१ वसोः सम्प्रसारणम्।
१३२ वाह ऊठ्।
१३३ श्वयुवमघोनामतद्धिते।
१३४ अल्लोपोऽनः।
१३५ षपूर्वहन्धृतराज्ञामणि।
१३६ विभाषा ङिश्योः।
१३७ न संयोगाद् वमन्तात्।
१३८ अचः।
१३९ उद ईत्।
१४० आतो धातोः।
१४१ मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः।
१४२ ति विंशतेर्डिति।
१४३ टेः।
१४४ नस्तद्धिते।
१४५ अह्नष्टखोरेव।
१४६ ओर्गुणः।
१४७ ढे लोपोऽकद्र्वाः।
१४८ यस्येति च।
१४९ सूर्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानां य उपधायाः।
१५० हलस्तद्धितस्य।
१५१ आपत्यस्य च तद्धितेऽनाति।
१५२ क्यच्व्योश्च।
१५३ बिल्वकादिभ्यश्छस्य लुक्।
१५४ तुरिष्ठेमेयःसु।
१५५ टेः।
१५६ स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः।
१५७ प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरु-वृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थ-स्फवर्बंहिगर्वर्षित्रब्द्राघिवृन्दाः।
१५८ बहोर्लोपो भू च बहोः।
१५९ इष्ठस्य यिट् च।
१६० ज्यादादीयसः।
१६१ र ऋतो हलादेर्लघोः।
१६२ विभाषर्जोश्छन्दसि।
१६३ प्रकृत्यैकाच्।
१६४ इनण्यनपत्ये।
१६५ गाथिविदथिकेशिगणि-पणिनश्च।
१६६ संयोगादिश्च।
१६७ अन्।
१६८ ये चाभावकर्मणोः।
१६९ आत्माध्वानौ खे।

१७० न मपूर्वोऽपत्येऽवर्मणः।
१७१ ब्राह्मोऽजातौ।
१७२ कार्मस्ताच्छील्ये।
१७३ औक्षमनपत्ये।
१७४ दाण्डिनायनहास्तिनायनाथर्वणिक-
जैह्माशिनेयवाशिनायनि-
भ्रौणहत्यधैवत्यसारवैक्ष्वाक-
मैत्रेयहिरण्मयानि।
१७५ ऋत्व्यवास्त्व्यवास्त्वमाध्वी-
हिरण्ययानिच्छन्दसि।

सप्तमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ युवोरनाकौ।
२ आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्।
३ झोऽन्तः।
४ अदभ्यस्तात्।
५ आत्मनेपदेष्वनतः।
६ शीङो रुट्।
७ वेत्तेर्विभाषा।
८ बहुलं छन्दसि।
९ अतो भिस ऐस्।
१० बहुलं छन्दसि।
११ नेदमदसोरकोः।
१२ टाङसिङसामिनात्स्याः।
१३ ङेर्यः।
१४ सर्वनाम्नः स्मै।
१५ ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ।
१६ पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा।
१७ जसः शी।
१८ औङ आपः।
१९ नपुंसकाच्च।
२० जश्शसोः शिः।
२१ अष्टाभ्य औश्।
२२ षड्भ्यो लुक्।
२३ स्वमोर्नपुंसकात्।
२४ अतोऽम्।
२५ अद्ड् डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः।
२६ नेतराच्छन्दसि।
२७ युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश्।
२८ ङेप्रथमयोरम्।
२९ शसो न।
३० भ्यसो भ्यम्।
३१ पञ्चम्या अत्।
३२ एकवचनस्य च।
३३ साम आकम्।
३४ आत औ णलः।
३५ तुह्योस्तातङाशिष्यन्य-
तरस्याम्।

३६ विदेः शतुर्वसुः।
३७ समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्।
३८ क्त्वापिच्छन्दसि।
३९ सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडा-ड्यायाजालः।
४० अमो मश्।
४१ लोपस्त आत्मनेपदेषु।
४२ ध्वमो ध्वात्।
४३ यजध्वैनमिति च।
४४ तस्य तात्।
४५ तप्तनप्तनथनाश्च।
४६ इदन्तो मसि।
४७ क्त्वो यक्।
४८ इष्ट्वीनमिति च।
४९ स्नात्व्यादयश्च।
५० आज्जसेरसुक्।
५१ अश्वक्षीरवृषलवणानामात्म-प्रीतौ क्यचि।
५२ आमि सर्वनाम्नः सुट्।
५३ त्रेस्त्रयः।
५४ ह्रस्वनद्यापो नुट्।
५५ षट्चतुर्भ्यश्च।
५६ श्रीग्रामण्योश्छन्दसि।
५७ गोः पादान्ते।
५८ इदितो नुम्धातोः।
५९ शे मुचादीनाम्।
६० मस्जिनशोर्झलि।
६१ रधिजभोरचि।
६२ नेट्यलिटि रधेः।
६३ रभेरशब्लिटोः।
६४ लभेश्च।
६५ आङो यि।
६६ उपात्प्रशंसायाम्।
६७ उपसर्गात्खल्घञोः।
६८ न सुदुर्भ्यां केवलाभ्याम्।
६९ विभाषा चिण्णमुलोः।
७० उगिदचां सर्वनामस्थानेऽ-धातोः।
७१ युजेरसमासे।
७२ नपुंसकस्य झलचः।
७३ इकोऽचि विभक्तौ।
७४ तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य।
७५ अस्थिदधि-सक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः।
७६ छन्दस्यपि दृश्यते।
७७ ई च द्विवचने।
७८ नाभ्यस्ताच्छतुः।
७९ वा नपुंसकस्य।
८० आच्छीनद्योर्नुम्।
८१ शप्श्यनोर्नित्यम्।
८२ सावनडुहः।
८३ दृक्स्ववस्स्वतवसां छन्दसि।
८४ दिव औत्।

८५ पथिमथ्यृभुक्षामात्।
८६ इतोऽत्सर्वनामस्थाने।
८७ थो न्थः।
८८ भस्य टेर्लोपः।
८९ पुंसोऽसुङ्।
९० गोतो णित्।
९१ णलुत्तमो वा।
९२ सख्युरसम्बुद्धौ।
९३ अनङ् सौ।
९४ ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च।
९५ तृज्वत्क्रोष्टुः।
९६ स्त्रियां च।
९७ विभाषा तृतीयादिष्वचि।
९८ चतुरनडुहोरामुदात्तः।
९९ अम्सम्बुद्धौ।
१०० ऋत इद्धातोः।
१०१ उपधायाश्च।
१०२ उदोष्ठ्यपूर्वस्य।
१०३ बहुलं छन्दसि।

--०--

द्वितीयः पादः

१ सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु।
२ अतो ल्रान्तस्य।
३ वदव्रजहलन्तस्याचः।
४ नेटि।
५ ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणि-श्व्येदिताम्।
६ ऊर्णोतेर्विभाषा।
७ अतो हलादेर्लघोः।
८ नेड् वशि कृति।
९ तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च।
१० एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्।
११ श्र्युकः किति।
१२ सनि ग्रहगुहोश्च।
१३ कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि।
१४ श्वीदितो निष्ठायाम्।
१५ यस्य विभाषा।
१६ आदितश्च।
१७ विभाषा भावादिकर्मणोः।
१८ क्षुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्ट-विरिब्धफाण्टबाढानि मन्थमनस्तमःसक्ताविस्पष्ट-स्वरानायासभृशेषु।
१९ धृषिशसी वैयात्ये।
२० दृढः स्थूलबलयोः।
२१ प्रभौ परिवृढः।
२२ कृच्छ्रगहनयोः कषः।
२३ घुषिरविशब्दने।
२४ अर्देः सन्निविभ्यः।
२५ अभेश्चाविदूर्ये।
२६ णेरध्ययने वृत्तम्।
२७ वा दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्टच्-छन्नज्ञप्ताः।
२८ रुष्यमत्वरसङ्घुषास्वनाम्।

२९ हृषेर्लोमसु।
३० अपचितश्च।
३१ ह्रु ह्वरेश्छन्दसि।
३२ अपरिह्वृताश्च।
३३ सोमे ह्वरितः।
३४ ग्रसितस्कभितस्तभितोत्तभित-चत्तविकस्ता विशस्तृशंस्तृ-शास्तृतरुतृतरूतृवरुतृवरूतृ-वरूत्रीरुज्ज्वलितिक्षरिति-क्षमितिवमित्यमितीति च।
३५ आर्धधातुकस्येड् वलादेः।
३६ स्नुक्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते।
३७ ग्रहोऽलिटि दीर्घः।
३८ वृतो वा।
३९ न लिङि।
४० सिचि च परस्मैपदेषु।
४१ इट् सनि वा।
४२ लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु।
४३ ऋतश्च संयोगादेः।
४४ स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा।
४५ रधादिभ्यश्च।
४६ निरः कुषः।
४७ इण्निष्ठायाम्।
४८ तीषसहलुभरुषरिषः।
४९ सनीवन्तर्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्वृ-यूर्णुभरज्ञपिसनाम्।
५० क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः।
५१ पूङश्च।
५२ वसतिक्षुधोरिट्।
५३ अञ्चेः पूजायाम्।
५४ लुभो विमोहने।
५५ जॄव्रश्च्योः क्त्वि।
५६ उदितो वा।
५७ सेऽसिचि कृतचृतच्छृदतृद-नृतः।
५८ गमेरिट् परस्मैपदेषु।
५९ न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः।
६० तासि च क्लृपः।
६१ अचस्तास्वत्थल्यनिटो नित्यम्।
६२ उपदेशेऽत्वतः।
६३ ऋतो भारद्वाजस्य।
६४ बभूथाततन्थजगृभ्मववर्थेति निगमे।
६५ विभाषा सृजिदृशोः।
६६ इडत्त्यर्तिव्ययतीनाम्।
६७ वस्वेकाजाद्घसाम्।
६८ विभाषा गमहनविदविशाम्।
६९ सनिंससनिवांसम्।
७० ऋद्धनोः स्ये।
७१ अञ्जेः सिचि।
७२ स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु।

७३ यमरमनमातां सक्च।
७४ स्मिपूङ्रञ्ज्वशां सनि।
७५ किरश्च पञ्चभ्यः।
७६ रुदादिभ्यः सार्वधातुके।
७७ ईशः से।
७८ ईडजनोर्ध्वे च।
७९ लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य।
८० अतो येयः।
८१ आतो ङितः।
८२ आने मुक्।
८३ ईदासः।
८४ अष्टन आ विभक्तौ।
८५ रायो हलि।
८६ युष्मदस्मदोरनादेशे।
८७ द्वितीयायां च।
८८ प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम्।
८९ योऽचि।
९० शेषे लोपः।
९१ मपर्यन्तस्य।
९२ युवावौ द्विवचने।
९३ यूयवयौ जसि।
९४ त्वाहौ सौ।
९५ तुभ्यमह्यौ ङयि।
९६ तवममौ ङसि।
९७ त्वमावेकवचने।
९८ प्रत्ययोत्तरपदयोश्च।
९९ त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ।
१०० अचि र ऋतः।
१०१ जराया जरसन्यतरस्याम्।
१०२ त्यदादीनामः।
१०३ किमः कः।
१०४ कु तिहोः।
१०५ क्वाति।
१०६ तदोः सः सावनन्त्ययोः।
१०७ अदस औ सुलोपश्च।
१०८ इदमो मः।
१०९ दश्च।
११० यः सौ।
१११ इदोऽय्पुंसि।
११२ अनाप्यकः।
११३ हलि लोपः।
११४ मृजेर्वृद्धिः।
११५ अचो ञ्णिति।
११६ अत उपधायाः।
११७ तद्धितेष्वचामादेः।
११८ किति च।

--०--

तृतीयः पादः

१ देविकाशिंशपादित्यवाड्-दीर्घसत्रश्रेयसामात्।
२ केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः।

३ न य्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच्।
४ द्वारादीनां च।
५ न्यग्रोधस्य च केवलस्य।
६ न कर्मव्यतिहारे।
७ स्वागतादीनां च।
८ श्वादेरिञि।
९ पदान्तस्यान्यतरस्याम्।
१० उत्तरपदस्य।
११ अवयवाद् ऋतोः।
१२ सुसर्वार्धाज्जनपदस्य।
१३ दिशोऽमद्राणाम्।
१४ प्राचां ग्रामनगराणाम्।
१५ सङ्ख्यायाः संवत्सरसङ्ख्यस्य च।
१६ वर्षस्याभविष्यति।
१७ परिमाणान्तस्यासञ्ज्ञाशाणयोः।
१८ जे प्रोष्ठपदानाम्।
१९ हृद्भगसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च।
२० अनुशतिकादीनां च।
२१ देवताद्वन्द्वे च।
२२ नेन्द्रस्य परस्य।
२३ दीर्घाच्च वरुणस्य।
२४ प्राचां नगरान्ते।
२५ जङ्गलधेनुवलजान्तस्य विभाषितमुत्तरम्।
२६ अर्धात्परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा।
२७ नातः परस्य।
२८ प्रवाहणस्य ढे।
२९ तत्प्रत्ययस्य च।
३० नञः शुचीश्वरक्षेत्रज्ञ-कुशलनिपुणानाम्।
३१ यथातथयथापुरयोः पर्यायेण।
३२ हनस्तोऽचिण्णलोः।
३३ आतो युक्चिण्कृतोः।
३४ नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः।
३५ जनिवध्योश्च।
३६ अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुग्णौ।
३७ शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक्।
३८ वो विधूनने जुक्।
३९ लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहविपातने।
४० भियो हेतुभये षुक्।
४१ स्फायो वः।
४२ शदेरगतौ तः।
४३ रुहः पोऽन्यतरस्याम्।
४४ प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः।
४५ न यासयोः।
४६ उदीचामातः स्थाने यकपूर्वायाः।
४७ भस्त्रैषाजाज्ञाद्वास्वा नञ्पूर्वाणामपि।

४८ अभाषितपुंस्काच्च।
४९ आदाचार्याणाम्।
५० ठस्येकः।
५१ इसुसुक्तान्तात्कः।
५२ चजोः कु घिण्ण्यतोः।
५३ न्यङ्क्वादीनां च।
५४ हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु।
५५ अभ्यासाच्च।
५६ हेरचङि।
५७ सन्लिटोर्जेः।
५८ विभाषा चेः।
५९ न क्वादेः।
६० अजिव्रज्योश्च।
६१ भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयोः।
६२ प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे।
६३ वञ्चेर्गतौ।
६४ ओक उचः के।
६५ ण्य आवश्यके।
६६ यजयाचरुचप्रवचर्चश्च।
६७ वचोऽशब्दसञ्ज्ञायाम्।
६८ प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे।
६९ भोज्यं भक्ष्ये।
७० घोर्लोपो लेटि वा।
७१ ओतः श्यनि।
७२ क्सस्याचि।
७३ लुग्वा दुहदिहलिहगुहामात्मने-पदे दन्त्ये।

७४ शमामष्टानां दीर्घः श्यनि।
७५ ष्ठिवुक्लमुचमां शिति।
७६ क्रमः परस्मैपदेषु।
७७ इषुगमियमां छः।
७८ पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्ति-सर्तिशदसदां पिबजिघ्रधम-तिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छधौ-शीयसीदाः।
७९ ज्ञाजनोर्जा।
८० प्वादीनां ह्रस्वः।
८१ मीनातेर्निगमे।
८२ मिदेर्गुणः।
८३ जुसि च।
८४ सार्वधातुकार्धधातुकयोः।
८५ जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु।
८६ पुगन्तलघूपधस्य च।
८७ नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके।
८८ भूसुवोस्तिङि।
८९ उतो वृद्धिर्लुकि हलि।
९० ऊर्णोतेर्विभाषा।
९१ गुणोऽपृक्ते।
९२ तृणह इम्।
९३ ब्रुव ईट्।
९४ यङो वा।
९५ तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके।
९६ अस्तिसिचोऽपृक्ते।

९७ बहुलं छन्दसि।
९८ रुदश्च पञ्चभ्यः।
९९ अड् गार्ग्यगालवयोः।
१०० अदः सर्वेषाम्।
१०१ अतो दीर्घो यञि।
१०२ सुपि च।
१०३ बहुवचने झल्येत्।
१०४ ओसि च।
१०५ आङि चापः।
१०६ सम्बुद्धौ च।
१०७ अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः।
१०८ ह्रस्वस्य गुणः।
१०९ जसि च।
११० ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः।
१११ घेर्ङिति।
११२ आण्नद्याः।
११३ याडापः।
११४ सर्वनाम्नः स्याड् ढ्रस्वश्च।
११५ विभाषा द्वितीया-
तृतीयाभ्याम्।
११६ ङेराम्नद्याम्नीभ्यः।
११७ इदुद्भ्याम्।
११८ औदच्च घेः।
११९ आङो नास्त्रियाम्।

--o--

चतुर्थः पादः

१ णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः।
२ नाग्लोपिशास्वृदिताम्।
३ भ्राजभासभाषदीपजीव-
मीलपीडामन्यतरस्याम्।
४ लोपः पिबतेरीच्
चाभ्यासस्य।
५ तिष्ठतेरित्।
६ जिघ्रतेर्वा।
७ उर्ऋत्।
८ नित्यं छन्दसि।
९ दयतेर्दिगि लिटि।
१० ऋतश्च संयोगादेर्गुणः।
११ ऋच्छत्यॄताम्।
१२ शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा।
१३ केऽणः।
१४ न कपि।
१५ आपोऽन्यतरस्याम्।
१६ ऋदृशोऽङि गुणः।
१७ अस्यतेस्थुक्।
१८ श्वयतेरः।
१९ पतः पुम्।
२० वच उम्।
२१ शीङः सार्वधातुके गुणः।
२२ अयङ् यि क्ङिति।
२३ उपसर्गाद् ध्रस्व ऊहतेः।
२४ एतेर्लिङि।
२५ अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः।
२६ च्वौ च।

२७ रीङ् ऋतः।
२८ रिङ् शयग्लिङ्क्षु।
२९ गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः।
३० यङि च।
३१ ई घ्राध्मोः।
३२ अस्य च्वौ।
३३ क्यचि च।
३४ अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षापिपासागर्धेषु।
३५ नच्छन्दस्यपुत्रस्य।
३६ दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृषण्यति रिषण्यति।
३७ अश्वाघस्यात्।
३८ देवसुम्नयोर्यजुषि काठके।
३९ कव्यध्वरपृतनस्यर्चि लोपः।
४० द्यतिस्यतिमास्थामित्ति किति।
४१ शाच्छोरन्यतरस्याम्।
४२ दधातेर्हिः।
४३ जहातेश्च क्त्वि।
४४ विभाषा छन्दसि।
४५ सुधितवसुधितनेमधितधिष्व-धिषीय च।
४६ दो दद् घोः।
४७ अच उपसर्गात्तः।
४८ अपो भि।
४९ सः स्यार्धधातुके।
५० तासस्त्योर्लोपः।
५१ रि च।
५२ ह एति।
५३ यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः।
५४ सनि मीमाघुरभलभशक-पतपदामच इस्।
५५ आप्ज्ञप्यृधामीत्।
५६ दम्भ इच्च।
५७ मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा।
५८ अत्र लोपोऽभ्यासस्य।
५९ ह्रस्वः।
६० हलादिः शेषः।
६१ शर्पूर्वाः खयः।
६२ कुहोश्चुः।
६३ न कवतेर्यङि।
६४ कृषेश्छन्दसि।
६५ दाधर्तिदर्धर्तिदर्धर्षिबोभूतु-तेतिक्तेऽलर्ष्यापनीफणत्-संसनिष्यदत्करिक्रत्कनिक्रदद्-भरिभ्रद्दविध्वतोदविद्युतत्-तरित्रतःसरीसृपतंवरीवृजन्-मर्मृज्यागनीगन्तीति च।
६६ उरत्।
६७ द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम्।
६८ व्यथो लिटि।
६९ दीर्घ इणः किति।
७० अत आदेः।
७१ तस्मान्नुड् द्विहलः।

७२ अश्नोतेश्च।
७३ भवतेरः।
७४ ससूवेति निगमे।
७५ निजां त्रयाणां गुणः श्लौ।
७६ भृञामित्।
७७ अर्तिपिपर्त्योश्च।
७८ बहुलं छन्दसि।
७९ सन्यतः।
८० ओः पुयण्ज्यपरे।
८१ स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्रवति-प्लवतिच्यवतीनां वा।
८२ गुणो यङ्लुकोः।
८३ दीर्घोऽकितः।
८४ नीग्वञ्चुस्रंसुध्वंसुभ्रंसुकस-पतपदस्कन्दाम्।
८५ नुगतोऽनुनासिकान्तस्य।
८६ जपजभदहदशभञ्जपशां च।
८७ चरफलोश्च।
८८ उत्परस्यातः।
८९ ति च।
९० रीगृदुपधस्य च।
९१ रुग्रिकौ च लुकि।
९२ ऋतश्च।
९३ सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे।
९४ दीर्घो लघोः।
९५ अत्स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तृ-स्पशाम्।
९६ विभाषा वेष्टिचेष्ट्योः।
९७ ई च गणः।

अष्टमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ सर्वस्य द्वे।
२ तस्य परमाम्रेडितम्।
३ अनुदात्तं च।
४ नित्यवीप्सयोः।
५ परेर्वर्जने।
६ प्रसमुपोदः पादपूरणे।
७ उपर्यध्यधसः सामीप्ये।
८ वाक्यादेरामन्त्रितस्यासूया-सम्मतिकोपकुत्सनभर्त्सनेषु।
९ एकं बहुव्रीहिवत्।
१० आबाधे च।
११ कर्मधारयवदुत्तरेषु।
१२ प्रकारे गुणवचनस्य।
१३ अकृच्छ्रे प्रियसुखयोरन्य-तरस्याम्।

१४ यथास्वे यथायथम्।
१५ द्वन्द्वं रहस्यमर्यादावचन-व्युत्क्रमणयज्ञपात्रप्रयोगाभि-व्यक्तिषु।
१६ पदस्य।
१७ पदात्।
१८ अनुदात्तं सर्वमपादादौ।
१९ आमन्त्रितस्य च।
२० युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थी-द्वितीयास्थयोर्वान्नावौ।
२१ बहुवचनस्य वस्नसौ।
२२ तेमयावेकवचनस्य।
२३ त्वामौ द्वितीयायाः।
२४ न चवाहाहैवयुक्ते।
२५ पश्यार्थैश्चानालोचने।
२६ सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा।
२७ तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः।
२८ तिङ्ङतिङः।
२९ न लुट्।
३० निपातैर्यद्यदिहन्तकुविन्नेच्-चेच्चण्कच्चिद्यत्रयुक्तम्।
३१ नह प्रत्यारम्भे।
३२ सत्यं प्रश्ने।
३३ अङ्गाप्रातिलोम्ये।
३४ हि च।
३५ छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम्।
३६ यावद्यथाभ्याम्।
३७ पूजायां नानन्तरम्।
३८ उपसर्गव्यपेतं च।
३९ तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम्।
४० अहो च।
४१ शेषे विभाषा।
४२ पुरा च परीप्सायाम्।
४३ नन्वित्यनुज्ञैषणायाम्।
४४ किं क्रियाप्रश्नेऽनुपसर्गम-प्रतिषिद्धम्।
४५ लोपे विभाषा।
४६ एहि मन्ये प्रहासे लृट्।
४७ जात्वपूर्वम्।
४८ किंवृत्तं च चिदुत्तरम्।
४९ आहो उताहो चानन्तरम्।
५० शेषे विभाषा।
५१ गत्यर्थलोटा लृण्न चेत्कारकं सर्वान्यत्।
५२ लोट् च।
५३ विभाषितं सोपसर्गमनुत्तमम्।
५४ हन्त च।
५५ आम एकान्तरमामन्त्रितम-नन्तिके।
५६ यद्धितुपरं छन्दसि।
५७ चनचिदिवगोत्रादितद्धिता-म्रेडितेष्वगतेः।
५८ चादिषु च।

५९ चवायोगे प्रथमा।
६० हेति क्षियायाम्।
६१ अहेति विनियोगे च।
६२ चाहलोप एवेत्यवधारणम्।
६३ चादिलोपे विभाषा।
६४ वैवावेति चच्छन्दसि।
६५ एकान्याभ्यां समर्थाभ्याम्।
६६ यद्वृत्तान्नित्यम्।
६७ पूजनात्पूजितमनुदात्तम्।
६८ सगतिरपि तिङ्।
६९ कुत्सने च सुप्यगोत्रादौ।
७० गतिर्गतौ।
७१ तिङि चोदात्तवति।
७२ आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत्।
७३ नामन्त्रिते समानाधिकरणे।
७४ सामान्यवचनं विभाषितं विशेषवचने।

--०--

द्वितीयः पादः

१ पूर्वत्रासिद्धम्।
२ नलोपः सुप्स्वरसञ्ज्ञातुग्विधिषु कृति।
३ न मु ने।
४ उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य।
५ एकादेश उदात्तेनोदात्तः।
६ स्वरितो वानुदात्ते पदादौ।
७ नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य।
८ न ङिसम्बुद्ध्योः।
९ मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः।
१० झयः।
११ सञ्ज्ञायाम्।
१२ आसन्दीवदष्ठीवच्चक्रीवत् कक्षीवद् रुमण्वच्चर्मण्वती।
१३ उदन्वानुदधौ च।
१४ राजन्वान्सौराज्ये।
१५ छन्दसीरः।
१६ अनो नुट्।
१७ नाद् घस्य।
१८ कृपो रो लः।
१९ उपसर्गस्यायतौ।
२० ग्रो यङि।
२१ अचि विभाषा।
२२ परेश्च घाङ्कयोः।
२३ संयोगान्तस्य लोपः।
२४ रात्सस्य।
२५ धि च।
२६ झलो झलि।
२७ ह्रस्वादङ्गात्।
२८ इट ईटि।
२९ स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।

३० चोः कुः।
३१ हो ढः।
३२ दादेर्धातोर्घः।
३३ वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्।
३४ नहो धः।
३५ आहस्थः।
३६ व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः।
३७ एकाचो बशो भष्झषन्तस्य स्ध्वोः।
३८ दधस्तथोश्च।
३९ झलां जशोऽन्ते।
४० झषस्तथोर्धोऽधः।
४१ षढोः कः सि।
४२ रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः।
४३ संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः।
४४ ल्वादिभ्यः।
४५ ओदितश्च।
४६ क्षियो दीर्घात्।
४७ श्योऽस्पर्शे।
४८ अञ्चोऽनपादाने।
४९ दिवोऽविजिगीषायाम्।
५० निर्वाणोऽवाते।
५१ शुषः कः।
५२ पचो वः।
५३ क्षायो मः।
५४ प्रस्त्योऽन्यतरस्याम्।
५५ अनुपसर्गात्फुल्लक्षीबकृशोल्लाघाः।
५६ नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीभ्योऽन्यतरस्याम्।
५७ न ध्याख्यापॄमूर्च्छिमदाम्।
५८ वित्तो भोगप्रत्यययोः।
५९ भित्तं शकलम्।
६० ऋणमाधमर्ण्ये।
६१ नसत्तनिषत्तानुत्तप्रतूर्तसूर्तगूर्तानि छन्दसि।
६२ क्विन्प्रत्ययस्य कुः।
६३ नशेर्वा।
६४ मो नो धातोः।
६५ म्वोश्च।
६६ ससजुषो रुः।
६७ अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च।
६८ अहन्।
६९ रोऽसुपि।
७० अम्नरूधरवरित्युभयथा छन्दसि।
७१ भुवश्च महाव्याहृतेः।
७२ वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः।
७३ तिप्यनस्तेः।
७४ सिपि धातो रुर्वा।
७५ दश्च।
७६ र्वोरुपधाया दीर्घ इकः।

७७ हलि च।
७८ उपधायां च।
७९ न भकुर्छुराम्।
८० अदसोऽसेर्दादु दो मः।
८१ एत ईद् बहुवचने।
८२ वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः।
८३ प्रत्यभिवादेऽशूद्रे।
८४ दूराद् धूते च।
८५ हैहेप्रयोगे हैहयोः।
८६ गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम्।
८७ ओमभ्यादाने।
८८ ये यज्ञकर्मणि।
८९ प्रणवष्टेः।
९० याज्यान्तः।
९१ ब्रूहिप्रेष्यश्रौषड्वौषडावहानामादेः।
९२ अग्नीत्प्रेषणे परस्य च।
९३ विभाषा पृष्टप्रतिवचने हेः।
९४ निगृह्यानुयोगे च।
९५ आम्रेडितं भर्त्सने।
९६ अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम्।
९७ विचार्यमाणानाम्।
९८ पूर्वं तु भाषायाम्।
९९ प्रतिश्रवणे च।
१०० अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः।
१०१ चिदिति चोपमार्थे प्रयुज्यमाने।
१०२ उपरि स्विदासीदिति च।
१०३ स्वरितमाम्रेडितेऽसूयासम्मतिकोपकुत्सनेषु।
१०४ क्षियाशीःप्रैषेषु तिङाकाङ्क्षम्।
१०५ अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः।
१०६ प्लुतावैच इदुतौ।
१०७ एचोऽप्रगृह्यस्यादूराद्धूते पूर्वस्यार्धस्यादुत्तरस्येदुतौ।
१०८ तयोर्य्वावचि संहितायाम्।

--०--

तृतीयः पादः

१ मतुवसो रु सम्बुद्धौ छन्दसि।
२ अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा।
३ आतोऽटि नित्यम्।
४ अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः।
५ समः सुटि।
६ पुमः खय्यम्परे।
७ नश्छव्यप्रशान्।
८ उभयथर्क्षु।
९ दीर्घादटि समानपादे।
१० नॄन्पे।
११ स्वतवान्पायौ।
१२ कानाम्रेडिते।

१३ ढो ढे लोपः।
१४ रो रि।
१५ खरवसानयोर्विसर्जनीयः।
१६ रोः सुपि।
१७ भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि।
१८ व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य।
१९ लोपः शाकल्यस्य।
२० ओतो गार्ग्यस्य।
२१ उञि च पदे।
२२ हलि सर्वेषाम्।
२३ मोऽनुस्वारः।
२४ नश्चापदान्तस्य झलि।
२५ मो राजि समः क्वौ।
२६ हे मपरे वा।
२७ नपरे नः।
२८ ङ्णोः कुक्टुक्शरि।
२९ डः सि धुट्।
३० नश्च।
३१ शि तुक्।
३२ ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम्।
३३ मय उञो वो वा।
३४ विसर्जनीयस्य सः।
३५ शर्परे विसर्जनीयः।
३६ वा शरि।
३७ कुप्वोः ≍क≍पौ च।
३८ सोऽपदादौ।
३९ इणः षः।
४० नमस्पुरसोर्गत्योः।
४१ इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य।
४२ तिरसोऽन्यतरस्याम्।
४३ द्विस्त्रिश्चतुरिति कृत्वोऽर्थे।
४४ इसुसोः सामर्थ्ये।
४५ नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्थस्य।
४६ अतः कृकमिकंसकुम्भपात्र-कुशाकर्णीष्वनव्ययस्य।
४७ अधःशिरसी पदे।
४८ कस्कादिषु च।
४९ छन्दसि वाप्राम्रेडितयोः।
५० कःकरत्करतिकृधिकृतेष्व-नदितेः।
५१ पञ्चम्याः परावध्यर्थे।
५२ पातौ च बहुलम्।
५३ षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्ठपारपद-पयस्पोषेषु।
५४ इडाया वा।
५५ अपदान्तस्य मूर्धन्यः।
५६ सहेः साडः सः।
५७ इण्कोः।
५८ नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि।
५९ आदेशप्रत्यययोः।
६० शासिवसिघसीनां च।
६१ स्तौतिण्योरेव षण्यभ्यासात्।
६२ सः स्विदिस्वदिसहीनां च।

६३ प्राक्सितादड्व्यवायेऽपि।
६४ स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य।
६५ उपसर्गात्सुनोतिसुवतिस्यति-
स्तौतिस्तोभतिस्थासेनयसेध-
सिचसञ्जस्वञ्जाम्।
६६ सदिरप्रतेः।
६७ स्तन्भेः।
६८ अवाच्चालम्बनाविदूर्ययोः।
६९ वेश्च स्वनो भोजने।
७० परिनिविभ्यः सेवसितसय-
सिवुसहसुट्स्तुस्वञ्जाम्।
७१ सिवादीनां वाड्व्यवायेऽपि।
७२ अनुविपर्यभिनिभ्यः
स्यन्दतेरप्राणिषु।
७३ वेः स्कन्देरनिष्ठायाम्।
७४ परेश्च।
७५ परिस्कन्दः प्राच्यभरतेषु।
७६ स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्निविभ्यः।
७७ वेः स्कभ्नातेर्नित्यम्।
७८ इणः षीध्वंलुङ्लिटां
धोऽङ्गात्।
७९ विभाषेटः।
८० समासेऽङ्गुलेः सङ्गः।
८१ भीरोः स्थानम्।
८२ अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः।
८३ ज्योतिरायुषः स्तोमः।
८४ मातृपितृभ्यां स्वसा।
८५ मातुःपितुर्भ्यामन्यतरस्याम्।
८६ अभिनिसः स्तनः
शब्दसञ्ज्ञायाम्।
८७ उपसर्गप्रादुर्भ्यामस्तिर्यच्परः।
८८ सुविनिर्दुर्भ्यः
सुपिसूतिसमाः।
८९ निनदीभ्यां स्नातेः कौशले।
९० सूत्रं प्रतिष्णातम्।
९१ कपिष्ठलो गोत्रे।
९२ प्रष्ठोऽग्रगामिनि।
९३ वृक्षासनयोर्विष्टरः।
९४ छन्दोनाम्नि च।
९५ गवियुधिभ्यां स्थिरः।
९६ विकुशमिपरिभ्यः स्थलम्।
९७ अम्बाम्बगोभूमिसव्यापद्वित्रि-
कुशेकुशङ्क्वङ्गुमञ्जिपुञ्जि-
परमेबर्हिर्दिव्यग्निभ्यः स्थः।
९८ सुषामादिषु च।
९९ एति सञ्ज्ञायामगात्।
१०० नक्षत्राद् वा।
१०१ ह्रस्वात्तादौ तद्धिते।
१०२ निसस्तपतावनासेवने।
१०३ युष्मत्तत्ततक्षुःष्वन्तःपादम्।
१०४ यजुष्येकेषाम्।
१०५ स्तुतस्तोमयोश्छन्दसि।
१०६ पूर्वपदात्।
१०७ सुञः।
१०८ सनोतेरनः।
१०९ सहेः पृतनर्ताभ्यां च।

११० न रपरसृपिसृजिस्पृशिस्पृहि-सवनादीनाम्।
१११ सात्पदाद्योः।
११२ सिचो यङि।
११३ सेधतेर्गतौ।
११४ प्रतिस्तब्धनिस्तब्धौ च।
११५ सोढः।
११६ स्तम्भुसिवुसहां चङि।
११७ सुनोतेः स्यसनोः।
११८ सदेः परस्य लिटि।
११९ निव्यभिभ्योऽड्व्यवाये वा छन्दसि।

--०--

चतुर्थः पादः

१ रषाभ्यां नो णः समानपदे।
२ अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि।
३ पूर्वपदात्सञ्ज्ञायामगः।
४ वनं पुरगामिश्रकासिध्रका-सारिकाकोटराग्रेभ्यः।
५ प्रनिरन्तःशरेक्षुप्लक्षाम्रकार्ष्य-खदिरपीयूक्षाभ्योऽसञ्ज्ञायामपि।
६ विभाषौषधिवनस्पतिभ्यः।
७ अह्नोऽदन्तात्।
८ वाहनमाहितात्।
९ पानं देशे।
१० वा भावकरणयोः।
११ प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु च।
१२ एकाजुत्तरपदे णः।
१३ कुमति च।
१४ उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य।
१५ हिनु मीना।
१६ आनि लोट्।
१७ नेर्गदनदपतपदघुमास्यति-हन्तियातिवातिद्रातिप्साति-वपतिवहतिशाम्यति-चिनोतिदेग्धिषु च।
१८ शेषे विभाषाकखादावषान्त उपदेशे।
१९ अनितेरन्तः।
२० उभौ साभ्यासस्य।
२१ हन्तेरत्पूर्वस्य।
२२ वमोर्वा।
२३ अन्तरदेशे।
२४ अयनं च।
२५ छन्दस्यृदवग्रहात्।
२६ नश्च धातुस्थोरुषुभ्यः।
२७ उपसर्गादनोत्परः।
२८ कृत्यचः।
२९ णेर्विभाषा।
३० हलश्चेजुपधात्।

३१ इजादेः सनुमः।
३२ वा निंसनिक्षनिन्दाम्।
३३ न भाभूपूकमिगमिप्यायी-वेपाम्।
३४ षात्पदान्तात्।
३५ नशेः षान्तस्य।
३६ पदान्तस्य।
३७ पदव्यवायेऽपि।
३८ क्षुभ्नादिषु च।
३९ स्तोः श्चुना श्चुः।
४० ष्टुना ष्टुः।
४१ न पदान्ताट् टोरनाम्।
४२ तोः षि।
४३ शात्।
४४ यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा।
४५ अचो रहाभ्यां द्वे।
४६ अनचि च।
४७ नादिन्याक्रोशे पुत्रस्य।
४८ शरोऽचि।
४९ त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य।
५० सर्वत्र शाकल्यस्य।
५१ दीर्घादाचार्याणाम्।
५२ झलां जश्झशि।
५३ अभ्यासे चर्च।
५४ खरि च।
५५ वावसाने।
५६ अणोऽप्रगृह्यस्यानुनासिकः।
५७ अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।
५८ वा पदान्तस्य।
५९ तोर्लि।
६० उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य।
६१ झयो होऽन्यतरस्याम्।
६२ शश्छोऽटि।
६३ हलो यमां यमि लोपः।
६४ झरो झरि सवर्णे।
६५ उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितः।
६६ नोदात्तस्वरितोदयमगार्ग्य-काश्यपगालवानाम्।
६७ अ अ।

इति श्रीपाणिनिमुनिप्रणीतोऽष्टाध्यायीसूत्रपाठः (यतिबोधसहितो लघुकायश्च) समाप्तः॥

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥